CMYK

दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

वर्ष : 09 अंक : 242 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, बुधवार 16 अप्रैल, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 1.5 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

jaipurtimes.org twitter.com/JaipurTimes2 facebook.com/dainikjaipurtimes youtube.com/c/JaipurTimes instagram.com/jaipurtimesjt

पांच साल नही बदल सकेंगे विद्यालय ड्रेस, नई गाइडलाइन जारी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। नया सेशन शुरू हो चुका है। पेरेंट्स अपने बच्चों के लिए स्कूल ड्रेस से लेकर कॉपी-किताबें खरीद चुके हैं। इस बीच शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने प्राइवेट स्कूलों के लिए नई गाइड लाइन जारी की है। इसके तहत अब प्राइवेट स्कूल 5 साल तक अपने स्कूल की यूनिफॉर्म नहीं बदल सकेंगे। स्कूल मैनेजमेंट पेरेंट्स और स्टूडेंट्स पर किसी विशेष स्थान से ही यूनिफॉर्म और किताबें खरीदने का दबाव भी नहीं बना सकेगा। अगर वह शिक्षा विभाग की गाइडलाइन के विपरीत ऐसा करेंगे, तो उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। राजस्थान के प्राइवेट स्कूलों में यूनिफॉर्म और किताबों को लेकर पेरेंट्स ने पिछले दिनों शिक्षा मंत्री मदन दिलावर से शिकायत की थी। इसमें पेरेंट्स ने बताया था कि स्कूल मैनेजमेंट दबाव बनाकर महंगी स्कूल यूनिफॉर्म और किताबें बेच रहा है। उनकी बाजार कीमत काफी कम है। ऐसे में पेरेंट्स की शिकायत के बाद शिक्षा मंत्री ने आदेश जारी कर प्रदेश के सभी प्राइवेट स्कूल संचालकों को शिक्षा विभाग की गाइडलाइन का 100% पालन करने का आदेश किया है।

कांग्रेस के अधिकांश नेता भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे: भारद्वाज

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। भाजपा महामंत्री जितेंद्र गोठवाल ने कहा कि जब भी जांच एजेंसियों को लगता है कि कहीं काला धन है तो वे जांच करती है। लेकिन साच को आच नहीं, आप गलत नहीं है तो जांच में सहयोग करें, नहीं तो दूध का दूध पानी का पानी हो जाएगा। पिछले सरकार में गहलोत साहब ने जिस तरह के काम अपने मंत्रियों से करवाए, वो सबके सामने है। कांग्रेस के नेताओं को आरोप लगाने की बात शोभा नहीं देती, कांग्रेस की पूर्ववर्ती सरकार ने तो भाजपा नेताओं पर झूठे मुकदमे तक लगाए थे। जांच एजेंसियों की कार्रवाई शुरू करते ही ये सब एक साथ चिल्ला रहे है, जैसे चोर की ढाढी में तिनका हो। फिर भी मैं यह कहूंगा साच को आच नहीं। लेकिन अब मोदी सरकार है काला धन कहीं भी नहीं टिकने देंगे। भाजपा प्रदेश प्रवक्ता लक्ष्मीकांत भारद्वाज ने कहा कि कांग्रेस पार्टी भ्रष्टाचार से आकंठ तक डूबी हुई पार्टी है। इस पार्टी के अधिकांश नेता रिश्वत, घोटाले या भ्रष्टाचार में संलिप्त है। ऐसे में भ्रष्टाचार करने के बाद जब जांच एजेंसियां कार्रवाई करती है तो इनके नेता सरकार पर मिथ्या आरोप लगाकर जनता से सहानुभूति लेना चाहते है। यह हास्यास्पद है कि जिस पार्टी ने अनेकों बार न्यायपालिका, सेना, चुनाव आयोग, सीएजी, संसद जैसी संस्थाओं को कमजोर करने का प्रयास किया हो, वह आज प्रजातंत्र खतरे में है, की दुहाई दे रही है। जनता की अदालत में फेल होने के बाद कांग्रेस पार्टी की ओर से इसके खिलाफ किया जा रहा प्रचार सिर्फ एक परिवार की राजनीतिक साख को बचाने का एक झूठा प्रचार है। भाजपा प्रदेश महामंत्री व सांसद दामोदर अग्रवाल ने कहा कि सवाल ये है कि अगर साफ हैं तो रेड से डर क्यों रहे हैं, अगर ईडी ने वहां पर रेड मारी है तो उनके पास कोई ग्राउंड होगा, कानून अपना काम करता है किसी को ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं है, ऐसी बात वही लोग कहते हैं जिनकी दाल में काला होता है। ईडी कोई भी कार्रवाई बिना किसी बेस के नहीं करती। उनके भाई हां करते हैं वो ना करते हैं, इसीलिए जो काम हो रहा है कानून के अनुरूप हो रहा है, रूल ऑफ लॉ होता है, रूल ऑफ बीजेपी या कांग्रेस नहीं होता है। इसलिए जांच हो जाएगी दूध का दूध, पानी का पानी हो जाएगा। इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं करनी चाहिए।

दिल्ली से राजस्थान तक कांग्रेस नेताओं पर ईडी ने कसा शिकंजा

सोनिया राहुल के खिलाफ़ चार्जशीट पेश तो खाचरियावास के आवास पर छापे

48 हज़ार करोड़ घोटाले मामले में बुरे फंसे खाचरियावास, ईडी की रेड

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। गहलोत सरकार में मंत्री रहे प्रताप सिंह खाचरियावास पीएसीएल कंपनी के मामले में बुरे फंस गए हैं। 48 हज़ार करोड़ रुपए के घोटाले से जुड़े मामले में ईडी ने मंगलवार को खाचरियासवास के आवास सहित कई ठिकानों पर छापे मारे। सुबह करीब 5 बजे टीमें खाचरियावास के आवास पर पहुंच गई थीं। यह मामला रियल एस्टेट में निवेश का काम करने वाली पर्ल एग्रोटेक कॉर्पोरेशन लिमिटेड में हुए 48 हजार करोड़ के घोटाले से जुड़ा है। ईडी की जानकारी के अनुसार, प्रताप सिंह और उनके परिवार के लोगों के नाम पर पीएसीएल में घोटाले का पैसा ट्रांसफर हुआ था। अधिकांश पैसा प्रॉपर्टी और अन्य सेक्टर में लगा दिया गया। पूर्व मंत्री के घर छापेमारी की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में जयपुर के सिविल लाइंस स्थित आवास पर समर्थक पहुंच गए। समर्थकों ने इस कार्रवाई का विरोध किया और भाजपा सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। पुलिस ने पूर्व मंत्री के आवास के बाहर खड़ी समर्थक की गाड़ी को लेकर आपत्ति जताई। उसी गाड़ी पर खड़े होकर समर्थक नारेबाजी कर रहे थे। इस दौरान समर्थकों की पुलिसकर्मियों से बहस भी हो गई। हालात को देखते हुए ईडी की टीम ने जयपुर पुलिस कमिश्नर बीजू जॉज जोसफ और डीसीपी साउथ दिगंत आनंद से बात की। इसके बाद मौके पर तीन थानों की फोर्स भेजी गई। इस दौरान खाचरियावास भी आवास से बाहर आए और अपने समर्थकों को समझाया। तब जाकर मामला शांत हुआ। लाखों लोगों के साथ पीएसीएल में धोखाधड़ी हुई थी। इसके बाद यह केस सुप्रीम कोर्ट में चला गया था। सुप्रीम कोर्ट ने 2 फरवरी 2016 को सेवानिवृत्त सीजेआई आरएम लोढ़ा की अध्यक्षता में कमेटी का गठन किया था। कोर्ट ने कमेटी से कहा था कि पीएसीएल की संपत्तियों को नीलाम करके 6 महीने में लोगों को ब्याज सहित भुगतान करें। सेबी के आकलन के अनुसार पीएसीएल की 1.86 लाख करोड़ रुपए की संपत्ति है, जो निवेशकों की जमा राशि की तुलना में 4 गुना है। पीएसीएल कंपनी की योजनाओं को अवैध मानते हुए सेबी ह्व ने 22 अगस्त 2014 को कंपनी के कारोबार बंद कर दिए थे। इसके चलते निवेशकों की पूंजी कंपनी के पास जमा रह गई। इसके बाद कंपनी व सेबी ह्व के बीच सुप्रीम कोर्ट में केस चला और सेबी जीत गई।

प्रवर्तन निदेशालय ने की कार्रवाई

मनी लॉन्ड्रिंग में राहुल-सोनिया के खिलाफ चार्जशीट दाखिल

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कथित नेशनल हेराल्ड मनी लॉन्ड्रिंग मामले में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी, सोनिया गांधी और कांग्रेस ओवरसीज चीफ सैम पित्रोदा के खिलाफ दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट में अभियोजन शिकायत दर्ज की है। अदालत ने संज्ञान तर्कों की सुनवाई 25 अप्रैल के लिए निर्धारित की है। बता दें कि नेशनल हेराल्ड से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में ईडी ने राउज एवेन्यू की विशेष अदालत में आरोप पत्र दाखिल किया है। आरोप पत्र में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी व पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी के साथ सैम पित्रोदा का भी नाम है। सुब्रमण्यम स्वामी के मामले में सोनिया व राहुल को पटियाला हाउस कोर्ट से पूर्व में जमानत मिल चुकी है। हालांकि, मनी लॉन्ड्रिंग मामले में आरोप पत्र दाखिल होने के बाद अब राहुल व सोनिया गांधी को पीएमएलए के तहत भी जमानत लेनी होगी। हालांकि, पीएमएलए के तहत जमानत मिलना अन्य आपराधिक मामलों की तरह आसान नहीं होता। उधर, विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने कहा कि अभियोजन पक्ष की वर्तमान शिकायत पर संज्ञान के पहलू पर विचार किया जाएगा। यह पहली बार है जब सोनिया गांधी और राहुल गांधी के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया गया है। वहीं, ईडी ने शनिवार को 661 करोड़ रुपये की अचल संपत्तियों को अपने कब्जे में लेने के लिए नोटिस जारी किया था। कांग्रेस की ओर से नियंत्रित एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपों की जांच के लिए इन्हें नवंबर 2023 में जब्त किया गया था।

मौसम विभाग योजना बनाकर कर रहा कवायद

राजस्थान में बनेगा बड़ा मौसम रिसर्च सेंटर !

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मरूधरा के रेगिस्तानी इलाकों में क्लाइमेट चेंज (जलवायु परिवर्तन) पर गहन अध्ययन करने और उस बदलाव से होने वाले नुकसान और फायदों की रिसर्च करने के उद्देश्य से मौसम विज्ञान एक बड़ा रिसर्च सेंटर शुरू करने की योजना बना रहा है। इसके लिए मौसम विज्ञान केन्द्र जयपुर ने डेजर्ट मेटियोरोलोजी व अनुसंधान विषय पर एक वर्कशॉप प्रस्तावित की है। इसमें अलग-अलग विभागों और सेक्टर से जुड़े एक्सपर्ट्स जलवायु परिवर्तन से जुड़े विशेषों पर अपने-अपने अनुभव और रिसर्च पर विचार-विमर्श करेंगे। साथ ही इस रिसर्च सेंटर में किन अनुसंधानों की जरूरत है। उस पर अपने सुझाव देंगे। जयपुर मौसम विज्ञान केन्द्र के निदेशक राधेश्याम शर्मा ने बताया कि ये समिट पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस) और बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ साइंटिफिक रिसर्च, जयपुर की ओर से करवाई जा रही है। जो बिरला ऑडिटोरियम जयपुर में 16 अप्रैल को होगी। राधेश्याम शर्मा ने बताया कि हमारी प्लानिंग एक रिसर्च सेंटर स्थापित करने की है। जो केवल रेगिस्तान में हो रहे क्लाइमेट चेंज पर रिसर्च करने की है। इस रिसर्च सेंटर दुनिया में दुनिया की आधुनिक लैब स्थापित करने और इक्यूपमेंट (उपकरण) लगाने की है। ताकि यहां रेगिस्तानी इलाकों में होने वाली अतिवृष्टि (बारिश), सूखा, हीटवेव, तेज गर्मी, सर्दी और डस्ट स्ट्रॉम (धूल भरे अंधड़) के कारण और उनसे होने वाले फायदे नुकसान का अध्ययन किया जा सके। इसके लिए हमने आईआईटी जोधपुर, आईआईजी मुंबई, काजरी व आफरी जोधपुर, सेंट्रल यूनिवर्सिटी अजमेर, बीआईटी मेसरा, रांची, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय बीकानेर, कृषि विभाग, आपदा प्रबंधन व राहत विभाग, पर्यावरण व जलवायु परिवर्तन विभाग समेत कई यूनिवर्सिटी, एग्रीकल्चर से संबंधित यूनिवर्सिटी और कॉलेजों के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया है।

लैब टेक्नीशियन फर्स्ट लाइन ऑफ ट्रीटमेंट: दिया कुमारी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। अंतरराष्ट्रीय लैब टेक्नीशियन दिवस के अवसर पर मंगलवार को उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी जयपुर में अखिल राजस्थान लैब टेक्नीशियन कर्मचारी संघ की ओर से आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित हुईं। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने लैब टेक्नीशियंस की भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि लैब टेक्नीशियन फर्स्ट लाइन ऑफ ट्रीटमेंट हैं। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि बात चाहे कोविड, स्वाइन फ्लू , या सामान्य समय की हो। किसी भी बीमारी के इलाज के लिए बहुत जरूरी है कि बीमारी का डाइग्नोसिस किया जा सके। यह पता लगाया जा सके कि बीमारी है क्या? डाइग्नोसिस लैब टेक्नीशियंस की ओर से किया जाता है। अगर यही नहीं किया जाए तो इलाज ठीक से करना संभव नहीं है। दिया कुमारी ने कहा कि सरकार की ओर से प्रयास किया जाएगा कि आप लोगों को समस्या आ रही है तो उसका समाधान किया जा सके। लैब टेक्नीशियन हमेशा इतने सक्रिय रहते हैं, वह पेशेंट के बारे में पहले सोचते हैं। यह फर्स्ट लाइन ऑफ ट्रीटमेंट होते हैं, आप लोग जो जनता की सेवा करते हैं। जन सेवा करने में आप सबसे आगे हैं। दिया कुमारी ने कहा कि लैब टेक्नीशियन के समर्पण, परिश्रम और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बिना एक मजबूत सेहत तंत्र की कल्पना करना संभव ही नहीं है। डबल इंजन की सरकार बहुत तेजी से काम कर रही है। हमारी सरकार महिला से लेकर रोजगार सभी मुद्दों पर तेजी से काम कर रही है।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह कल आएंगे राजस्थान

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह 17 अप्रैल को दोपहर 3 बजे सिरोही जिले के दौरे पर आएंगे। इस दौरान वे आबूरोड स्थित ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन जाएंगे। उनके आगमन को लेकर शांतिवन में जोर-शोर से तैयारियां जारी हैं। जिला प्रशासन की ओर से एडीएम और एएसपी ने टीम के साथ तैयारियों का जायजा लेकर अधिकारियों की बैठक ली है। सभी को अलर्ट रहने के निर्देश दिए गए हैं। अधिकारियों से कहा कि किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। एडीएम डॉ दिनेशराय सापेला ने बताया कि शाह का हेलीकॉप्टर मानपुर हवाई पट्टी पर लैंड होगा, जहां से वे सड़क मार्ग से शांतिवन पहुंचेंगे और डायमंड हॉल में आयोजित ब्रह्माकुमारी संस्थान क़े कार्यक्रम में भाग लेंगे। संस्थान क़े अतिरिक्त महा सचिव बीके मृत्युंजय ने बताया कि डायमंड हाल में आयोजित कार्यक्रम में गृहमंत्री अमित शाह सुरक्षा सेवा प्रभाग के चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का भी शुभारंभ कर सेना के अधिकारियों को संबोधित करेंगे।

ब्लॉक अध्यक्षों से सीधी बात करेगे खड़गे

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मलिकार्जुन खड़गे राजस्थान में आकर टटोलेंगे कार्यकर्ताओं की नब्ज

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। कांग्रेस में नेताओं और कार्यकर्ताओं को फील्ड में उतरकर ज्यादा से ज्यादा लोगों को पार्टी से जोड़ने और लोगों के वोटों में बदलने का टास्क दिया गया है। इसके लिए पहले संगठन को ग्रास रूट स्तर पर मजबूत बनाने का काम दिया गया है। स्थानीय नेताओं को इस काम में लगाया है। वहीं, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे जल्द ही राजस्थान आकर कांग्रेस के मंडल अध्यक्षों से सीधी बात करेंगे। खड़गे के कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया जा रहा है। कांग्रेस में 2200 मंडल अध्यक्ष हैं। कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने हाल ही में दिल्ली में खड़गे को औपचारिक रूप से न्योता दिया है। खड़गे का जल्द ही राजस्थान दौरा बनने वाला है। मंडल अध्यक्षों की बैठक की जगह अभी तय नहीं है, लेकिन इसके लिए जयपुर में ही जगह देखी जा रही है। जगह इसी सप्ताह फाइनल करने की तैयारी है। कांग्रेस के रणनीतिकारों ने फीडबैक दिया है कि बीजेपी से मुकाबले के लिए बूथ लेवल पर मजबूती से काम करना होगा। बीजेपी जिस तरह संगठनात्मक तैयारी और पूरे संगठन को लेकर काम करती है। उतना कांग्रेस नहीं कर पा रही। इस वजह से वोटर को बूथ तक लाने में कांग्रेस पिछड़ जाती है। कांग्रेस की संगठन से जुड़ी जमीनी खामियों को दूर करने के लिए मंडल अध्यक्षों को जिम्मा दिया गया है। कांग्रेस की हाल ही हुई बैठकों में संगठन को जमीनी स्तर पर एक्टिव करने के लिए नए सिरे से रणनीति बनाई गई है। स्थानीय स्तर के मुद्दों को उठाने के लिए लोकल नेताओं को कहा गया है। बिजली, पानी से लेकर जनता से जुड़ी समस्याओं पर नेताओं को जनता के साथ खड़े रहने के लिए कहा है।

मां बाप की निर्दयता: तीन बच्चों को जहर देकर गला रेता

जयपुर टाइम्स

फलोदी (निसं.) राजस्थान के फलोदी में एक रोंगटे खड़े कर देने वाला दर्दनाक हादसा सामने आया। यहां एक दम्पति ने पहले अपने तीन मासूम बच्चों को जहर दिया। उसके बाद निर्ममता से ब्लेड से उनका गला रेंत दिया। बाद में दोनों पति-पत्नी ने भी जहर पीकर आत्महत्या का प्रयास किया। इधर, घटना में तीनों मासूम बच्चों की मौत हो चुकी है, जबकि आरोपी पति पत्नी का उपचार चल रहा हैं। इधर, घटना से क्षेत्र में जमकर सनसनी फैल गई

मां-बाप ने ही अपने बच्चों को पिलाया जहर

रोंगटे खड़े कर देने वाली यह घटना फलोदी जिले के कालू पाबूजी में सामने आई, जहां बीती देर रात शिवलाल मेघवाल और उसकी पत्नी ने इस वारदात को अंजाम दिया। इस दौरान उन्होंने हरीश (9), किरण (5) और नत्थू (3) को पहले जहर पिलाया। इसके बाद ब्लेड से तीनों का गला काट दिया। इसके बाद आरोपी पति-पत्नी ने जहर पीकर हाथों की नस काट ली। इधर, घटना में तीनों मासूम बच्चों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना पर गांव में सनसनी फैल गई और लोगों में दहशत का माहौल हो गया।

चीख पुकार सुनी तो पड़ोसियों को लगा पता

घटना के समय बच्चों के चीखने चिल्लाने की आवाज से आसपास में सनसनी फैल गई। पडौसी जब मौके पर पहुंचे, तो शिवलाल, उसकी पत्नी और तीनों बच्चे खून से लथपथ मिले। इधर, सूचना पर पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची। वहीं दोनों पति-पत्नी को फलोदी के अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनकी हालत में अब सुधार है। इधर, घटना की सूचना पर फलोदी एसपी पूजा अवाना भी मौके पर पहुंच गई, जहां उन्होंने घटना की जानकारी ली। वहीं, दोनों पति-पत्नी ने इस वारदात को क्यों अंजाम दिया? इसके कारणों का अभी तक खुलासा नहीं हो पाया हैं। बताया जा रहा है कि आरोपी शिवलाल उत्तराखंड में रोड कंस्ट्रक्शन कंपनी में ड्राइवर है।

मुख्य सचिव की जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक

प्रशासन आमजन की समस्याओं का तत्काल निस्तारण कर राहत देने के लिए तत्पर रहे-मुख्य सचिव

गर्मी के मौसम में पेयजल और बिजली की सप्लाई सुचारू रखने के निर्देश

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)। मुख्य सचिव सुधांश पंत ने कहा कि अधिकारी पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से कार्य करते हुए जनता को सुशासन का अहसास कराएं। आमजन की समस्याओं का तत्काल निस्तारण करें ताकि उन्हें महसूस हो कि सरकार और प्रशासन हर परिस्थिति में उनके साथ है और राहत देने के लिए तत्पर है। मुख्य सचिव मंगलवार को बीड़ा सभागार भिवाडी में जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ सुशासन के लिए किए जा रहे प्रयासों एवं विभिन्न योजनाओं की प्रगति की समीक्षा कर रहे थे। मुख्य सचिव सुधांश पंत ने पेयजल व्यवस्था की तैयारियों की समीक्षा करते हुए कहा कि पानी के लिहाज से अगले ढाई महीने काफी क्रिटिकल है। इसलिए गर्मी के मौसम में पेयजल और बिजली की सप्लाई सुचारू रखें ताकि आमजन को कोई समस्या नहीं हो। उन्होंने समर कंटिजेंसी प्लान को तुरंत स्वीकृत कराकर काम शुरु करने के निर्देश दिए। पानी की चोरी रोकने के लिए चल रहे अभियान में प्रशासन एवं पुलिस का सहयोग लेकर ठोस कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्थानीय पेयजल प्रोजेक्ट का कार्य मानकों के अनुरूप गुणवत्तायुक्त करते हुए समय पर पूर्ण करने के निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने ई-फाइल सिस्टम की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को फाइल निस्तारण के औसत समय में सुधार करने के निर्देश दिए। 'राइजिंग राजस्थान' के दौरान हुए एमओयू की प्रगति की समीक्षा करते हुए मुख्य सचिव ने सभी संबंधित विभागों को निवेशकों को हरसंभव सहयोग करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि निवेशकों को किसी भी स्तर पर कोई बाधा का सामना नहीं करना पड़े। मुख्य सचिव ने मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना की क्रियान्विति की समीक्षा करते हुए आयुष्मान कार्डों का शत प्रतिशत वितरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन के कार्य शीघ्र पूरे करने के निर्देश दिए। उन्होंने जिले की चिकित्सा सेवाओं की स्थिति की समीक्षा की और हीट वेव के दौरान विशेष सतर्कता बरतते हुए कारगर चिकित्सा सुविधा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने सड़क दुर्घटनाओं को कम करने हेतु ब्लैक स्पॉट चिन्हित कर साइनेज के माध्यम से एंव विभिन्न अवेयरनेस कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को जागरूक करने के निर्देश दिए। उन्होंने पुलिस, पीडब्ल्यूडी अधिकारी एवं चिकित्सा अधिकारी को निर्देशित किया कि दुर्घटना की सूचना आईआरएडी (इंटीग्रेटेड रोड एक्सीडेंट डाटाबेस) पर दर्ज करवाना सुनिश्चित कराये। मुख्य सचिव ने मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान 2.0 के कार्य बरसात के मौसम से पहले पूर्ण कराने तथा 'हरियालो राजस्थान' और 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान में पौधे लगाने की तैयारी शुरु करने के निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने जिले में अपराधों की स्थिति और उनके रोकथाम के लिए की जा रही कार्रवाई की समीक्षा करते हुए कहा कि महिलाओं के खिलाफ अपराध, अवैध ड्रग्स, अवैध शराब एवं अवैध खनन जैसे मामलों को लेकर राज्य सरकार विशेष संवेदनशील एवं गंभीर है। गत वर्ष से महिला अपराधों में कमी को देखते हुए पुलिस विभाग के अधिकारियों की सराहना की। पुलिस अधीक्षक अलवर ने दुर्घटनाओं पर तुरंत प्रभाव से कार्रवाई हेतु दिल्ली मुंबई एक्सप्रेसवे पर पुलिस चौकी स्थापित करने हेतु अवगत कराया जिस पर उन्होंने प्रस्ताव बनाकर भेजने हेतु निर्देशित किया। जिला कलक्टर किशोर कुमार ने कहा कि ई-फाइल निस्तारण एवं एवरेज कन्वर्जन डिस्पोजल के औसत समय में सुधार, बिजली-पानी की नियमित आपूर्ति, स्वास्थ्य सेवाओं की समुचित उपलब्धता सहित मुख्य सचिव की ओर से दिए गए सभी निर्देशों की पूर्ण पालना कर आमजन को राहत प्रदान की जाएगी। जिला कलक्टर आर्तिका शुक्ला ने आश्वस्त किया कि मुख्य सचिव द्वारा दिए गए निर्देशों का पूर्णतः पालन सुनिश्चित करते हुए आमजन को बिजली-पानी की सुचारु आपूर्ति और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। बैठक में संभागीय आयुक्त पूनम, प्रबंध निदेशक रीको शिवांगी स्वर्णकार, पुलिस अधीक्षक ज्येष्ठा मैत्रेयी, पुलिस अधीक्षक अलवर संजीव नेन, पुलिस अधीक्षक मनीष कुमार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी बीडा अतुल प्रकाश, उप वन संरक्षक राजेंद्र हुड्डा अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवपाल जाट, जलदाय विभाग अतिरिक्त मुख्य अभियंता भवानी सिंह शेखावत, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ अरविंद गेट सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

गिव अप अभियान के तहत 30 अप्रैल तक अपात्र व्यक्ति हटवा सकते हैं खाद्य सुरक्षा योजना से नाम

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। राज्य सरकार द्वारा अपात्र खाद्य सुरक्षा लाभार्थियों को स्वेच्छा से खाद्य सुरक्षा सूची से नाम हटवाने के लिए जिले में 30 अप्रैल तक गिव अप अभियान चलाया जा रहा है। जिला रसद अधिकारी विनोद जुनेजा ने बताया कि विभाग द्वारा गिव अप अभियान के तहत नाम हटाने की प्रक्रिया का सरलीकरण कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि अभियान में खाद्य सुरक्षा योजना में चयनित ऐसे लाभार्थी जो आर्थिक रूप से सक्षम हैं जैसे आयकरदाता, 1 लाख रूपये से अधिक वार्षिक आय, चौपहिया वाहन धारक स्वेच्छा से अपने नजदीकी उचित मूल्य दुकानदार/जिला रसद अधिकारी कार्यालय अलवर में उपलब्ध निर्धारित प्रपत्र भरकर अपना नाम हटवा सकते हैं। प्रपत्र जिले की सभी उचित मूल्य दुकानों पर उपलब्ध है। अब कोई भी अपात्र व्यक्ति खाद्य विभाग राजस्थान के पोर्टल https://food. rajasthan.gov.in पर उपलब्ध लिंक 'गिव अप अभियान के तहत खाद्य सुरक्षा योजना (NFSA) से स्वतः हटने के लिए आवेदन करें' पर आवेदन कर अपना नाम स्वयं खाद्य सुरक्षा सूची से हटा सकते हैं।

मिनी सचिवालय में विस्फोटक सामग्री होने के संबंध में प्राप्त ई-मेल पर जिला प्रशासन ने तत्परता बरतते हुए बम निरोधक दस्ते व पुलिस की टीमों ने चलाया सघन सर्च अभियान

सघन सर्च अभियान में मिनी सचिवालय परिसर में नहीं मिली किसी भी प्रकार की विस्फोटक सामग्री

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने बताया कि अलसुबह जिला कलक्टर अलवर की अधिकारिक ई-मेल आईडी पर मिनी सचिवालय में विस्फोटक सामग्री होने के संबंध में ई-मेल प्राप्त हुआ। ई-मेल के संज्ञान में आने पर जिला एवं पुलिस प्रशासन ने त्वरित गति से सतर्कता बरतते हुए मिनी सचिवालय को सुरक्षा घेरे में लेकर जांच कार्य प्रारंभ किया गया। इस दौरान ऐतिहातन रूप से अनाधिकृत प्रवेश को रोका गया। तत्काल रूप से जयपुर के बम निरोधक दस्ते को सूचित किया गया, जिसने मिनी सचिवालय में पहुंचकर सघन सर्च अभियान चलाया। गहन सर्च अभियान के दौरान मिनी सचिवालय परिसर में किसी भी प्रकार की विस्फोटक सामग्री नहीं मिली। प्राप्त मेल पर कानूनी प्रावधानों के अनुसार पुलिस के द्वारा अग्रिम कार्रवाई की जा रही है। गहन सर्च अभियान के बाद मिनी सचिवालय स्थित राजकीय कार्यालयों के सुचारू संचालन के लिए अधिकारियों एवं कार्मिकों को प्रवेश दिया गया।

अखिल भारतीय जायसवाल महासभा के पदाधिकारीयों का स्नेह मिलन समारोह संपन्न

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। अखिल भारतीय जायसवाल (सर्ववर्गीय) महासभा ,(जयपुर निवासियों) के पदाधिकारीयो का "स्नेह मिलन समारोह" (सम्मान एवं परिचय) 14 अप्रैल, सोमवार को आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम महासभा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष डॉ अरविंद जायसवाल की अध्यक्षता में उनके कार्यालय करतारपुरा, जयपुर में संपन्न हुआ। सभी पदाधिकारी ने राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बनने पर डॉ अरविंद जायसवाल का माला एवं दुपट्टा पहनाकर बधाई प्रेषित की, इसके पश्चात सभी पदाधिकारीयों ने अपना परिचय दिया तथ पश्चात डॉ जायसवाल ने उनका दुपट्टा एवं माला पहनाकर उनका स्वागत एवं सत्कार किया गया, सभी ने एक मत से समाज को आगे बढ़ाने , समाज को जोड़ने एवं एक छत के नीचे लाने का संकल्प लिया। आगामी दिनों में हो रही जनगणना में समाज के सभी सदस्यों को अपनी जाति का उल्लेख कर एकता दिखाने का आह्वान किया गया, साथ ही आने वाले समय में युवक युवतियां परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाह जैसे सम्मेलन आयोजित करने का आह्वान किया । राष्ट्रीय अध्यक्ष मदन जायसवाल द्वारा नियुक्ति पत्र जारी करने पर उनका तहे दिल से धन्यवाद दिया। इस अवसर पर संतोष जायसवाल (राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष), अशोक गुप्ता (वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं मीडिया प्रभारी), मनीषा सुवालका (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष), रतन सिंह साईवाल (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष), सीताराम जायसवाल (वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष), मदन जायसवाल (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष) , डॉ राकेश रंजन (राष्ट्रीय संगठन मंत्री), सुनील साईवाल (राष्ट्रीय संगठन मंत्री), ललित जायसवाल (राष्ट्रीय संगठन मंत्री), नवल किशोर सेठी (राष्ट्रीय संगठन मंत्री) आदि समाज के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय लैब टेक्नीशियन दिवस मनाया

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। राजस्थान में हर्षोल्लास के साथ अंतरराष्ट्रीय लैब टेक्नीशियन दिवस मनाया गया जिसके तहत सेंट्रल लैब राजीव गांधी सामान्य चिकित्सालय अलवर में भी लैब टेक्नीशियन दिवस मनाया गया, अखिल राजस्थान लैब टेक्नीशियन कर्मचारी संघ राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष श्रीराम मीणा ने दीप प्रज्वलन किया तथा माइक्रोस्कोप के आविष्कारक जकरियास जॉनसन को पुष्पांजलि अर्पित कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस मौके पर प्रमुख चिकित्सा अधिकारी के अधीन कार्यरत सभी लैब टेक्नीशियन एवं प्रयोगशाला सहायक एवं अन्य कार्मिक साथियों ने भाग लिया। प्रदेश अध्यक्ष मीणा ने बताया कि लैब तकनीशियन और प्रयोगशाला कार्मिक निष्ठावान तथा समर्पण भाव से विभिन्न प्रकार की संक्रामक बीमारियो के बीच रहकर आमजन की सेवा एवं जांच कार्य करते हैं कोविडड्ड 19 जैसी महामारी के दौरान भी कोरोना फ्रंटलाइन वर्कर के रूप में आम जन से रूबरू हो कर सैंपल संग्रहण कर जांच कार्य किया गया जिसमें हमारे कई साथियों की जान भी गई लेकिन सरकार द्वारा इनको उचित सम्मान नहीं मिला, क्योंकि मरीज की जांच ही उपचार है। इसलिए संगठन की लंबित मांगों स्टाफिंग पैटर्न, नवपद सृजित कर पदों में वृद्धि ,ग्रेड पे एवं पदनाम संशोधन का शीघ्र गजट नोटिफिकेशन जारी करने सहित अन्य मांगों के निराकरण के लिए सरकार का ध्यान आकर्षित किया तथा समय रहते हुए सरकार से मेडिकल की रीढ़ कहे जाने वाले लैब टेक्नीशियन संवर्ग की समस्याओं का निराकरण करने की मांग की है अन्यथा मजबूरन संगठन एवं संवर्ग को आंदोलन के लिए बाध्य धोना पड़ेगा। कार्यक्रम में ज्वाला सिंह, जितेंद्र सोमवंशी, हर्षवाला शर्मा, सुनील तिवारी, गजराज सिंह, समुद्र सिंह, कुशाल भारत सोनी कविंद्र जैन, ताराचंद्र, हरसहाय मीणा, सुनीता शर्मा आदि संगठन पदाधिकारीयों के साथ काफी संख्या में कर्मचारी साथी उपस्थित रहे।

राज्य सरकार के निर्देशानुसार बजट घोषणाओं का समयबद्ध क्रियान्वयन हो सुनिश्चित

प्रभारी सचिव शिवांगी स्वर्णकार ने ली विभागीय अधिकारियों की बैठक

जिला अस्पताल भिवाड़ी का किया निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)। प्रबंध निदेशक रीको तथा जिले कि प्रभारी सचिव शिवांगी स्वर्णकार ने मंगलवार को बीडा सभागार भिवाड़ी में आधारभूत सुविधाओं एंव जिले से संबंधित बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की। प्रभारी सचिव ने कहा कि राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप सभी घोषणाओं का क्रियान्वयन समयबद्ध रूप से किया जाना सुनिश्चित करें। बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन के लिए भूमि आवंटन संबंधी कार्यों के प्रस्ताव अविलंब तैयार कर लिए जाएं और इसके लिए जिला कलेक्टर एवं उच्च स्तर से समन्वय रखा जाए। प्रभारी सचिव ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति और पाइपलाइन संबंधी कार्य, नए जीएसएस बनाने, सड़क निर्माण, शहरी ट्रांसपोर्ट सेवाओं के बारे में विस्तार से चर्चा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिया। उन्होंने समर कंटिजेंसी प्लान के माध्यम से आमजन को सुचारू रूप से पेयजल उपलब्ध कराने के निर्देश दिए साथ ही टैंकरों द्वारा पेयजल सप्लाई की प्रभावी मॉनिटरिंग करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद को जल शक्ति अभियान का प्रभावी क्रियान्वयन तथा नरेगा कार्यों में अधिक से अधिक लोगों को रोजगार देने के निर्देश दिए। उन्होंने जिले की मौसमी बीमारियों की जानकारी लेकर अस्पतालों में दवाइयां की उपलब्धता की सुनिश्चित रखने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने कहा कि जिले से संबंधित बजट घोषणाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन के लिए रोड मैप तैयार किया गया है। प्रत्येक विभागीय अधिकारी को गंभीरतापूर्वक कार्य करने के लिए निर्देशित किया गया हैं। बैठक के पश्चात प्रभारी सचिव ने भिवाड़ी जिला अस्पताल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अस्पताल परिसर में साफ सफाई, सामान्य वार्ड, आपातकालीन विभाग, नसबंदी कैंप, एनसीडी क्लिनिक का जायजा लिया गया व राजस्थान सरकार की समस्त फ्लेगशिप योजनाओ के सफल संचालन तथा लू तापाघात को दृष्टिगत रखते हुए समस्त आवश्यक तैयारियां पूर्ण करने के निर्देश प्रदान किये। उन्होंने अस्पताल में उपस्थित मरीजों से वार्ता कर हॉस्पिटल की व्यवस्थाओं एवं डॉक्टर के बारे में फीडबैक लिया, इसके साथ ही भर्ती मरीजों से उनको दी जाने वाली सुविधाओं का अवलोकन किया। उन्होंने भर्ती मरीजों को प्रावधान के अनुरूप सभी सुविधा उपलब्ध करवाने को कहा। उन्होंने सरकार द्वारा प्रदत्त सभी सुविधाओं से मरीजों को लाभ पहुंचाने का निर्देश भी दिया।

बैठक में पुलिस अधीक्षक मनीष चौधरी, पुलिस अधीक्षक ज्येष्ठा मैत्रेयी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी बीड़ा अतुल प्रकाश, मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद सालुखे गौरव रविंद्र, अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवपाल जाट, अधिशासी अभियंता पीएचईडी धर्मेंद्र यादव, सीएमएचओ डॉ अरविंद गेट, अधीक्षण अभियंता पीडब्ल्यूडी भूरी सिंह, अधीक्षण अभियंता विद्युत विभाग, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक ज्ञानेंद्र शर्मा, जीएमडीआईसी सुरजीत सिंह खोरिया, क्षेत्रीय अधिकारी पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड सहित सभी विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, बुधवार
16 अप्रेल, 2025

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी के समक्ष परकोटे के हैरिटेज स्वरूप एवं इसके सौन्दर्यकरण के कार्यो का गया प्रस्तुतिकरण

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी की अध्यक्षता में मंगलवार को "जयपुर परकोटे के हैरिटेज सिटी स्वरूप को बनाए रखने और इसके संरक्षण को लेकर सचिवालय में बैठक आयोजित की गई। उपमुख्यमंत्री के समक्ष बैठक में परकोटे के हैरिटेज स्वरूप एवं इसके सौन्दर्यकरण के कार्यो का प्रस्तुतिकरण दिया गया। उपमुख्यमंत्री ने आयुक्त नगर निगम (हैरिटेज) को निर्देश दिए की परकोटा क्षेत्र का विकास एवं सौन्दर्यकरण सरकार की प्राथमिकता है। किन्तु उसके पुराने स्वरूप के अनुरूप होना चाहिए। वाल्ड सिटी के हैरिटेज स्वरूप को देखने प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में पर्यटक जयपुर भ्रमण हेतु आते हैं। इस बात को ध्यान में रखकर परकोटा क्षेत्र की विशेष साफ-सफाई, जगह-जगह डस्टबिन्स, परकोटा क्षेत्र के पर्यटक स्थलों के आस-पास ही हैरिटेज लुक के टॉयलेटस् निर्मित करने हैं। उपमुख्यमंत्री निर्देश दिए कि परकोटा क्षेत्र को बैनर-पोस्टर से मुक्त रखना है। एक समान आकार के साइनेज लगाए जाने हैं।उन्होंने कहा कि परकोटा क्षेत्र में झूल रहे बिजली के एवं अन्य तारों को भूमिगत करना है। दिया कुमारी ने परकोटा क्षेत्र में यातायात को लेकर उन्होंने विशेष प्रबंध किए जाने हेतु पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए। रामनिवास बाग स्थित पार्किंग के सुचारू संचालन एवं वहां से परकोटे में आने वाले यात्रियों को वाहनों की प्रर्याप्त सुविधा उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु अधिकारियों को निर्देश प्रदान किए। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी को विरासत संग्रहालय की प्रगति के संबंध में निदेशक पुरातत्व द्वारा अवगत कराया गया कि इसे संग्रहालय के रूप में विकसित करने का कार्य प्रक्रियाधीन है। दिया कुमारी ने पर्यटक सुविधा केन्द्र के संबंध में JDA के अधिकारियों को निर्देश दिए की इसे शीघ्र ही पर्यटन विभाग को स्थानान्तरित करें ताकि विभाग इसे पर्यटकों की सुविधा हेतु विकसित कर सके। परकोटा क्षेत्र में संचालित मेट्रो रेल का संचालन इस तरह से हो की अधिक से अधिक लोग इसका उपयागे कर सके। उपमुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि परकोटा क्षत्रे में दुकानदारों द्वारा बरामदों में सामान रख कर अतिक्रमण कर लिया जाता है इन्हें नियमित रूप से नगर निगम हटाए ताकि पदे ल यात्री इनका उपयागे कर सके। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि जलमहल एवं आमेर के संरक्षण एवं सौन्दर्यकरण के कार्य शीघ्र शुरू किए जाए। बैठक में आयुक्त, नगर निगम हेरिटेज, निदेशक, जयपुर मेट्रो रेल कॉरपोरेशन, संयुक्त शासन सचिव, पर्यटन, अतिरिक्त आयुक्त, जयपुर विकास प्राधिकरण, निदेशक, पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, अतिरिक्त जिला कलक्टर, जयपुर, पुलिस अतिरिक्त उपायुक्त (उत्तर), अतिरिक्त निदेशक, पर्यटन, उप निदेशक, पर्यटन पुलिस सहायक उपायुक्त (यातायात), अधीक्षण अभियंता, जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, उपस्थित रहे।

खान विभाग बजट घोषणा क्रियान्विति-क्वारी लाइसेंसधारकों को बड़ी राहत, जीरो वेस्ट माइनिंग और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में बड़ा कदम

बजट घोषणा 137-5 के क्रियान्वयन में अधिसूचना जारी -18 हजार क्वारी लाइसेंसधारक होंगे लाभान्वित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री श्री भजन लाल शर्मा ने क्वारी लाइसेंसधारकों को बड़ी राहत देने के साथ ही जीरो वेस्ट माइनिंग, पर्यावरण संरक्षण और एम-सेण्ड को बढ़ावा देने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। प्रमुख शासन सचिव माइंस एवं पेट्रोलियम श्री टी.रविकान्त ने बताया कि क्वारी लाइसेंसधारकों को राहत देते हुए सरलीकृत माइनिंग प्लान की 5 हजार की फीस राशि को कम कर 3 हजार रुपए कर दिया है। इससे करीब 18 हजार क्वारी लाइसेंसधारक लाभान्वित होंगे। इसी तरह से अब गैरसरकारी भूमि पर जमा खानों के मलबा (ओवरवर्डन डम्प्स) का एम-सेण्ड व अन्य कार्यों के लिए उपयोग किया जा सकेगा और उस पर रॉयल्टी की फीस में 50 प्रतिशत की छूट दी गई है। प्रमुख सचिव टी. रविकान्त ने बताया कि राज्य के खान विभाग से संबंधित बजट घोषणा 2025-26 की 137-5 की क्रियान्विति में अधिसूचना जारी कर और इससे पहले सीएनजी-पीएनजी दरों की वैट दरों में कमी से खान विभाग की दो बजट घोषणाओं की क्रियान्विति से आमनागरिकों व खनन क्षेत्र से जुड़े लोगों को बड़ी राहत मिली है। रॉयल्टी की दरों को 50 प्रतिशत करने से प्रदेश में खानों के मलबे को एम-सेण्ड में उपयोग के साथ ही अन्य प्रयोजन के लिए भी उपयोग को बढावा मिल सकेगा। इससे प्रदेश में पर्यावरण संरक्षण व जीरो वेस्ट माइनिंग को बढ़ावा मिलेगा।

ग्राम पंचायत परिसीमन के विरोध में उतरे ग्रामीण

उपखंड कार्यालय पहुंचकर उपखंड अधिकारी को सोपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

कुचामन सिटी(निसं.) जिले के नावां विधानसभा क्षेत्र के ग्राम भींचरों का बास, विजयकलां और श्यामपुरा के ग्रामीणों ने हाल ही में जारी पंचायत पुनर्गठन प्रस्ताव के खिलाफ एक स्वर में आवाज़ उठाई है. जिला कलेक्टर कार्यालय द्वारा जारी आदेश में इन गांवों को वर्तमान ग्राम पंचायत नालोट से हटाकर प्रस्तावित ग्राम पंचायत लाम्बा में शामिल करने की बात कही गई है . इस फैसले के विरोध में ग्रामीणों ने राजस्थान सरकार के राजस्व, सैनिक कल्याण एवं उपनिवेशन राज्य मंत्री विजय सिंह चौधरी के नाम एक मांगपत्र एसडीएम कार्यालय कुचामन के जरिए सौंपा. ग्रामीणों का कहना है कि नालोट पंचायत से इन गांवों का वर्षों पुराना सामाजिक, भौगोलिक और भावनात्मक जुड़ाव रहा है. नालोट ग्राम पंचायत तक आमजन की पहुंच आसान है, वहीं प्रस्तावित लाम्बा पंचायत की ओर जाने में अरावली की पर्वत श्रृंखला एक बड़ी भौगोलिक बाधा के रूप में सामने आती है. ज्ञापन में बताया गया कि वर्तमान पंचायत नालोट में शिक्षा, चिकित्सा व सहकारी सुविधाएं आमजन की सीधी पहुंच में हैं, लेकिन प्रस्तावित बदलाव से इन सेवाओं तक पहुंचना ग्रामीणों के लिए कठिन हो जाएगा. ग्रामीणों ने यह भी उल्लेख किया कि नालोट पंचायत कार्यालय तक जाने के लिए कई संपर्क मार्ग हैं, जबकि लाम्बा पंचायत के लिए केवल एक लंबा और कठिन रास्ता है. ग्रामीणों ने मांग पत्र के जाए मंत्री विजय सिंह चौधरी से कहा कि आमजन की सुविधा, भावना व भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए भींचरों का बास, विजयकलां और श्यामपुरा गांवों को वर्तमान ग्राम पंचायत नालोट में ही बनाए रखा जाए. ग्रामीणों का कहना है की उनका यह विरोध केवल एक पंचायत के सीमांकन का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह आमजन की सहूलियत, जुड़ाव और विकास से जुड़े गहरे सरोकार को दर्शाता है.

जिला कलक्टर ने बलरिया में सुनी रात्रि चौपाल कर सुनी ग्रामीणों की समस्याएं

जयपुर टाइम्स

सवाई माधोपुर(निसं.)। आमजन की समस्याओं का त्वरित निस्तारण के लिए जिला कलक्टर शुभम चौधरी की अध्यक्षता में पंचायत समिति चौथ का बरवाड़ा की ग्राम पंचायत बलरिया के भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केन्द्र में रात्रि चौपाल का आयोजन हुआ। जिला कलक्टर ने रात्रि चौपाल में ग्रामीणों की समस्याओं को सुन मौके पर उपस्थित अधिकारियों को परिवादों का शीघ्र निस्तारण करने के निर्देश प्रदान किए। उन्होंने ग्रामीणों को राज्य एवं केंद्र सरकार की विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान और उन्हें अधिक से अधिक लाभ उठाने हेतु प्रोत्साहित किया गया। इस दौरान ग्रामीणों ने जॉब कार्ड बनवाने, जल जीवन मिशन के तहत किए गए नल कनेक्शनों में पानी नहीं आने, सड़क निर्माण करवाने, कब्जा सुपुर्द करवाने, खुले कुएं को ढकवाने, मनरेगा में काम दिलवाने, भूमि का आबादी भूमि में रूपांतरण करवाने सहित कुल 17 प्रकरण प्राप्त हुए। कलक्टर ने अधिकांश समस्याओं का समाधान मौके पर कर शेष के प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण के निर्देश संबंधित विभागीय अधिकारियों को प्रदान किए। उन्होंने अधीक्षण अभियंता जलदाय विभाग भगवान सहाय मीणा को निर्देश दिए कि उनकी टीम के साथ एरिया विजिट कर 16 अप्रैल तक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देश दिए कि आमजन को पेयजल की निर्बाध आपूर्ति की जाए। रात्रि चौपाल में पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता, अतिरिक्त जिला कलक्टर संजय शर्मा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी गौरव बुडानिया, उपखण्ड अधिकारी चौथ का बरवाड़ा दामोदर सिंह, उपनिदेशक आईसीडीएस प्रियंका शर्मा, उपनिदेशक सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग मीना आर्य सहित जिला एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

राजस्थान पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय का 8वां दीक्षांत समारोह सम्पन्न, राज्यपाल बागडे ने दिया बौद्धिक व चारित्रिक विकास पर जोर

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निसं.)। राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय का 8वां दीक्षांत समारोह मंगलवार को महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के मीरा बाई सभागार में आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता करते हुए राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि देश का वास्तविक विकास तभी संभव है जब नागरिक बौद्धिक, शारीरिक और चारित्रिक रूप से सशक्त हों। उन्होंने विद्यार्थियों से अध्ययनशीलता, कौशल विकास और सामाजिक जिम्मेदारी निभाने का आह्वान किया। राज्यपाल ने विद्यार्थियों से गुरु दक्षिणा के रूप में विश्वविद्यालय परिसर में पौधरोपण करने और उसकी देखभाल की अपील की। उन्होंने शालिहोत्र संहिता जैसे प्राचीन ग्रंथों से विद्यार्थियों को परिचित कराने पर जोर दिया। इस दौरान उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रगति पुस्तिका, त्रैमासिक न्यूजलेटर, नई वेबसाइट और फेस रिकॉग्निशन सिस्टम का लोकार्पण किया, साथ ही अरुंधति कन्या छात्रावास का शिलान्यास भी किया। पशुपालन मंत्री जोराराम कुमावत ने कहा कि प्रदेश की 70% आबादी कृषि व पशुपालन से जुड़ी है। उन्होंने सरकार की विभिन्न योजनाओं– मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा, गोपाल क्रेडिट कार्ड, सेक्स सॉर्टेट सीमेन, मोबाइल वेटरनरी यूनिट– की जानकारी दी। दीक्षांत भाषण में डॉ. नितीन पाटिल ने जलवायु परिवर्तन से पशुधन पर पड़ रहे प्रभावों पर चिंता जताई। कुलपति प्रो. मनोज दीक्षित ने प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और बताया कि समारोह में 515 उपाधियां एवं 10 स्वर्ण पदक वितरित किए गए।

इस मानसून ईसरदा बांध में होगा जल संग्रहण, 1256 गांव और 6 शहर होंगे लाभान्वित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रदेश में पेयजल आपूर्ति को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से सवाई माधोपुर और दौसा जिले में ईसरदा बांध का निर्माण कार्य तीव्र गति से जारी है। जल संसाधन विभाग के अनुसार बांध का 90 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है और आगामी जुलाई तक शेष कार्य भी पूर्ण कर मानसून में जल संग्रहण की तैयारी की जा रही है। बांध के स्पिलवे, पियर्स, रेडियल गेट्स, हाइड्रोलिक सिलेंडर आदि सभी प्रमुख संरचनात्मक कार्य पूर्ण हो चुके हैं। मिट्टी के बांध का कार्य भी 82 प्रतिशत तक पूरा हो गया है। बांध के चालू होने पर दौसा के 1079 गांव व 5 शहरों तथा सवाई माधोपुर के 177 गांवों व एक शहर को स्वच्छ पेयजल मिलेगा। ईसरदा बांध से बीसलपुर बांध के अधिशेष जल और बनास नदी के वर्षा जल का कुशल उपयोग सुनिश्चित होगा। साथ ही राम जल सेतु लिंक परियोजना के तहत जयपुर सहित अन्य क्षेत्रों को भी पेयजल आपूर्ति संभव होगी। बांध का निर्माण दो चरणों में किया जा रहा है, जिसका प्रथम चरण 1038.65 करोड़ रुपये की लागत से प्रगतिरत है। जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने कहा कि मुख्यमंत्री के निर्देशन में विभाग प्रत्येक नागरिक तक स्वच्छ जल पहुंचाने हेतु संकल्पबद्ध है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में भूजल स्तर भी बढ़ेगा और पेयजल संकट का समाधान होगा।

शिक्षामंत्री ने दिए लंबित जांच प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के निर्देश, 16-17 सीसीए और एसपी मामलों पर हुई गहन समीक्षा

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद के सभागार में मंगलवार को आयोजित एक अहम बैठक में शिक्षामंत्री मदन दिलावर ने निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर द्वारा प्रस्तुत लंबित जांच प्रकरणों की समीक्षा की। बैठक में वर्ष 1989 से 2025 तक के 16 सीसीए, 17 सीसीए, एसपी प्रकरण, न्यून परीक्षा परिणाम से जुड़े प्रधानाचार्य एवं व्याख्याता स्तर के मामलों पर विस्तार से चर्चा की गई। शिक्षामंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वर्षों से लंबित इन मामलों का त्वरित निस्तारण सुनिश्चित किया जाए ताकि विभागीय प्रक्रियाएं पारदर्शिता और प्रभावशीलता के साथ आगे बढ़ सकें। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रकरणों में अनावश्यक देरी स्वीकार नहीं की जाएगी और जिम्मेदार अधिकारियों से जवाबदेही तय की जाएगी। बैठक में विशिष्ठ शासन सचिव विश्व मोहन शर्मा, समग्र शिक्षा की राज्य परियोजना आयुक्त मती अनुपमा जोरवाल, प्राथमिक शिक्षा निदेशक सीताराम जाट, संयुक्त शासन सचिव मनीष गोयल, अतिरिक्त राज्य परियोजना निदेशक सुरेश बुनकर एवं विशेषाधिकारी सतीश गुप्ता सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में निर्णय लिया गया कि सभी संबंधित इकाइयां समन्वय बनाकर पेंडिंग मामलों को प्राथमिकता के आधार पर हल करेंगी, जिससे शिक्षा विभाग की कार्यप्रणाली में सुधार हो और कार्मिकों में भरोसा बने।

उपमुख्यमंत्री डॉ. बैरवा ने 48वें राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस के पोस्टर का किया विमोचन - सूचना एवं जनसंपर्क आयुक्त को भेंट किया पोस्टर

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने मंगलवार को 48वें राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस के पोस्टर का विमोचन किया। इस अवसर पर उन्होंने देश- प्रदेश के जनसंपर्क क्षेत्र के पेशेवरों को शुभकामनाएँ दीं और देश में सूचनात्मक एवं उत्तरदायी संप्रेषण को बढ़ावा देने में उनके प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर सूचना एवं जनसंपर्क आयुक्त सुनील शर्मा को भी 48वें राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस का पोस्टर भेंट किया। उन्होंने कहा कि जनसंपर्क के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव है और इस दिशा में कार्यरत सभी जनसंपर्क पेशेवरों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस दौरान जयपुर चैप्टर के अध्यक्ष वीरेंद्र पारीक, उपाध्यक्ष मती कविता जोशी एवं सचिव मनीष हूजा मौजूद रहे

राजस्थान में लू का कहरः बाड़मेर में पारा 45 एष्ट पार, अगले 48 घंटे तक नहीं मिलेगी राहत

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान में दो दिन की हल्की राहत के बाद गर्मी ने फिर जोर पकड़ लिया है। सोमवार को बाड़मेर में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच गया, जबकि जैसलमेर और फलोदी में भी पारा 44 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। तेज धूप और गर्म हवाओं के कारण लोगों को जलन का अहसास हो रहा है। मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि अगले 48 घंटे तक गर्मी से राहत की कोई उम्मीद नहीं है। आने वाले दिनों में तापमान में 2 डिग्री की और बढ़ोतरी हो सकती है, जिससे पारा बाड़मेर और जैसलमेर में 46 डिग्री से भी ऊपर जा सकता है। 15 अप्रैल को गंगानगर, बीकानेर, झुंझुनूं, जोधपुर, जैसलमेर और बाड़मेर में येलो अलर्ट जारी किया गया है। वहीं 16 अप्रैल को श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर में ऑरेंज अलर्ट घोषित किया गया है। जोधपुर, पाली, जालोर, हनुमानगढ़, चूरू, सीकर, अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली और दौसा में भी येलो अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग ने लोगों को धूप में बाहर निकलने से बचने और पर्याप्त पानी पीने की सलाह दी है।

राजस्थान राज्य सहकारी अधिकरण, जयपुर के न्यायालय एवं कार्यालय अब प्रातः 7.00 बजे से 1.30 बजे तक खुलेंगे

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। ग्रीष्म ऋतु के दृष्टिगत राजस्थान राज्य सहकारी अधिकरण, जयपुर के न्यायालय एवं कार्यालय समय में परिवर्तन किया गया है। सहकारिता विभाग के संयुक्त शासन सचिव दिनेश कुमार जांगिड ने बताया कि दिनांक 15 अप्रैल से 27 जून 2025 तक न्यायालय समय प्रातः 7.00 बजे से 1.30 बजे तक तथा कार्यालय समय प्रातः 7.00 बजे से 1.30 बजे तक होगा। उन्होंने बताया कि अध्यक्ष/सदस्य प्रातः 7.00 बजे से 7.30 बजे तक अपने-अपने चैम्बर्स में कार्य करेंगे।

मनमानी की दवा और मरीज

सरकार अगर जेनेरिक दवाओं के लिए कोई कानून लाती है, तो कुछ ऐसे प्रावधान किए जाने चाहिए। जो भी दवा जेनेरिक हो, उस पर मोटे अक्षरों में जेनेरिक लिखा रहे। डॉक्टर अबूझ लिखावट के बजाय साफ-साफ लिखें जिसे मरीज भी पढ़ सकें। यदि किसी बीमारी की जेनेरिक दवा होते हुए भी डॉक्टर गैर-जेनेरिक दवा लिखते हैं, तो उसका कारण स्पष्ट करें। राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति के जरिये देश के सभी तबकों के नागरिकों के लिए समुचित चिकित्सा की उपलब्धता सुनिश्चित करने का इरादा केंद्र सरकार पहले ही जता चुकी है। अब उसने जेनेरिक दवाओं का चलन बढ़ाने के लिए कानून लाने की बात कह कर दवाओं की मुनाफाखोरी पर लगाम लगाने के संकेत दिए हैं। पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने जनसंवाद कार्यक्रम 'मन की बात' में जेनेरिक दवाओं के संबंध में कुछ बातें कही थीं। अब उन्होंने एक अस्पताल के उद्घाटन कार्यक्रम के अवसर पर इस संबंध में कानून लाने का संकेत दिया है। उन्होंने कहा, 'डॉक्टर उपचार के दौरान इस तरह से पर्चे पर लिखते हैं कि गरीब लोग उनकी लिखावट को नहीं समझ पाते हैं और फिर लोगों को निजी स्टोर से अधिक कीमत पर दवाएं खरीदनी पड़ती हैं। हम एक ऐसा कानूनी ढांचा लाएंगे जिसके तहत अगर कोई डॉक्टर पर्चा लिखता है, तो उसे ऐसे लिखना होगा कि मरीज जेनेरिक दवाएं खरीद सकें और उन्हें कोई अन्य दवा न खरीदनी पड़े।' अब खबर है कि सरकार की तरफ से अधिकारियों को इस संबंध में कानून बनाने के लिए कहा गया है। हालांकि प्रस्तावित कानून कैसा होगा और कब इसका मसौदा सामने आएगा, यह अभी साफ नहीं हुआ है। माना जा रहा है कि प्रस्तावित कानून में जेनेरिक दवाएं न लिखने वाले डॉक्टरों पर सख्ती के प्रावधान किए जाएंगे। बहरहाल, इतना तो तय है कि सरकार जेनेरिक दवाओं का चलन बढ़ाने और महंगी दवाओं के जरिये अनुचित लाभ कमाने वाले डॉक्टरों, दवा-कंपनियों और विक्रेताओं पर लगाम लगाने के लिए कमर कस रही है। यहां यह समझना जरूरी है कि जेनेरिक दवा क्या होती है। दरअसल, कोई भी दवा कंपनी जब किसी दवा को बनाती है, तो उसका एक यौगिक (फार्मूला) होता है जिसका सर्वाधिकार बीस वर्ष तक उसी कंपनी के पास सुरक्षित रहता है। मतलब यह कि बीस वर्ष तक उस दवा को केवल वही कंपनी बना सकती है, जिसने उसके यौगिक की रचना की है। बीस वर्ष के बाद दवा के फार्मूले को सार्वजनिक कर दिया जाता है और तब उसके अनुसार कोई भी कंपनी उस दवा को बनाने के लिए स्वतंत्र होती है। सार्वजनिक फार्मूले के तहत बनने वाली दवा ही जेनेरिक दवा कहलाती है। फार्मूला सार्वजनिक होने के कारण जेनेरिक दवाएं सस्ती होती हैं। जबकि जो फार्मूला सार्वजनिक नहीं होता, उससे निर्मित दवाएं केवल एक कंपनी द्वारा बनाए जाने के कारण, बाजारी प्रतिस्पर्धा के अभाव में, काफी महंगी मिलती हैं। उदाहरण के तौर पर, सामान्य बुखार के लिए प्रयुक्त होने वाली दवा पैरासिटामाल एक जेनेरिक दवा है, इस नाते बाजार में यह सब जगह इसी एक नाम से मिलती है और इसकी कीमत भी काफी कम होती है। मगर, इसी केजैसे प्रभाव वाली बुखार की दूसरी कई दवाएं जेनेरिक न होने के कारण इससे महंगी मिलती हैं। यह तो सामान्य बुखार की दवाओं की बात है, बड़ी-बड़ी बीमारियों में प्रयुक्त होने वाली जेनेरिक और गैर-जेनेरिक दवाओं की कीमतों के बीच तो कई गुने का अंतर देखने को मिलता है। दरअसल, अब समस्या यह है कि जब कोई व्यक्ति डॉक्टर के पास जाता है, तो प्राय वह सस्ती जेनेरिक दवाएं लिखने के बजाय समान प्रभाव वाली महंगी गैर-जेनेरिक या ब्रांडेड दवाएं लिख देता है। साथ ही, अक्सर हर डॉक्टर अपनी जान-पहचान के दो-एक दवा-विक्रेताओं के नाम भी सुझाते हुए वहीं से दवा लेने की सलाह दे डालता है। मरीज जो डॉक्टर को अपना भगवान माने बैठे होता है, वह बिना कोई सवाल-जवाब किए डॉक्टर की बताई हुई जगह से दवा खरीद लेता है। अब उस दवा-विक्रेता से डॉक्टर का कमीशन तय होता है। जितने अधिक मरीज डॉक्टर उस दवा-विक्रेता के पास भेजता है, डॉक्टर को कमीशन के रूप उतनी ही अधिक प्राप्ति होती है। दवा बनाने वाली कंपनी से लेकर डॉक्टरों और दवा-विक्रेताओं की मुनाफाखोरी के इस पूरे मकड़जाल में मरीज उलझ कर रह जाता है और उसे कुछ पता भी नहीं चलता कि माजरा क्या है। जो दवाएं उसे काफी कम कीमत में मिल सकती हैं, जानकारी के अभाव में वह उन दवाओं के लिए अधिक कीमत दे आता है। प्राय मरीज इन सब विषयों में डॉक्टरों से कुछ सवाल भी नहीं कर पाते, लेकिन अगर किसी जागरूक व्यक्ति ने कभी गैर-जेनेरिक दवाओं को लेकर कोई सवाल कर दिया और जेनेरिक दवा लिखने की मांग कर दी, तो डॉक्टर नाराज हो जाते हैं। उनका कहना होता है कि उन्होंने जो दवा लिखी है वही फायदेमंद है और अगर मरीज ने अपने मन से दवा ली तो उसके हानि-लाभ का जिम्मेदार वह खुद होगा। इस तरह की बातों के बाद मरीज अक्सर डर जाते हैं और डॉक्टर के एक-एक निर्देश का अनुपालन करते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि इस तरह मरीजों का भयादोहन करके डॉक्टर और दवा-विक्रेता पूरी सांठगांठ से दवाओं की मुनाफाखोरी का बड़ा गोरखधंधा चला रहे हैं। इसी बेलगाम मुनाफाखोरी पर लगाम लगाने के लिए अब मोदी सरकार ने कानून बनाने के संकेत दिए हैं। लेकिन सवाल यह उठता है कि देश की गली-गली में फैले छोटे-छोटे डॉक्टरों और दवा-विक्रेताओं की मनमानियों पर क्या महज कानून के जरिए नियंत्रण पाया जा सकता है? दरअसल, इस संबंध में कानून होना तो समय की आवश्यकता है, मगर सिर्फ कानून के बल पर इस गोरखधंधे पर लगाम लग जाएगी, यह दावा नहीं किया जा सकता। दवाओं से जुड़ी अनियंत्रित मुनाफाखोरी से तो निजात तभी मिल पाएगी जब कानून बनने के साथ-साथ लोगों में जागरूकता भी आएगी। वैसे, जेनेरिक दवाओं को लेकर जमीनी स्तर पर लंबे समय से काम कर रहे स्वास्थ्य कार्यकर्ता आशुतोष कुमार सिंह एक अलग ही समस्या की तरफ ध्यान आकर्षित करते हैं। उनका कहना है कि देश में नब्बे प्रतिशत दवाएं जेनेरिक हैं, मगर उन्हें ब्रांडेड के रूप में बेचा जा रहा है। सरकार को इस तरह की धोखाधड़ी बंद करने के लिए कदम उठाने की जरूरत है। अब सरकार अगर जेनेरिक दवाओं के लिए कोई कानून लाती है, तो उसे उपर्युक्त सभी बातों पर विचार करना होगा। मोटे तौर पर संभावित कानून में कुछ ऐसे प्रावधान किए जाने चाहिए। पहला, यह कि जो भी दवा जेनेरिक हो, उस पर मोटे अक्षरों में जेनेरिक लिखा रहे। दूसरा, डॉक्टर मरीज को यदि कोई दवा बाहर से लिखते हैं, तो अपनी अबूझ लिखावट के बजाय साफ-साफ शब्दों में लिखें जिसे मरीज भी पढ़ सकें। इसके अलावा यह प्रावधान भी किया जा सकता है

ताकि अदालतों पर न बढ़े वैवाहिक मामलों का अनावश्यक बोझ!

भारत के उच्चतम न्यायालय की न्यायाधीश न्यायमूर्ति बी वी नागरत्ना ने हाल ही में बेंगलुरु में एक आयोजन के दौरान वैवाहिक विवादों के बढ़ते मामलों पर चिंता जताई है और यह बात कही है कि देशभर में वैवाहिक विवादों के बढ़ते मामले न्यायालयों पर अत्यधिक बोझ डाल रहे हैं। वास्तव में न्यायमूर्ति का कहना बिलकुल ठीक है कि आज के समय में हमारे देश में वैवाहिक विवाद बढ़ते ही चले जा रहे हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि वैवाहिक विवाद मामलों से जहां एक ओर देश के न्यायालयों पर अनावश्यक बोझ बढ़ता है वहीं दूसरी ओर इससे परिवार के बच्चे सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। आज घरेलू हिंसा, दहेज, अत्याचार,गुजारा भत्ता को लेकर अनेक याचिकाएं न्यायालयों में लगतीं हैं।यह विडंबना ही है कि आज छोटी-छोटी बातों को लेकर याचिकाएं दायर की जातीं हैं। मामूली असहमति भी आज बड़े विवाद में बदल रहीं हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज भी हमारे देश में फैमिली कोर्ट की संख्या अपर्याप्त है और इन पर ज़्यादा दबाव है। दरअसल,विवादों की रोकथाम के लिए पूर्व-वाद निपटान और मध्यस्थता की ज़रूरत है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि वर्ष 2022 में भी उच्चतम न्यायालय ने यह बात कही थी कि' देश में वैवाहिक विवादों से संबंधित मुकदमों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है और अब वैवाहिक संस्था के प्रति नाखुशी और कटुता ज्यादा नजर आ रही है।'गौरतलब है कि उस समय न्यायालय ने यह टिप्पणी की थी कि 'इसका नतीजा यह हो रहा है कि पति और उसके रिश्तेदारों के साथ अपना हिसाब चुकता करने के लिए भारतीय दंड संहिता की धारा 498-ए जैसे प्रावधानों का इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।' यहां पाठकों को बताता चलूं कि धारा 498-ए ससुराल में पति या उसके रिश्तेदारों द्वारा स्त्री के उत्पीड़न से संबंधित अपराध के बारे में है और इसका अक्सर दुरूपयोग किया जाता है, जिस पर देश के सबसे बड़े न्यायालय द्वारा चिंता जताई गई थी। बहरहाल, उल्लेखनीय है कि न्यायमूर्ति नागरत्ना बेंगलौर में सुप्रीम कोर्ट की फैमिली कोर्ट्स कमेटी द्वारा आयोजित साउदर्न जोन रीजनल कॉन्फ्रेंस को संबोधित कर रही थीं, जिसका विषय था, 'फैमिली द बेसिस ऑफ इंडियन सोसाइटी'। क्या यह गंभीर होने के साथ ही विडंबना नहीं है कि आज के समय में वैवाहिक विवाद इस स्तर पर पहुंच जा रहे हैं कि पति-पत्नी के बीच समझौते की कोई हल्की सी भी संभावनाएं नजर नहीं आतीं हैं। इससे बड़ी बात भला और क्या हो सकती है कि आज के समय में एक ही मामले में घरेलू हिंसा, गुजारा भत्ता जैसी याचिकाओं का अंबार लगता जाता है और इसका नतीजा छोटे-छोटे बच्चे भुगतते हैं। आखिर इसमें बच्चों का क्या दोष होता है जो पति-पत्नी के आपसी झगड़ों के बीच पिसते हैं ? न्यायमूर्ति का यह कहना था कि ' तलाक और वैवाहिक विवादों के निरंतर बढ़ते जाने के लिए स्त्रियों की आर्थिक स्वतंत्रता कतई जिम्मेदार नहीं है। आज शिक्षा का क्षेत्र हो या रोजगार का क्षेत्र हो, लड़कियों की इन दोनों तक पहुंच में तेजी से इजाफा हुआ है। समय के साथ महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता में भी तेजी से वृद्धि हुई है। बढ़ते हुए शहरीकरण, औधोगिकीकरण तथा पाश्चात्य संस्कृति के आगमन से आज भारतीय परिवारों का पारंपरिक ढांचा बहुत तेजी से बदल रहा है। न्यायमूर्ति के

सुनील कुमार महला,

फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

मुताबिक महिलाओं की यह सामाजिक-आर्थिक मुक्ति स्वागतयोग्य भी है और आज के समय में आवश्यक भी। यह अच्छी बात है कि आज के समय में शिक्षा व रोजगार तक बढ़ती पहुंच के कारण स्त्रियां लगातार सामाजिक-आर्थिक रूप से स्वतंत्र बन रही हैं। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि इस बदलाव का स्वागत हो, पर यह दुखद है कि आज हमारा समाज इसे स्वीकार नहीं कर पा रहा है, जिससे देश में तलाक के मामले लगातार बढ़ रहे हैं और इसका व्यापक असर हमारे समाज, देश और अदालतों पर पड़ रहा है। यहां यह लेखक कहना चाहता है कि आज भी हमारे देश में मुकदमों के हिसाब से पर्याप्त संख्या में जज भी नहीं हैं, जबकि अदालतों में पर्याप्त संख्या में जज होने चाहिए। यहां यह भी कहना ग़लत नहीं होगा कि देर से मिलने वाला न्याय भी अन्याय के समान ही होता है, इसलिए इस ओर भी ध्यान केंद्रित किए जाने की आवश्यकता है। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि फास्ट ट्रैक अदालतों की स्थापना हो, और इस पर पूरी गंभीरता से काम करना होगा। सरकार को यह चाहिए कि वह देश में और अधिक पारिवारिक न्यायालयों की स्थापना करें। गौरतलब है कि पारिवारिक न्यायालय अधिनियम, 1984 के तहत, आबादी 10 लाख से ज़्यादा वाले शहरों में पारिवारिक न्यायालय स्थापित किए जाते हैं।इन न्यायालयों में विवाह और पारिवारिक मामलों से जुड़े विवादों का निपटारा होता है।इन मामलों में भरण-पोषण, तलाक, संतान अभिरक्षा, दांपत्य जीवन के अधिकारों की बहाली, न्यायिक पृथककरण वगैरह शामिल हैं। अधिक पारिवारिक न्यायालय होंगे तो न्याय भी जल्द मिल सकेगा। बहरहाल , ऐसा भी नहीं है कि देश में फास्ट ट्रैक अदालतों की स्थापना नहीं हुई है। निर्भया कांड के बाद काफी फास्ट ट्रैक अदालतों की स्थापना हमारे देश में हुई है लेकिन आज अदालतों में छोटे-छोटे पारिवारिक मामले भी आने लगे हैं, जिससे अदालतों पर अनावश्यक बोझ बढ़ा है।

यह बात भी बिल्कुल सही है कि आज के समय में हमारे देश की न्याय व्यवस्था में सुधार के कई प्रयास किए गए हैं। ऑनलाइन काम होने लगा है, जिसमें लोगों का श्रम और समय, दोनों बच रहा है।यह भी सच है कि आज ऑनलाइन प्रक्रिया होने से पारदर्शिता भी काफी हद तक बढ़ गई है, लेकिन फिर भी, लेट-लतीफी की समस्या बदस्तूर बनी हुई है, जो चिंतनीय है। आज मुकदमों का बोझ कम करने के लिए राष्ट्रीय लोक अदालत की व्यवस्था की गई है, जहां हर तरह के मुकदमों के निस्तारण की व्यवस्था होती है, जो स्वागत योग्य कदम कहा जा सकता है।इतना ही नहीं,सरकार और संबंधित तंत्र की ओर से आज समय समय पर जन-जागरूकता बढ़ाने की दिशा में भी लगातार काम किया जा रहा है, ताकि लोग बेवजह की मुकदमेबाजी से बचें। वास्तव में इस तरह के प्रयास होने चाहिए कि अदालतों से त्वरित न्याय का आम लोगों का सपना पूरा हो सके और इसके लिए किसी कानून में संशोधन की भी जरूरत महसूस होती है, तो केंद्र सरकार को इस दिशा में तत्परता दिखानी चाहिए और जल्द से जल्द संशोधन करना चाहिए,तभी जरूरतमंदों को समय पर न्याय मिल सकेगा। छोटे छोटे पारिवारिक मामलों को गांव शहर स्तर पर भी आसानी से विभिन्न पारिवारिक संगठनों, संस्थाओं द्वारा निपटाया जा सकता है। वास्तव में सच तो यह है कि छोटे छोटे पारिवारिक मामलों को निपटाने के लिए, आपसी बातचीत, मध्यस्थता, या काउंसलिंग की मदद ली जा सकती है। आपसी समझाइश से परिवारों को जोड़ा जा सकता है और विवादों को खत्म किया जा सकता है।फैमिली रिलेशनशिप एडवाइस लाइन से भी संपर्क स्थापित किया जा सकता है। इतना ही नहीं, आज जरूरत इस बात की भी है कि महिलाओं के इस रूपांतरण(सामाजिक-आर्थिक स्वतंत्रता)को भी हमारे समाज द्वारा प्रोत्साहित किये जाने की आवश्यकता महत्ती है। बेंगलुरु में न्यायाधीश न्यायमूर्ति बी वी नागरत्ना ने यह बात कही है कि ' महिलाएं सिर्फ अपने परिवारों के लिए नहीं कमा रहीं, बल्कि राष्ट्र के लिए भी योगदान कर रही हैं, लेकिन हमारा समाज इस बदलाव को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं है। वास्तव में हमारे दृष्टिकोण और व्यवहार समय के अनुरूप अद्यतन नहीं हो रहे हैं और ऐसे में, पारिवारिक विवाद बढ़ रहे हैं। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि इस संबंध में आंकड़ा पेश करते हुए उन्होंने यह बात कही है कि 'बीते दशक में लगभग 40 प्रतिशत शादियां तलाक के कारण प्रभावित हुई हैं।' न्यायमूर्ति के मुताबिक आज भारतीय परिवारों तथा समाजों को अपना रवैया और व्यवहार बदलने की आवश्यकता है। उन्होंने यहां तक कहा है कि ' परिवार अदालतों में दोनों पक्षों की मुलाकात के दौरान वकील की मौजूदगी मशीनी नहीं होनी चाहिए, इसके विपरीत माहौल ऐसा होना चाहिए, जिससे दोनों पक्ष अच्छी तरह बातचीत कर सकें।' इतना ही नहीं उनका यह भी कहना था कि-' यदि दोनों विवादित पक्ष एक दूसरे को समझें, एक दूसरे का सम्मान करें तथा खुद आत्मनिरीक्षण करें, तो तलाकों के मामलों में निश्चित तौर पर कमी आ सकती है।' यदि हम इन सभी बातों पर समय रहते ध्यान दे पाए तो कोई दोराय नहीं कि हम एक खुशहाल व समृद्ध भारत की ओर अग्रसर न हो पाएं।

मनुष्य की जगह

एक अनुमान के मुताबिक आने वाले समय में सैंतालीस फीसद नौकरी कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण समाप्त हो जाएगी। सूचना तकनीक के क्षेत्र में युवाओं का उत्साह जगजाहिर है। भारत में आइआइटी जैसी परीक्षा में बारह लाख विद्यार्थियों का बैठना इसका एक प्रमाण है। दरअसल, इस क्षेत्र में जिंदगी आसान और सुविधासंपन्न होने के साथ पैसे से भी भरपूर है। पर वर्तमान वैश्विक माहौल में तकनीकी कंपनियों द्वारा कर्मचारियों की छंटनी नाक का नासूर बन गई हैं। गौरतलब है कि हाल में ट्विटर द्वारा लगभग पचास फीसद कर्मचारियों की छंटनी की गई। इसके अलावा फेसबुक, माइक्रोसाफ्ट जैसी बड़ी कंपनिया भी छंटनी कर रही हैं। कंपनियों के इस प्रकार के कदम न सिर्फ रोजगार कम करने वाले साबित होंगे, बल्कि युवाओं को हतोत्साहित भी करेंगे। चिंताजनक बात यह है कि इसका सबसे ज्यादा प्रभाव भारत के युवाओं पर पड़ेगा। एक सर्वे के अनुसार हर चार में से तीन वेतनभोगी भारतीय छंटनी के डर से प्रभावित है। ऐसे में सवाल यह उठता है कि इस सबका नतीजा क्या सामने आएगा। इससे बचने का एक बेहतर उपाय युवाओं में नवाचार संस्कृति उत्पन करके किया जा सकता है। हाल में जारी वैश्विक नवाचार सूचकांक में भारत अब चीन और अमेरिका के बाद तीसरा सबसे बड़ा नवाचार यानी स्टार्टअप वाला देश बन गया है। ऐसा कहा जाता है कि तकनीक जितनी अच्छी है, उतनी बुरी भी। उसका इस्तेमाल ही निर्धारण करता है कि उसे कैसा माना जाए। ऐसे में भारत सरकार को भी समय के मिजाज को देखते हुए युवाओं को कौशल प्रशिक्षण और स्टार्टअप संस्कृति से लैस करना चहिए, ताकि आने वाले समय में सबसे बडी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाला देश रोजगार सृजन में आत्मनिर्भर बन सके। वरना आधुनिक तकनीकी के दौर में जो आबादी बेरोजगार और बेकाम होगी, वह कौन-सी दिशा पकड़ेगी, कहना मुश्किल है। अहंकार एक ऐसा दानव हैं जो व्यक्ति के सामाजिक और वास्तविक जीवन दोनों को प्रभावित करता हैं। अहंकार के कारण ही मानवता नष्ट होती जा रही है। अहंकार से ग्रसित व्यक्ति अपना तो बुरा करता ही है, साथ ही दूसरों का भी बुरा करता है। अहंकार में डूबा व्यक्ति किसी कमजोर व्यक्ति की मदद नहीं करना चाहता। अगर सभी ऐसी ही सोचने लगें तो मानवता खत्म सी होती जाएगी। हमें इसका पता होना चाहिए कि इसका प्रभाव चुपचाप हमारे व्यक्तिगत जीवन पर भी हो रहा है। इस कारण लोगों के बीच आपस में काफी दूरियां बढ़ती जा रही हैं। अहंकार ही वह पक्ष है, जिसके कारण मानवता के लिए जगह कम होती जा रही है। लोगों में एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव कम होता जा रहा है। दरअसल, हम अपने आपको बिना वजह भी श्रेष्ठ समझने लगे हैं, जिससे दूसरों के गुणों को नहीं देख पाते हैं। हमारी संस्कृति में मानव धर्म को अधिक महत्त्व दिया जाता है और हम अपने अहंकार के कारण ही अपना मानव धर्म अच्छे से नहीं निभा पा रहे हैं। हमें खुद पर गौर करना चाहिए और अगर यह भाव हमारे भीतर कहीं किसी भी रूप में मौजूद है तो उसे नष्ट करने का प्रयास करना चाहिए। यह ध्यान रखने की जरूरत है कि अहंकारी व्यक्ति धीरे-धीरे सबसे दूर होता जाता है।

स्वामी विवेकानंद और उनके भारत-प्रेम के प्रसंग

सम्पूर्ण विश्व भारत के प्रति, यहां की सभ्यता- संस्कृति के प्रति नतमस्तक हो गया। स्वामीजी रातों - रात लोकप्रिय और प्रसिद्ध हो गए। उनके सम्मान में राजोचित सत्कार का आयोजन किया गया। स्वामीजी का कक्ष भौतिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण था, किन्तु उस विलासितापूर्ण बिछौने पर एक सन्यासी को नींद कहां आने वाली थी! उनका हृदय तो भारत के लिए क्रंदन करता रहा और वे फर्श पर लेट गए। द्रवित होकर सारी रात एक शिशु के समान फूटकर रोते रहे और ईश्वर के सम्मुख भारत के पुनरुत्थान की प्रार्थना करते रहे।

इंग्लैंड से विदा लेने से पूर्व एक अंग्रेज मित्र ने स्वामी विवेकानंद से पूछा, 'स्वामीजी, चार वर्षों तक विलासिता, चकाचौंध तथा शक्ति से परिपूर्ण इस पश्चिमी जगत का अनुभव लेने के बाद अब आपको अपनी मातृभूमि कैसी लगेगी?' स्वामीजी ने उत्तर दिया, 'यहाँ आने से पूर्व मैं भारत से प्रेम करता था परंतु अब तो भारत की धूलिकण तक मेरे लिए पवित्र हो गयी है। अब मेरे लिए वह एक पुण्यभूमि है - एक तीर्थस्थान है!' ऐसी थी हमारे परम पूजनीय स्वामी विवेकानंद की भारत भक्ति। 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में जन्में, ठाकुर श्रीरामकृष्ण परमहंस देव के परमप्रिय शिष्य, गुरुदेव के आशीर्वाद से साधारण नरेन्द्र से असाधारण स्वामी विवेकानंद बन गए। परिव्राजक सन्यासी के रूप में स्वामीजी भारत भ्रमण करते हुए अंत में भारतवर्ष के अंतिम छोर, ध्येयभूमि कन्याकुमारी पहुँचते हैं।1892, दिसंबर माह की 25,26 और 27 तारीख को महासागर के मध्य स्थित शिला पर भारत के भूत, भविष्य, वर्तमान का ध्यान करते हुए उन्हें साक्षात जगतजननी भारत माता के दिव्य स्वरूप के दर्शन होते हैं और साथ ही अपना जीवनोद्देश्य भी प्राप्त होता है। शिकागो (अमेरिका) में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में पहुंचने से पूर्व स्वामीजी को अनगिनत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। तत्पश्चात 11 सितंबर 1893 के पावन दिवस पर गुरु रामकृष्ण प्रेरित ऐसी ओजस्वी वाणी गूंजी की आज भी दुनिया याद करती है। यह केवल स्वामीजी की दिग्विजय ही नहीं अपितु भारतवर्ष के पुनरुत्थान का शंखनाद भी था। सम्पूर्ण विश्व भारत के प्रति, यहां की सभ्यता-संस्कृति के प्रति नतमस्तक हो गया। स्वामीजी रातों - रात लोकप्रिय और प्रसिद्ध हो गए। उनके सम्मान में राजोचित सत्कार का आयोजन किया गया। स्वामीजी का कक्ष भौतिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण था, किन्तु उस विलासितापूर्ण बिछौने पर एक सन्यासी को नींद कहां आने वाली थी! उनका हृदय तो भारत के लिए क्रंदन करता रहा और वे फर्श पर लेट गए। द्रवित होकर सारी रात एक शिशु के समान फूटकर रोते रहे और ईश्वर के सम्मुख भारत के पुनरुत्थान की प्रार्थना करते रहे। भारत के प्रति उनका ऐसा ही ज्वलंत प्रेम था। चार वर्षों के विदेश प्रवास के उपरान्त भारत लौटने के लिए अधीर होते स्वामीजी, जब भारत की मिट्टी पर 15 जनवरी 1897 को अपना पहला कदम रखते हैं। अपने मन के आवेग को वे रोक नहीं पाते और स्वदेश की मिट्टी में लोट-पोट होने लगते हैं तथा भाव-विभोर होकर रोते हुए कहने लगते हैं कि, 'विदेशों में प्रवास के कारण मुझमें यदि कोई दोष आ गए हों तो हे धरती माता! मुझे क्षमा कर देना।' एक बार किसी ने स्वामीजी से कहा की सन्यासी को अपने देश के प्रति विशेष लगाव नहीं रखना चाहिए, बल्कि उसे तो प्रत्येक राष्ट्र को अपना ही मानना चाहिए। इस पर स्वामीजी ने उत्तर दिया - 'जो व्यक्ति अपनी ही माँ को प्रेम तथा सेवा नहीं दे सकता, वह भला दूसरे की माँ को सहानुभूति कैसे दे सकेगा ?' अर्थात पहले देशभक्ति और उसके बाद विश्वप्रेम! स्वामीजी की महान प्रशंसिका तथा उन्हें अपना मित्र माननेवाली अमेरिकी महिला जोसेफिन मैक्लाउड ने एक बार उनसे पूछा था, 'मैं आपकी सर्वाधिक सहायता कैसे कर सकती हूँ?' तब स्वामीजी ने उत्तर दिया था, 'भारत से प्रेम करो।' स्वयं के विषय में बोलते हुए उन्होंने एकबार कहा था कि वे 'घनीभूत भारत' हैं। वस्तुतः उनका भारत-प्रेम इतना गहन था कि आखिरकार वे भारत की साकार प्रतिमूर्ति ही बन गए थे। कविश्रेष्ठ रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उनके विषय में कहा था कि, 'यदि आप भारत को समझना चाहते हैं, तो विवेकानंद का अध्ययन कीजिये।' स्वामीजी और भारत एकाकार हो गए थे। भगिनी निवेदिता के शब्दों में यही विश्वास प्रतिध्वनित होता है - 'भारत ही स्वामीजी का महानतम भाव था। भारत ही उनके हृदय में धड़कता था, भारत ही उनकी धमनियों में प्रवाहित होता था, भारत ही उनका दिवा-स्वप्न था और भारत ही उनकी सनक थी। इतना ही नहीं वे स्वयं ही भारत बन गए थे। वे भारत की सजीव प्रतिमूर्ति थे। वे स्वयं ही - साक्षात भारत, उसकी आध्यात्मिकता, उसकी पवित्रता, उसकी मेधा, उसकी शक्ति, उसकी अन्तर्दृष्टि तथा उसकी नियति के प्रतीक बन गए थे।' स्वामीजी सभी दृष्टियों से अतुल्य थे।

मुंबई पुलिस की खास पहल का चेहरे बने आयुष्मान

अभिनेता आयुष्मान खुराना की गिनती इंडस्ट्री के बड़े सितारों में होती है। गुरुवार को आयुष्मान ने एक खास वजह से फैंस का दिल जीत लिया। दरअसल, उन्होंने मुंबई पुलिस के साथ हाथ मिलाकर साइबर क्राइम के खिलाफ जागरूकता फैलाने का बीड़ा उठाया है।

मुंबई पुलिस के साथ आयुष्मान की खास पहल

आयुष्मान मुंबई पुलिस की नई साइबर सिक्योरिटी को लेकर की गई पहल का चेहरा बने हैं। इस अभियान का मकसद आम लोगों, खासकर कमजोर तबके को साइबर अपराधियों के चालाक तरीकों के बारे में जागरूक करना है। ये अपराधी मासूम लोगों को ठगने और उनके साथ धोखा करने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाते हैं। इस पहल के तहत रिलीज हुए एक वीडियो में आयुष्मान ने ऑनलाइन सावधानी बरतने और ठगी से बचने के आसान टिप्स साझा किए। मौजूदा समय में ज्यादातर शिकार ऐसे लोग बनते हैं, जो इन अपराधियों की चालबाजियों से अनजान होते हैं। मुंबई पुलिस और आयुष्मान का मानना है कि इस वीडियो से लोग डिजिटल दुनिया में खुद को सुरक्षित रखने के लिए जरूरी जानकारी और हौसला पा सकेंगे।

साइबर सुरक्षा पर आयुष्मान ने कही ये बात

इस अभियान के बारे में बात करते हुए आयुष्मान ने कहा, आज के समय में साइबर सुरक्षा बेहद जरूरी हो गई है। ऑनलाइन ठगी और धोखाधड़ी इतनी बढ़ गई है कि हमें जागरूक और सतर्क रहना ही होगा। मुंबई पुलिस के साथ मिलकर काम करना मेरे लिए गर्व की बात है। पुलिस हमेशा शहर के लोगों की सुरक्षा के लिए आगे रहती है और अब ऑनलाइन सुरक्षा को बढ़ावा दे रही है। यह अभियान और पुलिस की नई हेल्पलाइन लोगों को साइबर अपराधों से बचाने और संभावित ठगी से सावधान रहने का शानदार प्रयास है। यह हमें याद दिलाता है कि किसी भी धोखे में फंसने से पहले दो बार सोचना जरूरी है। फिल्मों की बात करें तो आयुष्मान इन दिनों रश्मिका मंदाना के साथ हॉरर-कॉमेडी फिल्म थामा की शूटिंग में व्यस्त हैं। इसके अलावा वह सारा अली खान के साथ एक स्पाई फिल्म पर भी काम कर रहे हैं, जिसका टाइटल अभी तक सामने नहीं आया है।

लोग शाहरुख खान के बाद मुझे ही बेस्ट प्रमोटर बताते हैं, उर्वशी ने शाहरुख से की अपनी तुलना

उर्वशी रौतेला खबरों में रहना बखूबी जानती हैं। दिलचस्प बात यह है कि वे अपने काम और अभिनय की बजाय अपने बयानों को लेकर ज्यादा चर्चा बटोरती हैं। हाल ही में एक बार फिर कुछ ऐसा ही देखने को मिला है। उर्वशी ने हाल ही में अपनी तुलना बॉलीवुड के किंग शाहरुख खान से कर दी। साथ ही यह भी कह दिया कि ऐसा लोग कहते हैं। उनकी इस टिप्पणी पर नेटिजन्स की दिलचस्प प्रतिक्रिया आ रही हैं। उर्वशी रौतेला का एक इंटरव्यू रेडिट पर वायरल हो रहा है। हाल ही में इह्व1इइ के साथ बातचीत में उर्वशी ने खुद को बेस्ट प्रमोटर बताया। दरअसल, उनसे पूछा गया कि लोग उन्हें आत्ममुग्ध कहते हैं। इस पर उनका क्या कहना है? उर्वशी ने जवाब दिया, मैं अपने काम में पूरी तरह से डूबी हुई हूं। अगर लोग ऐसा कह रहे हैं, तो वे यह भी कहते हैं कि शाहरुख खान के बाद उर्वशी रौतेला बेस्ट प्रमोटर हैं।

डाकू महाराज के कलेक्शन पर फिर की बात

इतना ही नहीं उर्वशी ने एक बार फिर फिल्म डाकू महाराज के बॉक्स ऑफिस पर बात की। उन्होंने कहा, फिल्म डाकू महाराज साल 2025 की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्मों में से एक है। इसे आईएमडीबी पर नंबर वन का स्टार मिला। मालूम हो कि सैफ अली खान पर हुए चाकू से हमले की घटना के दौरान उर्वशी से जब इस मामले में पूछा गया था तो वे इस घटना पर बात करने की बजाय डाकू महाराज का कलेक्शन बता रही थीं। इस पर उर्वशी का काफी मजाक बनाया गया था। अब एक बार फिर उर्वशी को ट्रोल किया जा रहा है।

नेटिजन्स ने उड़ाया मजाक

उर्वशी के रेडिट पर वायरल इस वीडियो पर यूजर्स उन्हें लेकर कह रहे हैं कि वे अंटेशन पाना बखूबी जानती हैं। उन्हें मालूम है कि वे अपने कमेंट्स से खबरों में रह सकती हैं और एक बार फिर ऐसा कर दिखाया है। एक यूजर ने लिखा, उर्वशी ने ट्रोल होने के लिए ऐसा किया है। उन्हें पता है कि इसी तरह बातचीत हो सकती है। एक यूजर ने लिखा, उर्वशी जानबूझकर रणनीति के तहत ऐसी बातें कहती हैं, जिससे खबरों में छाई रहें। लेकिन, अच्छी बात ये है कि वो कोई गलत मैसेज तो नहीं दे रहीं।

32 साल बाद शाहरुख के साथ काम करना चाहते हैं सनी देओल

सनी देओल की एक्शन से भरपूर फिल्म जाट सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है। इस फिल्म के प्रमोशन में जोर-शोर से जुटे सनी देओल ने इंडस्ट्री के एक एक्टर के साथ फिर से काम करने की इच्छा जाहिर की है। उन्होंने उस एक्टर का नाम लिया है, जिसके साथ करीब 16 साल तक उन्होंने बात तक नहीं की थी। मगर, अब वे एक और फिल्म उनके साथ करना चाहते हैं और वो एक्टर कोई और नहीं, शाहरुख खान हैं।

16 साल तक रही थी अनबन

शाहरुख खान और सनी देओल ने फिल्म डर में साथ काम किया। साल 1993 में आई इस फिल्म की शूटिंग के दौरान ही दोनों के बीच अनबन हो गई थी और यह अनबन ऐसी रही कि 16 साल तक दोनों ने एक-दूसरे से बात तक नहीं की। हालांकि, अब इनके बीच सबकुछ नॉर्मल हो चुका है। यहां तक कि सनी देओल ने हाल ही में शाहरुख खान के साथ फिर से काम करने की इच्छा जताई है। उन्होंने पिंकविला के साथ एक इंटरव्यू में यह खुलासा किया है।

एक और फिल्म कर सकते हैं

दरअसल, बातचीत में सनी देओल से पूछा गया कि वे दो हीरो वाली फिल्म में किस अभिनेता के साथ स्क्रीन स्पेस साझा करना चाहेंगे? इस पर सनी देओल ने बेझिझक होकर कहा, ऐसे फैसला करना किसके साथ करूंगा नहीं...मेरा मतलब है, मुझे यह करना अच्छा लगेगा। मुझे लगता है कि जो कोई भी...शाहरुख के साथ एक ही फिल्म की थी। तो एक और कर सकते हैं। सनी देओल ने बीते समय को याद करते हुए कहा, यह अच्छा होगा क्योंकि वह एक अलग दौर था और अब यह एक अलग दौर है, इसलिए निश्चित रूप से यह अच्छा होगा।

क्यों हुई थी अनबन?

फिल्म डर के क्लाइमेक्स में शाहरुख खान और सनी देओल के बीच लड़ाई होती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस दौरान सनी देओल ने कहा था कि शाहरुख उन पर सामने से हमला नहीं कर सकते, क्योंकि फिल्म में वे एक ट्रेंड नेवी ऑफिसर हैं। इस पर शाहरुख खान ने कहा था, मैं शक्ति कपूर, प्रेम चोपड़ा या गुलशन ग्रोवर नहीं हूं जो पीछे से हमला करूंगा। इसी बात पर दोनों के बीच नाराजगी बढ़ गई और करीब 16 साल तक रही। बता दें कि फिल्म डर को हाल ही में री-रिलीज किया गया। हालांकि, इस बार यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर खास नहीं चली।

फिल्म इंडस्ट्री में कई बेहद प्रतिभाशाली लोगों को नहीं मिलते समान अवसर

टीवी एक्ट्रेस ईशा मालवीय ने कहा कि फिल्म इंडस्ट्री में अपने करियर की शुरुआत के बाद से उन्हें सबसे ज्यादा हैरानी इस बात से हुई है कि कई बेहद प्रतिभाशाली लोगों को बराबर के अवसर नहीं मिलते। साल 2021 में रिलीज हुए टेलीविजन शो उड़ारियां से एक्टिंग की शुरुआत करने वाली ईशा ने आईएएनएस से बातचीत में कहा, एक चीज जो मुझे हमेशा हैरान करती है और अब भी करती है, वह यह है कि कितने प्रतिभाशाली लोगों को बराबर के अवसर नहीं मिलते। मैं यह नहीं कह रही कि भाई-भतीजावाद पूरी तरह से गलत है, लेकिन मुझे लगता है कि बाहरी लोगों को कम से कम अपनी काबिलियत साबित करने के लिए एक निष्पक्ष मौका तो मिलना चाहिए।

अभिनेत्री ने जोर देकर कहा कि इंडस्ट्री को असली प्रतिभा पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा, उन्हें स्टार किड्स के साथ प्रतिस्पर्धा करने दें और दर्शकों को फैसला करने दें कि कौन वास्तव में चमकने का हकदार है। इंडस्ट्री को किसी की पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना असली प्रतिभा पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए और बॉलीवुड का भविष्य योग्यता से तय होना चाहिए। उड़ारियां में जैस्मिन का किरदार निभाने के बाद ईशा ने साल 2023 में विवादित रियलिटी शो बिग बॉस के 17वें संस्करण में हिस्सा लिया था। वह पांव की जूती जैसे म्यूजिक वीडियो में भी नजर आईं। इसके अलावा, उन्होंने गौहर खान के साथ शो लवली लोला में भी काम किया। क्या उन्हें अपने से पूरी तरह अलग किरदार निभाना ज्यादा मुश्किल लगता है या ऐसा किरदार जो उनके व्यक्तित्व से मिलता-जुलता हो? इसके जवाब में ईशा ने कहा, यह मुझे एक अलग तरह की खुशी देता है और मेरे आत्मविश्वास को बहुत बढ़ाता है। इससे मुझे गर्व महसूस होता है कि मैं एक बहुमुखी अभिनेत्री हूं, जो किसी भी तरह का किरदार निभा सकती हूं। ईमानदारी से कहूं तो किसी भी किरदार को निभाते समय मुझे कभी कोई हिचकिचाहट नहीं हुई, यह मेरे दिमाग में कभी नहीं आया। एक्ट्रेस ने अपनी कमजोरी के बारे में बात की और कहा, मेरी कमजोरी निश्चित रूप से ढेर सारी मिठाइयां खाना है। हालांकि, मुझे शायद ऐसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि मुझे अपनी फिटनेस का ध्यान रखना पड़ता है, लेकिन कभी-कभार ऐसा करना ठीक है। जब उनसे पूछा गया कि अगर उनकी जिंदगी पर फिल्म बने, तो उसका नाम क्या होगा। इसका जवाब देते हुए उन्होंने कहा, अगर मेरी जिंदगी पर कोई फिल्म बनी, तो उसका नाम जरूर 'ये लड़की पागल है' होगा।

सैफ अली खान ने खरीदे ब्लैक रिवर के राइट्स

डायरेक्टर हंसल मेहता और एक्टर सैफ अली खान जल्द ही एक थ्रिलर फिल्म में साथ नजर आएंगे। ये फिल्म नीलांजना एस रॉय के चर्चित नावेल ब्लैक रिवर पर बेस्ड होगी। रिपोर्ट्स के मुताबिक... इस मर्डर मिस्ट्री की एडेप्टेशन राइट्स खुद सैफ ने हासिल की हैं। वह इस फिल्म में एक्टिंग करेंगे और हंसल मेहता की प्रोडक्शन कंपनी स्टोरी फिल्म्स के के साथ साथ इसे को-प्रोड्यूस भी करेंगे। फिल्म की स्क्रिप्ट पर फिलहाल काम चल रहा है। इस अनटाइटल्ड फिल्म की शूटिंग 2026 के मिड तक शुरू होने की उम्मीद है। तब तक सैफ और हंसल अपने बाकी कमिटमेंट्स पूरे कर लेंगे। ब्लैक रिवर एक छोटे से गांव की कहानी है, जो दिल्ली के आउटर इलाके में है। इस अनटाइटल्ड फिल्म की शूटिंग 2026 के मिड तक शुरू होने की उम्मीद है।

खुशकिस्मत हूं कि अच्छे डायरेक्टर से घिरा हूं

श्रद्धा कपूर अभिनीत स्त्री 2 और विक्की कौशल की छावा जैसी दो बैक टू बैक ब्लॉकबस्टर फिल्में देने वाले दिनेश विजन इन दिनों अपनी अगली फिल्म की तैयारी में जुटे हैं। फिल्म का नाम है, भूल चूक माफ। दिनेश विजन के प्रोडक्शन हाउस मैडॉक फिल्म्स के बैनर तले बन रही यह फिल्म मई में रिलीज होगी। हाल ही में दिनेश विजन ने सिनेमा के कई पहलुओं पर बात की। साथ ही बताया कि हिंदी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर खराब प्रदर्शन क्यों कर रही हैं?

क्यों नहीं चल रहीं हिंदी फिल्में?

न्यूज एजेंसी के मुताबिक निर्माता दिनेश विजन का मानना है कि दर्शक उन कहानियों से जुड़ रहे हैं, जो नए भारत के बारे में हैं। फिल्म निर्माता से पूछा गया कि हिंदी फिल्में सिनेमाघरों में खराब प्रदर्शन क्यों कर रही हैं? साथ ही पूछा गया कि ऐसा क्या है जो वह दूसरों से अलग करते हैं।

इस पर निर्माता ने कहा, मैं आपको यह नहीं बता सकता कि मैं क्या कर रहा हूं और दूसरे क्या नहीं कर रहे हैं, क्योंकि मैं भी वही कर रहा हूं। हम यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि अभी हम महत्वाकांक्षी नहीं हैं। हम जिस तरह से सोचते हैं, उसमें हम भारतीय हैं और आम आदमी हमारे बारे में कहानियां पसंद करता है। ऐसी कहानियां चाहता है।

आसपास के लोग मायने रखते हैं

दिनेश विजन ने आगे कहा कि हमारे आसपास कैसे लोग हैं, यह भी महत्वपूर्ण हैस क्योंकि उससे आपके फैसलों पर भी असर दिखाई देता है। निर्माता ने कहा, मैं भाग्यशाली हूं कि मेरे राइटर-डायरेक्टर जमीन से जुड़े हुए और वास्तविक लोग हैं। सभी नए भारत से जुड़े हुए हैं। यह जानना महत्वपूर्ण है कि हम कौन हैं और नए भारत को इस बात पर गर्व है कि वे कौन हैं? निर्माता ने फिल्म भूल चूक माफ के ट्रेलर लॉन्च के अवसर पर यह कहा।

यहां कहानियों का खजाना है

दिनेश विजन का कहना है, इंडस्ट्री में करने के लिए काफी कुछ है। यहां स्टोरीज का खजाना है। दिनेश विजन ने आगे कहा कि वे खुद को भाग्यशाली मानते हैं कि उन्हें करण शर्मा, लक्ष्मण उतेकर और अमर कौशिक जैसे सही कहानीकार मिले, जिन्हें भारत की कहानियां सुनाने में गर्व महसूस होता है। बात करें उनकी आगामी फिल्म भूल चूक माफ की तो ये 09 मई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इसमें राजकुमार राव और वामिका गब्बी लीड रोल में हैं।

रोमांचम की हिंदी रीमेक फिल्म है कपकपी, 23 मई को होगी रिलीज

यस तलपदे अपनी आने वाली श्रेयस तलपद अपनी आने वाली काफी समय से चर्चा में हैं। इस फिल्म में उनके साथ तुषार कपूर भी हैं। यह फिल्म हॉरर और कॉमेडी का मिक्स कॉम्बिनेशन होगी। गोलमाल 3 और गोलमाल रिटर्न्स के बाद, यह श्रेयस और तुषार का एक साथ तीसरा प्रोजेक्ट है। अब, कपकपी की रिलीज डेट सामने आ गई है। फिल्म 23 मई को रिलीज होगी। इसका नया पोस्टर भी जारी किया गया है। फिल्म का निर्देशन संगीत सिवन ने किया है, जबकि जयेश पटेल इसके निर्माता हैं। दिवंगत संगीत द्वारा निर्देशित यह फिल्म उनके आखिरी प्रोजेक्ट में से एक है। निर्देशक का निधन मई 2024 में हो गया था। ये फिल्म जीतू माधवन द्वारा निर्देशित 2023 की मलयालम फिल्म रोमांचम की हिंदी रीमेक है। इसका निर्माण जी स्टूडियोज और ब्रावो एंटरटेनमेंट ने किया है।

नाश्ते में रवा उपमा खाने से मिलेंगे ये लाभ

नाश्ते में अगर कुछ अच्छा (स्वादिष्ट और हेल्दी) खाने को मिल जाए तो पूरा दिन मूड अच्छा रहता है और आप अपनी प्रॉडक्टिविटी में भी अच्छा परिणाम देखते हैं। बस, जरूर इस बात की है कि हम सभी अपने काम और अपने शरीर की जरूरतों को समझें.लेकिन हममें से ज्यादातर लोग बस यहीं मात खा जाते हैं। आइए, जानते हैं दिन की बेहतर शुरुआत करने में रवा उपमा किस तरह हमारी सहायता कर सकता है.

रवा खाने के फायदे

- दक्षिणी भारत में सूजी को रवा कहा जाता है। उत्तर भारत और हिंदी भाषी राज्यों में सूजी का हलवा जिस तरह आय दिन घरों में बनता है और सभी बहुत चाव से खाते हैं। ठीक इसी तरह सूजी से तैयार उपमा यानी रवा उपमा दक्षिण भारत में बहुत अधिक लोकप्रिय भोजन है।
- रवा यानी सूजी गेहूं से तैयार होती है। यह फाइबर से भरपूर होती है इसलिए इसे पचाना हमारे पाचनतंत्र के लिए आसान होता है।
- फाइबर धीमी गति से डायजेस्ट होता है इसलिए यह लंबे समय तक हमारे शरीर को ऊर्जा देने का काम करता है।
- यानी रवा से बना उपमा खाने के बाद जल्दी से भूख नहीं लगती, नींद नहीं आती और आप लंबे समय स्वयं को तक ऊर्जावान महसूस करते हैं।
- रवा उपमा तैयार करते समय इसमें मौसमी सब्जियां मिलाई जाती हैं। यानी इसे खाने से आपको संपूर्ण पोषण प्राप्त होता है। सब्जियों से विटमिन्स और मिनरल्स साथ ही रवा से दिनभर के लिए ऊर्जा।
- रवा उपमा बनाने में मूंगफली और ड्राई फ्रूट्स का उपयोग किया जाता है। इन्हें खाने से आपको सभी जरूरी अमीनो एसिड्स, ओमेगा-3 फैटी एसिड, फॉलिक एसिड और विटमिन्स तथा मिनरल्स की प्राप्ति होती है।
- रवा उपमा फैट यानी वसा और हानिकारक कॉलेस्ट्रोल से पूरी तरह फ्री होता है। इसलिए यह आपके हार्ट की सेहत के लिए भी एक शानदार नाश्ता है। जो हृदय की पंपिंग को सही बनाए रखने और अपने पौषक तत्वों से रक्त का प्रवाह बनाए रखने का काम करता है।
- रवा उपमा खाने में बहुत अधिक स्वादिष्ट और साथ ही सेहत के गुणों से भरपूर होता है। इसलिए साउथ इंडिया से निकलकर इस फूड ने देश के हर हिस्से और घर में अपनी जगह बना ली है।
- आज के समय में पोहा (मुख्य रूप से मध्य भारतीय आहार) दही चूड़ा (मुख्य रूप से बिहार का भोजन) और रवा उपमा तथा इडली (दक्षिण भारतीय भोजन) अपने-अपने राज्यों की सीमाए पार कर नैशनल फूड बन चुके हैं।
- इसकी खास वजह है कि इन फूड्स को तैयार करने में कम समय लगता है। ये पौषक तत्वों से भरपूर होते हैं और कम ऑइली होने के कारण फिटनेस को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। इसके साथ ही पाचन के लिहाज से बहुत अच्छे होते हैं तो इन्हें खाने के बाद आलस भी नहीं आता है।

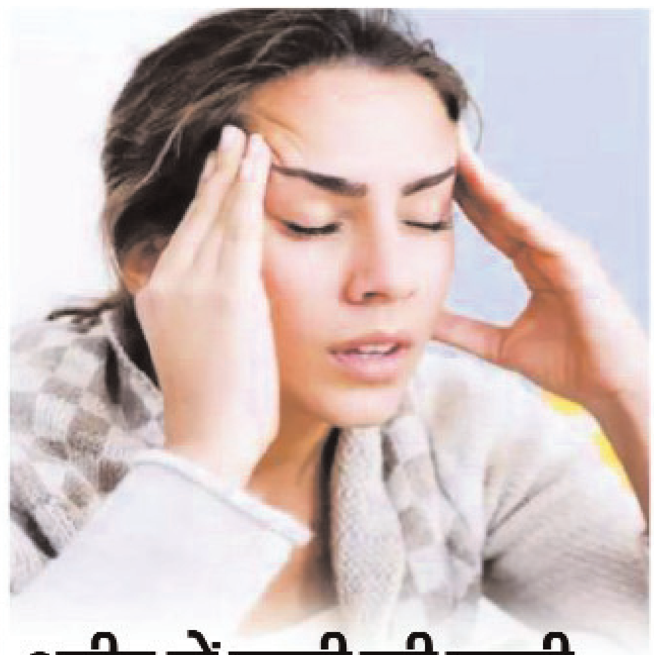

शरीर में पानी की कमी को हल्के में ना लें

शरीर में पानी की कमी को हल्के में ना लें। ये आपको कई गंभीर बीमारियों की तरफ धकेल सकती है. चिकित्सा विज्ञान के अनुसार, हमारे शरीर का 30 प्रतिशत हिस्सा तरल है और बाकी 70 प्रतिशत में अस्थि और मज्जा शामिल है। यही वजह है कि जल को जीवन की संज्ञा दी गई है। क्योंकि मनुष्य बिना भोजन के कुछ समय रह सकता है लेकिन बिना पानी के रहना असंभव होता है। यानी जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। पानी तो हम सभी लोग पीते हैं लेकिन ज्यादातर लोग शरीर की जरूरत के अनुसार उचित मात्रा में पानी नहीं पीते हैं। यही कारण है कि हमारे समाज में बड़े स्तर पर सूखे की बीमारी से पीड़ित पेशंट देखे जा सकते हैं। खासतौर पर गर्मी के मौसम में डिहाइड्रेशन के मरीजों की मानो बाढ़ आ जाती है।

हल्के में ना लें यह समस्या

- आमतौर पर शरीर में पानी की कमी होने को हम सभी बहुत हल्के में लेते हैं। यह एक बड़ी वजह है कि डिहाइड्रेशन के कारण बड़ी संख्या में रोगियों की मृत्यु हो जाती है। आइए, यहां जानते हैं शरीर के उन सामान्य लक्षणों के बारे में जो आपके शरीर में पानी की कमी को दर्शाते हैं। ताकि इन लक्षणों के आधार पर आप तुरंत इस समस्या से निजात पा सकें.

पानी की कमी के सामान्य लक्षण

- जब शरीर में पानी की कमी होती है तो आपके होंठ बहुत सूखे-सूखे हो जाते हैं और उनकी बाहरी त्वचा फटने लगती है। कई बार होठों से खून भी आने लगता है।
- पानी की कमी के कारण गला लगातार सूखा बना रहता है और बार-बार प्यास लगने पर पानी पीने के बाद भी प्यास नहीं मिटती है।
- शरीर में पानी की कमी के कारण सीने पर हल्की जलन, पेट में एसिडिटी या असहजता हो सकती है। साथ ही मुंह से सांसों के साथ लगातार दुर्गंध आती है। ब्रश करने के बाद भी आप सांसों की दुर्गंध फील कर पाते हैं।

यूरिन, स्किन और मसल्स पर असर

- जब शरीर में पानी की कमी होती है तो पेशाब गाढ़े पीले रंग का आता है। इसके साथ मात्रा में सामान्य से कम होता है और पेशाब के बाद प्राइवेट पार्ट में जलन या खुजली की समस्या हो सकती है।
- डिहाइड्रेशन से जूझ रहे लोगों के शरीर की त्वचा भी बहुत रूखी और बेजान नजर आती है। जो लोग लंबे समय से पानी की कमी से जूझ रहे होते हैं, उनकी त्वचा पर कम उम्र में ही झुर्रियां नजर आने लगती हैं।
- पानी की कमी से मांसपेशियों में दर्द, ऐंठन और जकड़न की समस्या हो सकती है। इसके साथ ही सिर में लगातार दर्द बना रहता है। इस कारण रोगी का चेहरा मुझाया हुआ और तेजहीन लगता है।
- जो लोग शरीर की जरूरत के अनुसार पानी नहीं पीते हैं, उनकी आंखों के नीचे काले घेरे साफ देखे जा सकते हैं। इन लोगों की आंखें अंदर धसने लगती हैं और इन्हें हर समय कमजोरी का अहसास बना रह सकता है।

सेहत समस्याओं से निजात पाने के लिए पुदीने के घरेलू नुस्खे

गर्मियों का मौसम आते ही भूख कम लगने लगती है, पेट व त्वचा की गर्मी बढ़ जाती है। ऐसे मौसम में ऐसी चीजें खाने की जरूरत होती है जो आपको ठंडक दे और पुदीना इस मौसम के लिए एक बेहतरीन विकल्प है। गर्मियों में पुदीना या मिंट के अलग-अलग इस्तेमाल से कई सेहत लाभ पाए जा सकते हैं। आइए, जानते हैं पुदीना के ये 8 बेहतरीन घरेलू नुस्खे

- पेट की गर्मी को कम करने के लिए पुदीने का प्रयोग बेहद फायदेमंद है। इसके अलावा यह पेट से संबंधित अन्य समस्याओं से भी जल्द निजात दिलाने में लाभकारी है। इसका कोई साइड इफेक्ट भी नहीं है।
- दिनभर बाहर रहने वाले लोगों को पैर के तलवों में जलन की शिकायत रहती है, ऐसे में उन्हें फ्रिज में रखे हुए पुदीने को पीसकर तलवों पर लगाना चाहिए ताकि तुरंत राहत मिल सके। इससे पैरों की गर्मी भी कम होगी।
- सूखा या गीला पुदीना छाछ, दही, कच्चे आम के पने के साथ मिलाकर पीने पर पेट में होने वाली जलन दूर होगी और ठंडक मिलेगी। गर्मी हवाओं और लू से भी बचाव होगा।
- अगर आपको अक्सर टॉन्सिल्स की शिकायत रहती है और इसमें होने वाली सूजन से भी आप परेशान हैं तो पुदीने के रस में सादा पानी मिलाकर इस पानी से गरारे करना आपके लिए फायदेमंद होगा।
- गर्मी में पुदीने की चटनी का रोजाना सेवन सेहत से जुड़े कई फायदे देता है। पुदीना, काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, मुनक्का, जीरा, छुहारा सबको मिलाकर चटनी पीस लें। यह चटनी पेट के कई रोगों से बचाव करती है व खाने में भी स्वादिष्ट होती है। भूख न लगने या खाने से अरुचि होने पर भी यह चटनी भूख को खोलती है।
- पुदीने व अदरक का रस थोड़े से शहद में मिलाकर चाटने से खांसी ठीक हो जाती है। वहीं अगर आप लगातार हिचकी आने से परेशान हैं तो पुदीने में चीनी मिलाकर धीरे-धीरे चबाएं। कुछ ही देर में आप हिचकी से निजात पा लेंगे।
- पुदीने की पत्तियों का लेप करने से कई प्रकार के चर्म रोगों को खत्म किया जा सकता है। घाव भरने के लिए भी यह उत्तम है। इसके अलावा गर्मी में इसका लेप चेहरे पर लगाने से त्वचा की गर्मी समाप्त होगी और आप ताजगी का अनुभव करेंगे।
- पुदीने का नियमित रूप से सेवन आपको पीलिया जैसे रोगों से बचाने में सक्षम है। वहीं मूत्र संबंधी रोगों के लिए भी पुदीने का प्रयोग बेहद लाभदायक है। पुदीने के पत्तियों को पीसकर पानी और नींबू के रस के साथ पीने से शरीर की आंतरिक सफाई होगी।

हल्की-हल्की भूख में लें इन तीन सूप का मजा

नाश्ते के बाद और लंच से पहले वाली भूख को हैंडल करने के लिए ज्यादातर लोग चाय, कॉफी या फास्ट फूड और डिब्बाबंद फूड्स का सेवन करते हैं। लेकिन हम यहा आपको चंद मिनट में तैयार होनेवाले उन 3 खास सूप के बारे में बताने जा रहे हैं, जो आपको 'अपनी तो लाइफ सेट है!' जैसा फील देंगे.

वेजिटेबल सूप

- मौसमी सब्जियों के साथ आप मिक्स वेज सूप तैयार कर सकते हैं। इसके लिए आप किसी एक सब्जी को उबालकर उसका सूप बनाएं और शिमला मिर्च, बीन्स, मशरूम, हरी प्याज और आलू को महीन टुकड़ों में काटकर इन्हें अलग उबाल लें।
- पहले से तैयार सूप में इन सब्जियों को मिलाएं और अपने स्वाद के हिसाब से काला नमक, जीरा पाउडर आदि मिलाएं। ध्यान रखें सूप को गाढ़ा करने के लिए कॉर्नफ्लोर मिलाया जाता है। आप इसका उपयोग कर सकते हैं लेकिन अधिक मात्रा में इसे मिलाने से बचें। नहीं तो यह आपके वजन को बढ़ाने की वजह बन सकता है।

चुकंदर का सूप

- चुकंदर का सूप बनाने के लिए आप टमाटर, आलू, प्याज, लहसुन, काली मिर्च का पाउडर और नींबू का रस जैसी चीजों का उपयोग करते हैं। ये सभी बहुत पौष्टिक और सेहत को फिट रखनेवाली चीजें हैं।
- चुकंदर का सूप तैयार करने के लिए एक कुकर में बारीक कटे प्याज और लहसुन भून लें। इसके बाद कटे हुए चुकंदर, आलू और टमाटर डालकर भूनें। इन्हें दो मिनट पकाने के बाद कुकर को बंद कर दें और इसमें धीमी आंच पर 4 सीटी आने दें।
- तैयार मिश्रण को मिक्सी में डालकर पीसें और गाढ़ा लिक्विड तैयार करें। इसे छान लें और काली मिर्च पाउडर तथा नींबू का रस मिलाकर सूप तैयार करें और इसे हरी धनिया पत्तियों के साथ गार्निश करके सूप का लुत्फ उठाएं।

मूंग दाल का शोरबा

- मूंग दाल का शोरबा मात्र 10 मिनट में तैयार हो जाता है। इसके लिए आप बिना छिलके की मूंग दाल को धुलकर कुकर में 3 से 4 सीटी लगा लें। इसे तैयार करते समय आपको पानी की मात्रा सामान्य दाल बनाने से दोगुना रखें और गैस की धीमी आंच पर रखकर ही पकाएं।
- अब इसमें हरी धनिया पत्ती, बारीक कटी हरी मिर्च, बारीक कटा कच्चा प्याज मिलाकर तड़का लगा दें। मसलों के नाम पर इसमें सिर्फ हल्दी पाउडर का उपयोग करें, हल्का काला नमक मिलाएं और काली मिर्च पाउडर मिक्स करके गर्मागर्म शोरबा का लुत्फ उठाएं।

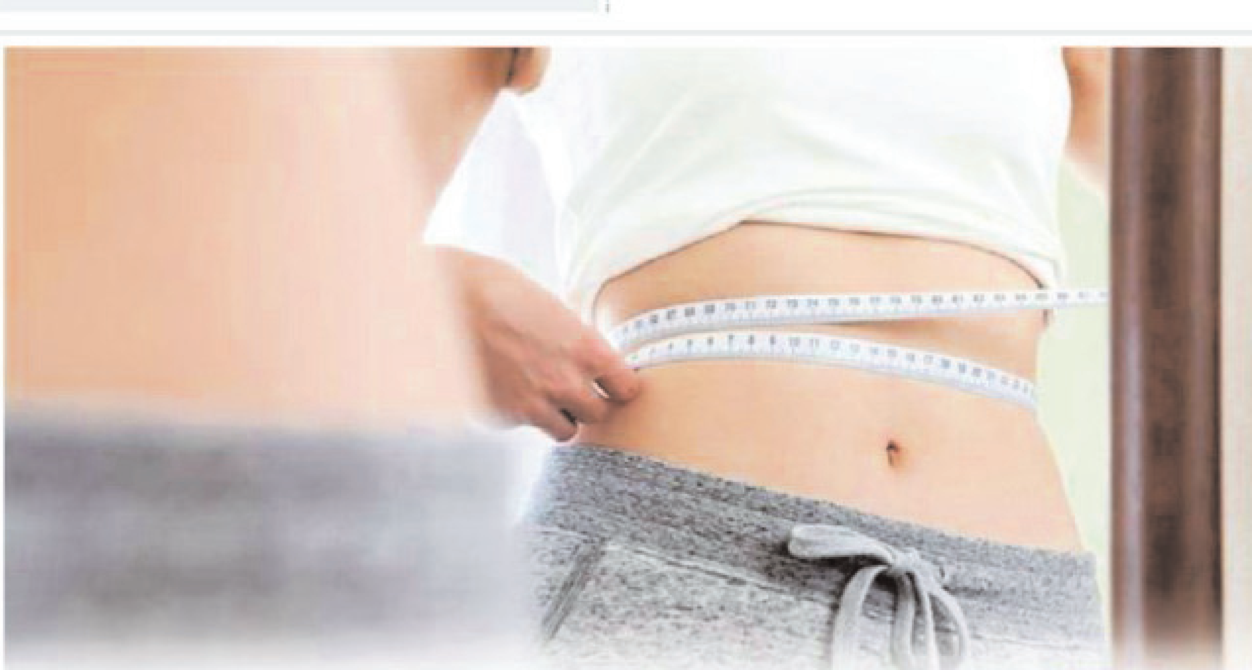

वजन घटाने के लिए लोग न जानें कितनी प्रकार की डायट फॉलो करते हैं। लेकिन अपने आपको भूखा रखकर लंबे समय तक बिना सोचे-समझे किसी भी प्रकार की डायट का पालन करना मुश्किल हो जाता है। वजन घटाना कोई आसान काम नहीं है। शरीर की एक्सट्रा चर्बी को निकालने के लिए नियमित व्यायाम के साथ कैलोरीज भी बर्न करनी पड़ती हैं। इसके लिए आयुर्वेद के पास ऐसे कई तरीके हैं, जिससे शरीर की गंदगी बाहर निकलेगी और आपको वजन कम करने में आसानी होगी। ये तरीके बेहद आसान हैं, लेकिन आपको इन्हें अपनी लाइफस्टाइल का हिस्सा बनाना होगा। आइए जानते हैं क्या हैं वो तरीके जिसे मोटापा घटाने के लिए आयुर्वेद में अहम माना गया है.

खाली पेट इन चीजों का सेवन करने से घटता है मोटापा

गर्म पानी के साथ घी और नींबू

200 मिलीलीटर पानी के साथ थोड़ा सा नींबू या घी का सेवन करने से पेरिस्टलसिस में सुधार होता है, जो कि वेस्ट और खाने की गति को नीचे की ओर ढकेलता है। यदि आपका शरीर वात या पित्त प्रकार का है, तो आप इससे आपका पाचन तंत्र चिकना होगा जिससे कब्ज की समस्या दूर होगी।

डायजेस्टिव चाय

आजकल, बाजार में आयुर्वेदिक चाय की ढेर सारी वैराइटीज उपलब्ध हैं। लेकिन अच्छा होगा कि आप घर पर अपनी चाय खुद ही बना लें। इसके लिए 1 चम्मच जीरा, 1 चम्मच सौंफ, 1 चम्मच धनिया के बीज, 1 इलायची और थोड़ी सी अजवाइन को लेकर 500 मिलीलीटर पानी में तब तक उबालें, जब तक पानी की मात्रा आधी न हो जाए।

मेटाबोलिज्म बढ़ाने के लिए चाय आजमाएं

अपने मेटाबोलिज्म को तेज बनाने के लिए आप दालचीनी, इलायची, लौंग, कद्दूकस की हुई अदरक, काली मिर्च, हल्दी और स्टार ऐनीज को 500 मिली पानी में उबालें। यह पानी आधा हो जाए तब इसमें आधा नींबू और कोकोनट शुगर मिलाएं। चाय शरीर की गर्मी बढ़ाकर चयापचय में सुधार करके वजन कम करने में मदद करेगी।

कच्चे फल

सुबह खाली पेट हर्बल चाय पीने के बाद, कच्चे फलों का सेवन करें जो प्रकृति में थोड़े से कसैले हो सकते हैं। ग्रीन और रेड एपल, क्रैनबेरी, ब्लूबेरी, चेरी, स्ट्रॉबेरी, ब्लैकबेरी, अनानास, आंवला और अनार जैसे फलों को ही चुनें। यह फल शरीर में वॉटर रिटेंशन को कम करते हैं और आपकी त्वचा में कोलेजन को बढ़ाते हैं, जिससे वजन कम करने में मदद मिलती है।

सिलेरी जूस (अजमोद का रस)

तनाव से बचने के लिए आयुर्वेद कच्चे फल और पकी या उबली हुई सब्जियां खाने की सलाह देता है। ऐसी स्मूदी लेने से बचें जिसमें फल, सब्जियां, दूध और दही का मिश्रण शामिल हो। यह शरीर में विषाक्त पदार्थों के संचय का कारण बन सकता है। बल्कि पेट की ब्लोटिंग और अतिरिक्त चबी को कम करने के लिए एक चुटकी सेंधा नमक और नारियल तेल के साथ सिलेरी का जूस लें।

वजन घटाने के पांच बुनियादी नियम भी जानें

- जब आपको भूख लगे तब ही खाएं।
- सूर्यास्त के बाद न खाएं।
- इंटरमिटेंट फास्टिंग करें जिसमें 16 घंटे के तक कुछ भी न खाएं। इससे आपकी ऊर्जा तो बढ़ती है साथ में दिमाग पर कंट्रोल रहता है।
- कच्चे फल खाने के बाद पका हुआ भोजन करें।
- आपका पेट केवल आपकी मुट्ठी के आकार का है। अपनी भूख से 80 प्रतिशत भोजन कम खाएं, ताकि खाना पचाने वाले रस अपना काम आसानी से कर सकें।

जिले में हर्षोल्लास से मनाया जाएगा 76 वां राजस्थान पुलिस दिवस समारोह

पुलिस लाइन में होगा रेंज स्तरीय कार्यक्रम, महानिरीक्षक पुलिस भरतपुर रेंज, भरतपुर राहुल प्रकाश लेगें परेड की सलामी

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। राजस्थान पुलिस का 76वां स्थापना दिवस कल 16 अप्रैल को धौलपुर पुलिस द्वारा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर को खास बनाने के लिए 15 से 17 अप्रैल तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है। इसके साथ ही रेंज स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन पुलिस लाइन धौलपुर में होगा, जहां कल 16 अप्रैल को प्रातः 7.00 बजे महानिरीक्षक पुलिस भरतपुर रेंज, भरतपुर राहुल प्रकाश आईपीएस परेड की सलामी लेंगे और बेहतरीन सेवा देने वाले पुलिसकर्मियों को सम्मानित करेंगे पुलिस अधीक्षक सुमित मेहरडा ने बताया है कि 76 वें राजस्थान पुलिस स्थापना दिवस के कार्यक्रम की शुरुआत 15 अप्रैल से हो गई इसके अन्तर्गत सुबह जिले के सभी थानों, चौकियों, कार्यालयों में स्वच्छता कार्यक्रम के तहत साफ सफाई की गई इसके अलावा नगर परिषद के ऑडोटोरियम में युवा पीढ़ी को जागरूक करने के लिए स्कूली क्विज प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इसके साथ ही पुलिस लाइन में वृक्षारोपण कार्यक्रम में वृक्षारोपण किया जावेगा शाम को पुलिस लाइन में रस्साकशी एवं बालीवाल के खेलों का भी आयोजन किया जाएगा कल 16 अप्रैल को सुबह 7.00 बजे पुलिस लाइन में परेड का आयोजन किया जावेगा, जिसमें महानिरीक्षक पुलिस भरतपुर रेंज, भरतपुर राहुल प्रकाश परेड की सलामी लेगें और उसके पश्चात पुलिस कर्मियों को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विभिन्न सेवा चिन्ह भी करेगें। इसके साथ ही साहसिक कार्य करने वाले चयनित आमजन को भी सम्मानित करेगें इसके साथ ही कल छठी बटालियन आर ए सी में रक्तदान शिविर में पुलिसकर्मी रक्तदान करेगें कल शाम को पुलिस लाइन में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जावेगा एवं पुलिसकार्मिको के मेघावी बच्चे, जिन्होने 10 वीं व 12 वीं में (90 प्रतिशत से अधिक) व खेल-कूद व अन्य गतिविधियों में अच्छा योगदान किया है को सम्मानित किया जावेगा परेड के बाद पुलिस लाइन में पुलिस प्रदर्शनी रखी गई है जिसमें जिला पुलिस के इतिहास का वर्णन, जिला पुलिस द्वारा किये गए अच्छे कार्य- कलाप आदि को दिखाया जावेगा पुलिस अधीक्षक ने बताया है कि राजस्थान पुलिस स्थापना दिवस 2025 के मौके पर धौलपुर जिले में स्वच्छता अभियान, क्विज प्रतियोगिता, ब्लड डोनेशन, पौधारोपण और सांस्कृतिक प्रोग्राम का आयोजन किया जा रहे है। यह कार्यक्रम सिर्फ एक औपचारिकता नहीं, बल्कि पुलिस और समाज के मध्य सेतु को मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम है। इस दौरान भरतपुर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक राहुल प्रकाश मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होगें।

दिल्ली मुम्बई एक्सप्रेस वे टोल नाका पर टोलकर्मियो के साथ मारपीट व टोल पर तोडफोड के 02 आरोपी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

अलवर/ राजगढ(निसं.)। संजीव नैन, आईपीएस, जिला पुलिस अधीक्षक अलवर ने जानकारी देते हुए बताया कि थाना राजगढ पर दिनांक 07.04.2025 को परिवादी ने दर्ज कराया कि दिनांक 06.04.2025 को 10.26 पीएम पर ड्युटी पर थे। मेरे साथ मे मेरे सहकर्मी आशिष शर्मा व दिनेश राजपुत भी थे। उसी समय आरजे 14 टीएफ 7915 (बलेनो) आरजे 02 सीजे 2244 (वरना) गाड़ियां आई जिनसे 5-6 लडके थे। मोनू मीना (खेडा), दीपक मीना (जैतपुर), लोकेश मीना (खेडा), सोनू मीणा (खेडा), जिनको हम पूर्व से जानते है। करीब 10.30 पीएम पर सभी लडके काम करते हुए को रास्ता में रोककर मारपीट की मारपीट मे हम तीनो के चोट आयी व हमारे टोल पे लगे सिस्टम को भी तोड दिया साथ ही हमारे मोबाईल फोन को भी तोड दिया और गालिया दी। और करीबन 2 लाख रू का सामान टूटा है। इत्यादि पर अभियोग पंजीबद्ध कर। डॉ. प्रियंका, आरपीएस, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण अलवर के सुपरविजन व मनीषा मीना, आरपीएस, वृत्ताधिकारी, वृत राजगढ, के निकट मार्गदर्शन में राजेश कुमार पुलिस निरीक्षक थानाधिकारी राजगढ के नेतृत्व में टीम गठन कर साक्ष्य संकलित कर त्वरित कार्यवाही करते हुए। दिल्ली मुम्बई एक्सप्रेस वे टोल नाका पर टोलकर्मियो के साथ मारपीट व तोडफोड वारदात को अंजाम देने वाले 02 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया एवं घटना में प्रयुक्त वाहन कार को जब्त किया गया है। गठित टीमः- राजेश कुमार पु.नि. थानाधिकारी, हीरालाल स.उ.नि., अविनाश कानि. 497, दिनेश कानि. 1993 पुलिस थाना राजगढ जिला अलवर।

राजस्थान पुलिस स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित

पुलिस द्वारा जिला स्तरीय क्विज प्रतियोगिता व वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) राजस्थान पुलिस स्थापना दिवस 2025 के उपलक्ष्य में जिला कोटपूतली-बहरोड़ में पुलिस द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में पुलिस एवं शिक्षा विभाग द्वारा संयुक्त रुप से एक विशेष जिला स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता मंगलवार को पीएम श्री राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विघालय कोटपूतली में आयोजित की गई। जिसमें स्थानीय विधालय के अलावा राजकीय उच्च माध्यमिक विधालय बड़ाबास, राजकीय सरदार उच्च माध्यमिक विधालय कोटपूतली, राजकीय उच्च माध्यमिक विधालय अमाई, राजकीय उच्च माध्यमिक विधालय फतेहपुरा कलां, पीएम श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विधालय बहरोड़, इम्मानुअल मिशन सैकण्डरी स्कूल के विधार्थी उपस्थित रहें। क्विज प्रतियोगिता में बहुविकल्पीय प्रश्नपत्री की गई। जिसमें राजस्थान पुलिस के बारे में सामान्य जानकारी, राजस्थान पुलिस संगठन की संरचना एवं कार्यप्रणाली, नवीन आपराधिक कानून, राजस्थान पुलिस द्वारा संचालित (राजकॉप नागरिक एप की जानकारी), यातायात नियमों की जागरुकता, साईबर अपराध एवं साईबर सुरक्षा सम्बन्धित जानकारी, महिला सुरक्षा से संबधित सामान्य जानकारी। प्रतियोगिता में उत्कृष्ठ प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को पुरूस्कार स्वरुप नकद राशि एवं प्रशस्ति पत्र बुधवार को रिर्जव पुलिस लाईन में प्रदान किये जायेगें। कार्यक्रम का संचालन कन्या गौड़ ने किया। इस मौके पर एएसपी वैभव शर्मा, डीएसपी राजेन्द्र बुरडक, थानाधिकारी राजेश शर्मा, सहायक प्रशासनिक अधिकारी जगदीश सिंह, राकेश कुमार, सोहन लाल यादव, कविता, एवं शिक्षा विभाग से सुमित्रा देवी, निशा देवी, रीमा रैवाल, सरिता, सन्तोष शर्मा, पुष्पा समेत अन्य मौजूद रहे। इस मौके पर जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय, एएसपी कार्यालय, डीएसपी कार्यालय, रिर्जव पुलिस लाईन एवं थानों व चौकीयों में साफ-सफाई कर वृक्षारोपण किया गया।

पवाना अहीर स्कूल निर्माता सेठ भामाशाह परिवार का किया अभिनंदन

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) निकटवर्ती ग्राम पवाना अहीर के स्कूल भवन का निर्माण कराने वाले सेठ भामाशाह परिवार का विद्यालय में स्वागत सम्मान व अभिनंदन किया गया। प्राचार्य महेश चन्द यादव, सरपंच पूरणमल खटीक के नेतृत्व एवं ग्राम सहकारी समिति उपाध्यक्ष प्रकाश यादव व दीपचंद कुमावत व अन्य गणमान्य ग्रामीणों सहित विद्यालय परिवार के समस्त शिक्षकों द्वारा हाल आबाद गांधीधाम कच्छ गुजरात से अपनी जन्म भूमि पवाना अहीर में विद्यालय अवलोकन हेतु आये सेठ भामाशाह परिवार का माल्यार्पण व राजस्थानी पगड़ी पहनाकर स्वागत अभिनंदन किया। प्राचार्य महेश चन्द यादव ने विद्यालय अवलोकन के दौरान विद्यालय प्रगति का प्रतिवेदन प्रस्तुत कर बताया कि विद्यालय प्रत्येक गतिविधियों में अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। प्रवक्ता रामकरण यादव ने बताया कि इस वक्त विद्यालय के सम्पूर्ण भवन का रंग-रोगन व मरम्मत कार्य सेठ भामाशाह परिवार द्वारा कराया जा रहा है जो अब अंतिम चरण में है। 31 मार्च 2025 के वित्तीय वर्ष में 51 लाख रुपये से अधिक का कार्य सेठ भामाशाह परिवार द्वारा कराया गया है। रंग रोगन का कार्य सम्पन्न होने के बाद जल्द ही विद्यालय भवन निर्माण के 50 साल पूर्ण होने के उपलक्ष्य में गोल्डन जुबली कार्यक्रम आयोजित कर भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित करना प्रस्तावित है। गौरतलब है कि गत वर्ष 01 सितंबर को राज्य सरकार द्वारा विद्यालय निर्माता सेठ भामाशाह परिवार को 'शिक्षा भूषण' राज्य स्तरीय सम्मान प्रदान किया गया था। गाँधीधाम कच्छ गुजरात से आये वर्षा विष्णु गोयल, रेखा निरंजन गोयल, पंकज गोपीचंद गोयल, पायल पंकज गोयल, रितेश रविशंकर गोयल, सोनल रितेश गोयल, रूचि निरंजन गोयल, दीया निरंजन गोयल, युग, साची, कनक व मनोज कुमार हरीराम अग्रवाल, एकता मनोज कोटपूतली का प्राचार्य महेश चन्द यादव, उप प्राचार्य कृष्ण कुमार खजोतिया, सरपंच पूरणमल खटीक व विद्यालय परिवार द्वारा आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

चरागाह की चारदीवारी को खुर्दबुर्द करने पर ग्रामीणों में रोष

जयपुर टाइम्स

बिजौलियां(निसं.)। कल्याणपुरा के ग्रामीणों द्वारा थानाधिकारी को शिकायत कर सोनू धाकड़ व वीरेन्द्र धाकड़ निवासी सलावटिया पर चरागाह की चारदीवारी को खुर्दबुर्द कर अवैध खनन करने के लिए रास्ता निकालने का आरोप लगाते हुए कार्रवाई की मांग की गई।शिकायत में बताया कि ग्राम कल्याणपुरा की 100 वर्षों से मवेशियों के चराने की भूमि हैं।जिस पर ग्राम वासियों का कब्जा है। उक्त भूमि पर खनन माफियाओं द्वारा अवैध खनन करने के लिए उक्त चरागाह की चारदिवारी को खुर्द बुर्द कर जबरन रास्ता निकाला जा रहा है और अवैध खनन करने पर आमादा हैं। बड़ी तादाद में मशीनरी द्वारा चरागाह भूमि को नुकसान पहुंचाया जा रहा है । ग्राम वासियों ने चरागह भूमि पर जो चारदिवारी थी उसे यथावत रखने के साथ ही आरोपियों खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कानूनी कार्यवाही करने की मांग की गई।

बाइपास रोड के नजदीक कचरे के ढ़ेर

जयपुर टाइम्स

बिजौलियां(निसं.)। श्मशान घाट के पास बाईपास रोड के नजदीक काफी दिनों से कचरे के ढेर लगे हुए हैं।इनमें ज्यादातर प्लास्टिक का कचरा हैं।जिसे खाने के लिए यहां पर गौवंश का जमावड़ा लगा रहता हैं।कैलाश मेहर ने बताया कि कई दिनों से यहां पर खुले में कचरा डाला जा रहा हैं।इसमें मौजूद प्लास्टिक को खाने से गायों व अन्य मवेशियों को नुकसान होने की सम्भावना हैं।मेहर ने नगरपालिका प्रशासन से कचरे का निस्तारण करवाने की मांग की हैं।

कोटा में भीषण सड़क हादसाः कार-बाइक की टक्कर में एक ही परिवार के 4 लोगों की मौत

जयपुर टाइम्स

कोटा(निसं.)। राजस्थान के कोटा जिले में मंगलवार सुबह हुए दर्दनाक सड़क हादसे में बाइक सवार एक ही परिवार के चार लोगों की मौत हो गई। हादसा सुल्तानपुर क्षेत्र के इटावा-धनावा रोड पर सुबह करीब 7.30 से 8 बजे के बीच हुआ। जानकारी के अनुसार, भोरां गांव निवासी बीरा उर्फ लियाकत (29), उसकी पत्नी सितारा (27), 8 माह का बेटा लइक और साले की बेटी जोया (17) बाइक पर सवार होकर किसी रिश्तेदार की मौत के बाद शोक जताकर लौट रहे थे। नोताडा गांव के पास एक तेज रफ्तार कार ने बाइक को सामने से टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों वाहन सड़क से करीब 5 फीट दूर गड्ढों में जा गिरे। हादसे में बीरा, उसकी पत्नी सितारा और जोया की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 8 महीने के मासूम लइक ने अस्पताल में दम तोड़ा। डीएसपी राजेश ढाका ने बताया कि कार इटावा से सुल्तानपुर की ओर आ रही थी। हादसे की जानकारी मिलते ही एंबुलेंस से सभी को सुल्तानपुर अस्पताल पहुंचाया गया, जहां चारों को मृत घोषित कर दिया गया। बीरा सिमलिया में वेल्डिंग की दुकान पर काम करता था। घटना के बाद परिवार में मातम पसरा है और परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

जोधपुर में भाई-बहन की संदिग्ध मौतः हादसे की आड़ में हत्या की आशंका, करीबी पर साजिश का शक

जयपुर टाइम्स

जोधपुर(निसं.) लूणी थाना क्षेत्र के सर गांव में 18 जुलाई 2022 की सुबह एक दर्दनाक हादसे ने सभी को झकझोर दिया, लेकिन जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ी, यह हादसा एक सोची-समझी हत्या की साजिश नजर आने लगा। 28 वर्षीय रमेश पटेल अपनी 25 वर्षीय मौसेरी बहन कविता को पटवारी की ट्रेनिंग के लिए जोधपुर ले जा रहा था। कविता हाल ही में चयनित हुई थी और 18 जुलाई से उसकी ट्रेनिंग शुरू होनी थी। दोनों बाइक से निकले ही थे कि एक एसयूवी ने पुलिया के पास उनकी बाइक को टक्कर मार दी। बाइक करीब 200 मीटर तक घिसटती चली गई और मौके पर ही दोनों की मौत हो गई। शुरुआत में पुलिस ने इसे महज सड़क हादसा माना, लेकिन परिवार और ग्रामीणों ने हत्या की आशंका जताई। ग्रामीणों का कहना था कि जिस गाड़ी से टक्कर मारी गई, वह कई दिनों से गांव के चक्कर काट रही थी। इसके अलावा रमेश के भाई अशोक ने खुलासा किया कि कुछ दिन पहले भी वही गाड़ी रमेश का पीछा कर चुकी थी। परिजनों ने मॉर्च्युरी के बाहर धरना देकर आरोपियों को पकड़ने की मांग की। पुलिस पर बढ़ते दबाव के बीच मामले की गंभीरता से जांच शुरू हुई। शक है कि किसी करीबी ने ही यह साजिश रची थी। अब यह मामला सड़क हादसे से हटकर सुनियोजित हत्या की दिशा में मुड़ चुका है और पुलिस हत्यारों तक पहुंचने में जुटी है।

नाम परिवर्तन

मैं रिजवान छीम्पा पुत्र रमजान छिम्पा जाति छिम्पा निवासी वार्ड न.02 बिसाऊ तहसील बिसाऊ जिला झुंझुनूं राजस्थान का हूं। मैं अपने दस्तावेजों के अनुसार मेरे पासपोर्ट नं. एम1447739 में मेरा नाम रिजवान छिम्पा [RIJAVAN CHHINPA], मेरे पिता का नाम रमजान छिम्पा [MOHAMMED RAMZAN CHHINPA] से दुरूस्त कर मेरा नाम रिजवान छीम्पा [RIZVAN CHIMPA], पिता का नाम रमजान छिम्पा [RAMJAN CHIMPA] करवाना चाहता हूं।

कार्यालय नगरपालिका मण्डल तारानगर (चूरू) राज.

Office Telephone No. 01561-240245, E-mail- eotrn2009@gmail.com

क्रमांक :/न.पा.ता./2025–26/174–79 दिनांक :– 08.04.2025

ई–निविदा सूचना 03/2025–26

सर्व साधारण एवं पंजीकृत ठेकेदारो/फर्मो की जानकारी हेतु प्रसारित किया जाता है कि तारानगर नगरपालिका क्षेत्र में नगरपालिका तारानगर द्वारा स्वीकृत कार्य ऑनलाईन निविदाऐ आंमत्रित की जाती है। नगरपालिका तारानगर द्वारा नगरपालिका, राज्य व केन्द्र सरकार के सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारो को कार्य हेतु पंजीकृत संवेदको से टेण्डर के माध्यम से दिंनाक 09.04.2025 से दिंनाक 30.04.2025 को निविदा ऑनलाईन आमंत्रित की जायेगी। जिसकी निविदा से सम्बन्धित अन्य विवरण व शर्ते वेबसाईट https://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

UBN No DLB2526A0321
Amount :- 100.03 Lakh

अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका तारानगर

राज.संवाद/सी/25/649

नगर परिषद सुजानगढ (चूरू) राजस्थान

E-mail id:- nps222419@gmail.com Phone no. 01568-222419

क्रमांक :–न.प.सु/विकास शाखा/2025/246 दिनांक :– 07.04.2025

:–ई–निविदा सूचना–2025–26:–

नगर परिषद सुजानगढ़ द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिये उपयुक्त सक्षम श्रेणी के राज्य सरकार के विभागों में प्रजीकृत ठेकेदारों/फर्मों से निविदा दिनांक 21.04.2025 तक आमन्त्रित की जाती है। निविदा प्रपत्रों को वेबसाईट https://eproc.rajasthan.gov.in से डाउनलोड कि जा सकता है एवं निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.sppp.raj.gov.in पर प्राप्त की जा सकती है। निविदा का बीड क्रमांक (DLB2526WSOB01223) है। कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगर परिषद सुजानगढ के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकती है।

राज.संवाद/सी/25/632 आयुक्त, नगर परिषद सुजानगढ

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, खण्ड -सादुलपुर (राजस्थान) 331023

cephedsadulpur@gmail.com ee.phed.sdlp.chu@rajasthan.gov.in

क्रमांक 44-58 दिनांक- 07-04-2025

NOTICE INVITING TENDERS FOR WORKS

Online tenders are hereby invited on behalf of the Hon'ble Governor of Rajasthan for the following works from eligible enlisted Contractor/ Firm as per Rules. Details of this tender notification and pre-qualification criteria can also be seen in NIT exhibited on web site www. dipr. rajasthan. gov.in,http:// sppp.rajasthan.gov.in, and http:// eproc.rajasthan.gov.in. Online Tenders are to be submitted on web site. tender fee shall be submitted through e-GRAS only in respective budget head and bid security as per Annexure. Online Tendar website submitted Last Date & time For submission Up to 16-04-2025 (18.00 hrs)

NIT No.	UBN No.
03/2025-26	PHE2526WSOB00409
04/2025-26	PHE2526WSOB00410
05/2025-26	PHE2526WSOB00411

SAVE WATER-SAVE LIFE

(Narendra Kumar Kachhawaha)
Executive Engineer,
PHED Division Sadulpur
Contact- 82791-01286

DIPR/C/4969/2025

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER PWD DN RATANGARH

No:- 61-70 Date :-04.04.2025

Notice Inviting Bid No 01/2025-26

Bids for 2 (TwoNos) work are invited from interested bidders upto 06.00 PM dated 17.04.2025 other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http:// eproc. rajasthan.gov.in/http://sppp.raj.nic.in) of the state and PWD departmental website. The approximate value of the procurement is Rs. 16.00 Lacs

NIB No PWD2526A0038
UBN NO :-
1. PWD2526WSOB00106
2. PWD2526WSOB00107

DIPR/C/4916/2025

Executive Engineer
PWD Dn. Ratangarh

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड तारानगर

क्रमांक- 24 दिनांक- 04/04/2025

ई-निविदा सूचना सं. 01/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से तारानगर खण्ड के अन्तर्गत सड़क निर्माण कार्य कुल 01 कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी के सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार/ केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेलवे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हों, से निर्धारित प्रपत्र में ई- टेन्डिरिंग प्रक्रिया द्वारा ऑन-लाईन ई-निविदाऐं आमन्त्रित की जाती है। आर. पी. डब्ल्यू. ए. - 100 की शर्त लागू होगी । ई - निविदा से सम्बन्धित विवरण वेबसाईट dipr.rajasthan.gov.in एवं विभागीय वेबसाईट eproc.rajasthan.gov.in तथा sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।
SPPP पर अपलोड NIB No. PWD2526A0048 के UBN No. निम्न प्रकार है-

S.No.	UBN No
1	PWD2526WSOB00121

DIPR/C/4867/2025

(विजय प्रताप कस्वा)
अधिशाषी अभियन्ता,
सा.नि.वि. खण्ड-तारानगर

राजस्थान सरकार

कार्यालय अधिशाषी अभियंता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, खण्ड प्रथम, जयपुर

सी-ब्लॉक, बेसमेन्ट, स्वास्थ्य भवन, तिलक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-302005 (राज.), फोन 0141-2229737

क्रमांक- 29 दिनांक- 4/4/25

निविदा सूचना संख्या 02 /2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अन्तर्गत जयपुर एवं कोटपूतली - बहरोड़ जिले में विभिन्न 6 कार्यों हेतु (अधिकतम लागत रु. 3.48 लाख) हेतु सार्वजनिक निर्माण विभाग / राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के विभागों / अधिकृत संगठनों में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के अनुभवी संवेदकों से निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विवरण डीआईपीआर की वेबसाइट www.dipronline.org, www.sppp.raj.nic.in व विभागीय वेबसाइट http://rajswasthya.nic.in पर देखा जा सकता है।

UBN
NRH2526WSOB 00018 NRH2526WSOB 00019
NRH2526WSOB 00020 NRH2526WSOB 00021
NRH2526WSOB 00022 NRH2526WSOB 00023

DIPR/C/4865/2025

अधिशाषी अभियंता
चि. एवं स्वा. खण्ड प्रथम जयपुर

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, PHED DIVISION CHURU (RAJ.)

Tel. 01562-250343, e-mail - eephedchuru@gmail.com, ee.chu.phed@rajasthan.gov.in

No:- 11-125 Date: 04-04-25

NOTICE INVITING BID

Bids for Nit no 02/2025-26 Work of maintaining power factor and Hiring of power capacitor for various electric connections (Pump House/ Tube Well / Open Wells etc.) under the jurisdiction of PHED Division Churu and Nit no 03/2025-26 Construction & Commissioning of 1 nos 200 mm dia. Tube Well at RWSS Chalkoi Beekan under Churu Bissau Sub Div Churu with 02 Year defect liability period under Tehsil- Churu, District-Churu are invited form interested bidders upto 22-04-2025 (17:00 Hrs) Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal. http://sppp.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in) of the state and phed.raj.nic.in. The approximate value of the procurement is Nit no 02/2025-26 Rs. 20.58 Lacs.and Nit no 03/2025-26 Rs. 07.09 Lacs.

UBN No. PHE 2526WSRC 00248
UBN No. PHE 2526WSOB00251

DIPR/C/4857/2025

Executive Engineer,
PHED Division Churu

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, बुधवार
16 अप्रेल, 2025

माइक्रोसॉफ्ट कस्टमर केयर के नाम पर साइबर ठगी मामले में तीन युवतियों को जेल भेजा

10 युवकों को रिमांड पर भेजा

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। मंडावा कस्बे में एक होटल में साइबर ठगी के कॉल सेंटर चला रहे गिरफ्तार 13 लोगों को झुंझुनूं में कोर्ट में पेश किया। कोर्ट ने तीनों युवतियों को जेल भेज दिया। वहीं 10 युवकों को पुलिस रिमांड पर सौंप दिया गया। मंडावा थानाधिकारी रामनिवास ने बताया कि रिमांड पर आरोपियों पूछताछ की जाएगी। पुलिस सोमवार को मंडावा एक होटल में कॉल सेंटर चला रहे 13 लोगों गिरफ्तार किया था। यह गिरोह 15 दिन से मंडावा अपनी गतिविधि कर रहा था। पुलिस को गुप्त सूचना मिल गई थी। पुलिस पीछले 10 -12 दिन पीछे लगी हुई थी। सूचना पुख्ता होने के बाद सोमवार को होटल में दबिश देकर साइबर ठगी रैकेट का भंडाफोड़ किया था। इस गिरोह की ओर से माइक्रोसॉफ्ट और सोशल मीडिया सहायता के नाम पर लोगों को फंसाकर भारी-भरकम ठगी की जा रही थी। पुलिस जांच में सामने आया कि ये आरोपी मंडावा के एक होटल में पिछले 15 दिनों से

ठहरे हुए थे और वहीं से पूरे साइबर ठगी नेटवर्क का संचालन कर रहे थे। इन्होंने 'माइक्रो सिप' नामक एप के माध्यम से माइक्रोसॉफ्ट और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से जुड़ी तकनीकी समस्याओं का झांसा देकर लोगों को अपने जाल में फंसाया। आरोपी खुद को माइक्रोसॉफ्ट का अधिकृत कस्टमर केयर प्रतिनिधि बताते थे और अपनी लोकेशन अमेरिका के वॉशिंगटन की दिखाते थे। वे पीड़ितों को तकनीकी सहायता देने के बहाने एक विशेष सॉफ्टवेयर डाउनलोड करवाते, जिससे उन्हें पीड़ित के कंप्यूटर का रिमोट एक्सेस मिल जाता। इसके बाद वे सिस्टम को हैंग कर पीड़ितों की निजी जानकारी जैसे बैंक डिटेल्स, पासवर्ड्स आदि चुरा लेते।

मास्टरमाइंड की तलाश जारी

पूछताछ में गिरफ्तार आरोपियों ने गिरोह के दो मास्टरमाइंड–मिक्की और फ्रेडी–के नाम सामने आए है। वे भी मंडावा आए थे। लेकिन यहां कुछ दिन रुके और चले गए। ये दोनों पूरे नेटवर्क का संचालन करते है। दोनों आरोपी उत्तर प्रदेश के निवासी बताए जा रहे हैं। पुलिस अब इन दोनों की तलाश में जुटी है और जल्द ही उन्हें भी गिरफ्तार करने का दावा कर रही है। पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि आरोपी कितने समय से इस क्षेत्र में सक्रिय थे और अब तक कितने लोगों को ठगी का शिकार बना चुके हैं। साइबर विशेषज्ञों की टीम को भी जांच में शामिल किया गया है ताकि सभी इलेक्ट्रॉनिक डिवाइसेज़ की गहराई से जांच की जा सके और अन्य पीड़ितों तक भी पहुंचा जा सके।

अमेरिकी नागरिकों को बनाया निशाना

पुलिस के अनुसार, इस गिरोह का मुख्य निशाना अमेरिकी नागरिक थे। ऐसे लोग जो तकनीकी जानकारी में कमजोर होते हैं या जिन्हें लैपटॉप/कंप्यूटर संचालन में दिक्कत आती है। माइक्रोसॉफ्ट कस्टमर सपोर्ट के नाम पर ये लोग सोशल मीडिया या गूगल के जरिये इस गिरोह से संपर्क करते थे। एक बार संपर्क स्थापित होने के बाद यह गिरोह पीड़ितों को धीरे-धीरे अपने शिकंजे में ले लेता था।

हाई-टेक तरीके से देते थे धोखा

आरोपी जिस एप का इस्तेमाल करते थे, वह तकनीकी रूप से काफी उन्नत था। इससे वे न केवल कंप्यूटर का नियंत्रण हासिल कर लेते थे बल्कि पीड़ित की गतिविधियों पर नजर भी रखते थे। कई मामलों में तो इन्होंने पीड़ितों के सिस्टम में वायरस डालकर उन्हें और अधिक परेशानी में डाल दिया ताकि वे जल्दी से जल्दी "सहायता" के नाम पर पैसे देने को तैयार हो जाएं।

होटल से संचालित हो रहा था पूरा नेटवर्क

यह गिरोह मंडावा के एक होटल में रहकर अपना ऑपरेशन चला रहा था। होटल से ही सारे कंप्यूटर, फोन कॉल्स और एप के जरिए पीड़ितों से संपर्क किया जाता था। पुलिस ने होटल से कई लैपटॉप, मोबाइल फोन, सिम कार्ड, नकदी और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जब्त किए हैं। यह भी जांच की जा रही है कि होटल संचालक को इस नेटवर्क के बारे में जानकारी थी या नहीं।

पारीक बने विप्र फाउंडेशन के जिला संरक्षक

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। विप्र फाउंडेशन जिलाध्यक्ष कमलकांत शर्मा ने जिले की विप्र फाउंडेशन की कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए डॉ. राधारमण शर्मा को तहसील अध्यक्ष पद पर मनोनित किया। उन्होने जिला बाहम्ण महासभा के जिला अध्यक्ष अरविंद पारीक को कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए विप्र फाउंडेशन के संरक्षक के पद पर मनोनित कर सभी पदाधिकारियो को नियुक्ति पत्र दिया। इस अवसर पर बाहमण महासभा मंडावा अध्यक्ष द्वराम शर्मा की अध्यक्षता में डॉ. निवास पर जिला पदाधिकारियो ने बैठक आयोजित करते हुए गोविंद जोशी को जिलामंत्री, किशोर थलिया को संगठन महामंत्री मंडावा तहसील नियुक्त करते हुए माल्यापर्ण कर स्वागत किया। जिलाध्यक्ष कमलकांत शर्मा ने नव गठित सदस्यो को तहसील स्तर की शीघ्र कार्यकारिणी बनाने की बात कही। इस अवसर पर समाज उत्थान को लेकर चर्चा करते हुए उमाशंकर महमिया ने कहा कि हमे एकजुटता के साथ संगठनात्मक रूप से कार्य करना आवश्यक है। इस अवसर पर जिला संगठन महामंत्री रामगोपाल महमिया, जिला महामंत्री रमाकांत पारीक, मनोज नरेड़ा, संदीप शर्मा, निराश्रित गौशाला अध्यक्ष रविंद्र शर्मा, विष्णुदत्त जोशी, सजन लाल दिनवा वाले, बाबुलाल शर्मा, प्रभुदयाल शर्मा, विष्णु नरेड़ा सहित समाज के प्रबुद्व लोग उपस्थित रहे।

नई ग्राम पंचायत में शामिल करने का विरोध, बाला का बास के ग्रामीणों ने कलेक्ट्रेट पर किया प्रदर्शन

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। मण्डावा क्षेत्र की बिसाऊ तहसील के बालाकाबास गांव के लोगों ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट पर विरोध प्रदर्शन किया। गांव के लोग नवसृजित ग्राम पंचायत कमालसर में अपना गांव शामिल नहीं कराना चाहते। गांव वालों ने बिरमी ग्राम पंचायत के सरपंच के नेतृत्व में प्रदर्शन किया। ग्रामीणों ने बताया कि पहले हमारा गांव (बालाकाबास) बिरमी ग्राम पंचायत में शामिल था। परिसीमन (पुनर्गठन) के तहत अब हमें कमालसर ग्राम पंचायत में जोड़ दिया गया है। यह फैसला हमारे हितों के खिलाफ है। हम इसे किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं करेंगे। गांव वालों ने कहा कि बिरमी ग्राम पंचायत हमारे गांव से मात्र 2 किलोमीटर दूर है। जबकि कमालसर की दूरी लगभग 6 किलोमीटर है। कमालसर तक जाने के लिए न तो पक्की सड़क है और न ही कोई सार्वजनिक परिवहन सुविधा। बिरमी से जिला कार्यालय और तहसील कार्यालय बिसाऊ के लिए सीधा रास्ता है। ऐसे में ग्रामीणों को सरकारी कार्यों में सुविधा होती है। प्रदर्शनकारियों ने प्रशासन से मांग की कि बालाकाबास गांव को कमालसर में शामिल करने के बजाय बालाकाबास, नया बास पुरिया और कबीरसर जैसे नजदीकी गांवों को मिलाकर एक नई ग्राम पंचायत बना दिया जाए। ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि मांगों पर जल्द विचार नहीं किया गया तो आंदोलन को और उग्र करेंगे।

कोटा में चाय पीने गए स्टूडेंट की हार्टअटैक से मौत

जयपुर टाइम्स

कोटा (निस)। कोटा में 21 साल के स्टूडेंट को चाय की थड़ी पर बैठे-बैठे हार्ट अटैक आ गया और वह नीचे गिर गया। उसे तुरंत पास ही खड़ी एम्बुलेंस में अस्पताल ले जाया गया, लेकिन बचाया नहीं जा सका। मामला कोटा के कुन्हाड़ी थाना इलाके का मंगलवार सुबह 8 बजे का है। थाना अनिल कुमार ने बताया- स्टूडेंट देवकरण (21) पाली जिले के जैतपुर थाना इलाके के गढ़वाड़ा का रहने वाला था। जानकारी में आया है कि उसे हार्ट अटैक आया था। देवकरण नवंबर, 2024 में पाली से कोटा आया था। वह सेल्फ स्टडी करके नीट की तैयारी कर रहा था। वह रोज लाइब्रेरी में पढ़ने जाता था। आज भी वह लाइब्रेरी में पढ़ने गया। सुबह 7.15 बजे लाइब्रेरी पहुंचा। 7 बजकर 58 मिनट पर लाइब्रेरी से वापस निकला था। अनिल कुमार ने बताया- वह लाइब्रेरी के पास ही स्थित चाय की थड़ी पर पहुंचा। उसने थड़ी पर बैठी महिला से चाय बनाने के लिए कहा और खुद पट्टी पर बैठ गया। महिला दुकानदार चाय बनाने लग गई। इस दौरान देवकरण बेहोश होकर पट्टी से नीचे गिर गया और बेसुध हो गया। वहां पास में ही डिस्पेंसरी पर 108 एम्बुलेंस खड़ी हुई थी। लोगों ने एम्बुलेंस से उसे एमबीएस हॉस्पिटल पहुंचाया। जहां ड्यूटी डॉक्टर ने चेक कर उसे मृत घोषित कर दिया। इसके बाद स्टूडेंट के परिजनों को सूचना दी गई। डॉक्टरों के अनुसार, प्रथमदृष्टया हार्ट अटैक लग रहा है। जानकारी में आया कि देवकरण के दिल में छेद था। डेढ़ साल पहले उसका ऑपरेशन हुआ था। वह अभी भी दवाइयां ले रहा था। मौत के सटीक कारणों का पता पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से चलेगा।

150 टन अवैध बजरी स्टॉक जब्त, पुलिस बोली-मौके पर कोई नहीं मिला

जयपुर टाइम्स

(निस)। सलूंबर जिले की सराड़ा थाना पुलिस और जयसमंद चोकी की टीम ने अवैध खनन के खिलाफ मुडियावेला कतोंड़ा गांव में 150 टन अवैध बजरी के स्टॉक को जब्त किया है। सराड़ा थानाधिकारी हेमंत अहारी ने बताया कि पुलिस चौकी जयसमंद और थाना स्तर पर टीम का गठन किया। गठित टीम द्वारा मुखबिर के सहयोग से बजरी के अवैध स्टॉक को जब्त किया गया। मौके पर टीम कार्रवाई करने पहुंची तो स्टॉक करने वालों को भनक लग गई और वे मौके से फरार हो गए। पुलिस ने बताया कि विभागीय जानकारी करने पर पता लगा कि खसरा नंबर 789 गांव कतोंड़ा में खान विभाग ने बजरी स्टॉक की कोई अनुमति नहीं दी हुई है। मौके पर 150 टन बजरी पड़ी थी।

पेयजल की किल्लत से आमजन परेशान, भाजपा ने दी चेतावनी

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ(निस)। लक्ष्मणगढ़ भाजपाइयों ने बढ़ती गर्मी और शहर में पेयजल की किल्लत के चलते आम जन की परेशानियों को देखते हुए मंगलवार को लक्ष्मणगढ़ जलदाय विभाग के अधिकारियों से मुलाकात की और पेयजल की किल्लत के स्थाई समाधान करने के मांग की। विभाग के अधिशासी अभियंता राकेश कुमार ने बताया कि नहर बनने के कारण पानी कम मिल रहा था जिसकी वजह से शहर के कुछ वार्डो में पेयजल आपूर्ति की समस्या पैदा हुई है जिसके समाधान के लिए सहायक अभियंता को निर्देशित कर दिया गया है। शहर में नौ नए नलकूप का निर्माण कार्य जारी है जैसे ही नलकूप चालू हो जाएंगे तो समस्या का समाधान हो जाएगा। वही भाजपा पार्षद विष्णु खांडल ने बताया कि लक्ष्मणगढ़ में पेयजल की समस्या पिछले काफी समय से हो रही है और आम नागरिकों की ओर से भी कई बार सूचना दी जा चुकी है कि पानी की बहुत दिक्कत हो रही है और आम जन की उक्त समस्या के बारे में विभाग को भी सूचित किया जा चुका है किंतु विभाग की ओर से कोई ध्यान नहीं देने पर आज जनता को साथ ले कर के वार्ता की गई और समस्या से अवगत कराया गया है। विभाग की ओर से आश्वाशन दिया गया है कि आगामी 7 दिवस तक पेयजल की समस्या का समाधान कर दिया जाएगा। पार्षद खांडल ने चेतावनी देते हुए कहा कि अगर उक्त समस्या का 7 दिवस में कोई समाधान नहीं किया जाता है तो बड़ा आंदोलन किया जाएगा। वही भाजपा नेता आलोक पाराशर ने बताया कि पेयजल की समस्या को लेकर जलदाय विभाग के अधिकारियों से चर्चा कि गई है और अधिकारियों ने विश्वास दिलाया है कि जल्द ही उक्त समस्या का समाधान कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि अगर जरूरत पड़ी तो उक्त समस्या के संबंध में हमारे जनप्रतिनिधियों तक भी यह बात पहुंचाई जाएगी। अधिकारियों से वार्ता के दौरान जलदाय विभाग के अधिशासी अभियंता राकेश कुमार, अभियंता मनीष मील,भाजपा नेता आलोक पाराशर, पार्षद विष्णु खांडल, प्रकाश पासोरिया, पार्षद प्रतिनिधि विनोद गढ़वाल, सोशल मीडिया प्रभारी कमल सुरोलिया, राजेश बेदी सहित शहर के मौजीज लोग मौजूद रहे।

ग्राम पंचायत को यथावत रखने मांग, सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। पंचायती राज विभाग की ओर से ग्राम पंचायतों के परिसीमन व पुर्नगठन के तहत राजस्व ग्राम अलखपुरा गोदारान को ग्राम पंचायत कुमास जाटान से हटाकर नवसृजित ग्राम पंचायत बासनी में शामिल करना प्रस्तावित है। जिसको लेकर ग्रामीणों ने वर्तमान ग्राम पंचायत कुमास जाटान सरपंच प्रतिनिधि घीसाराम गोदारा व रतनलाल गोदारा के नेतृत्व में उपखंड कार्यालय के सामने विरोध प्रदर्शन कर उपखंड अधिकारी को ज्ञापन सौंपा। गोदारा ने बताया कि राजस्व ग्राम अलखपुरा गोदारान को राजनैतिक दबाव के चलते ग्रामीणों के हितों को नजर अंदाज करके नवसृजित ग्राम पंचायत बासनी ने जोड़ने का प्रस्ताव दिया गया है जो अलखपुरा की जनता की भावना, सुख- सुविधा और भौगोलिक व प्रशासनिक दृष्टिकोण के अनुरूप सही नहीं है ।इसको बिल्कुल भी बर्दास्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने बताया कि अलखपुरा गोदारान से नवसृजित पंचायत मुख्यालय बासनी जाने के लिए कोई सीधा रास्ता नहीं है। बासनी जाने के लिए अन्य ग्राम पंचायत रीनू व बैरास गांव पार करके जाना पड़ता जिसकी दूरी 10 किमी पड़ती है, दूसरा रास्ता लक्ष्मणगढ़ नवलगढ़ बायपास से बंजारा बस्ती से होकर जाना पड़ता है जिसकी दूरी भी 10 किमी पड़ती है। ग्रामीणों को कोई सीधा आवागमन का रास्ता नहीं है जिससे ग्रामीणों को अधिक आर्थिक भार के साथ साथ समय की परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। जबकि ग्राम पंचायत कुमास से अलखपुरा के बीच की सीधा पक्की सड़क से जुड़े हुए मात्र 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थिति है जो ग्रामीणों के लिए हर प्रकार से सुविधाजनक है। ग्रामीणों ने उपखंड अधिकारी व जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर बताया कि राजस्व ग्राम अलखपुरा गोदारान पंचायत मुख्यालय के लिए प्रशासनिक व भौगोलिक परिस्थिति को पूर्ण करता है उसके अनुरूप अलखपुरा गोदारान को कुमास जाटान पंचायत में यथावत रखे अन्यथा पंचायत मुख्यालय बनाया जाए। यदि प्रशासन व सरकार की ओर से उक्त मागे नहीं मानी गई तो ग्रामीणों वासियों की ओर से आगामी सभी चुनावों का बहिष्कार कर अनिश्चित कालीन धरना प्रदर्शन किया जाएगा ।इस मौके पर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव दिनेश कस्वां, गिरधारी मास्टर, मूलचंद कस्वां कुमास जाटान पाबू सिंह, रामनिवास नायक छीछास मोहनलाल नेहरा, श्रवण तंवर, पंकज चारण सहित ग्रामीण मौजूद रहे।

डॉ0 अम्बेड़कर के सिद्वांत आत्मनिर्भर भारत को गति देंगे: अहलावत

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। भाजपा प्रदेश महामंत्री व पूर्व सांसद सन्तोष अहलावत ने कहा कि डॉ0 अम्बेड़कर के सिद्धांत और विचार आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण को गति देंगे। उनकी प्रेरणा के कारण ही देश सामाजिक न्याय के सपने को साकार करने के लिए समर्पित है। वे मंगलवार को फतेहपुर बस स्टैण्ड के निकट होटल सिंघासन में भाजपा नगर मण्डल मण्डावा की ओर से संविधान निर्माता भारत रत्न डॉ0 अबेड़कर सम्मान अभियान के तहत आयोजित विचार गोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में बोल रही थी। उन्होंने कहा कि विभिन्न क्षेत्रों में आंबेडकर का योगदान आने वाली पीढ़ियों को राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पण के साथ काम करने के लिए प्रेरित करता रहेगा। अहलावत ने कहा कि बाबा साहेब ने अत्यधिक चुनौतियों का सामना करने के बाद भी एक अलग पहचान बनाई। उन्होंने अपनी असाधारण उपलब्धियों से दुनिया में सम्मान पाया। भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्यारेलाल ढूकिया ने कहा कि डॉ. भीमराव शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और दलितों के सशक्तीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण साधन मानते थे। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब विलक्षण योग्यता और बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी थे। वह एक अर्थशास्त्री, शिक्षाविद्, कानूनविद और महान समाज सुधारक थे। वे समतावादी समाज के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने महिलाओं और वंचित वर्गों के आर्थिक और सामाजिक अधिकारों के लिए आजीवन संघर्ष किया। कार्यक्रम में भाजपा सीकर जिला प्रभारी दिनेश धाभाई, अरूणा सिंहाग, महेन्द्र चन्दवा आदि मंचासीन अतिथि रहे। विचार गोष्ठी की अध्यक्षता मण्डल अध्यक्ष मोहनलाल सैनी ने की। इस अवसर पर भाजपा मीडिया प्रभारी संदीप शर्मा, सुनील सैनी, अशोक मोगा, सत्यनारायण शर्मा, गोविन्द जोशी, पार्षद संदीप परिहार, ओम शर्मा, संजय परिहार, प्यारेलाल फरडोलिया, बाबूलाल सैनी, एचपी नेमीवाल, तनसुखराम जोशी, नरेन्द्र मोगा, ज्ञानचन्द कुमावत, राजेन्द्र सिंह पंवार, पूर्व पार्षद महेश पंवार सहित अनेक भाजपाई मौजूद रहे।

तीसरी आंख में हो गई घटना कैद

झुंझुनूं रोडवेज बस डिपो से महिला का पर्स चोरी करने वाला नवलगढ़ इलाके से दबोचा

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं रोडवेज बस डिपो पर महिला का पर्स चुराने वाला आरोपी चोर पकड़ा गया। कोतवाली थाना पुलिस ने आरोपी को नवलगढ़ एरिया से पकड़ा। चोर ने रोडवेज बस में चढ़ते समय एक महिला का पर्स चोरी कर लिया था। कोतवाली थाना इंचार्ज हरजिंदर सिंह ने बताया कि 13 अप्रैल को चैनपुरा निवासी शुभकरण जाट ने कोतवाली थाने में एक रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। रिपोर्ट में शुभकरण ने बताया कि मैं 11 अप्रैल को पत्नी चंद्राबली के साथ अस्पताल से इलाज करवाकर रोडवेज बस डिपो पहुंचा था। मेरी पत्नी बस में चढ़ रही थी, तभी किसी व्यक्ति ने भीड़ का फायदा उठाकर उसका पर्स चुरा लिया।

बस में बैठने के बाद चोरी का एहसास

चंद्राबली को अपने पर्स की चोरी का पता तब चला, जब वह बस में बैठ गईं। उसके पर्स में 20 हजार रुपए कैश और एक सोने की अंगूठी थी। इस घटना के बाद पीड़ित परिवार ने तुरंत कोतवाली थाने में मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज को खंगाला। बस डिपो पर मौजूद संदिग्ध लोगों से पूछताछ की। जांच में नवलगढ़ निवासी अल्ताफ की

भूमिका संदिग्ध पाई गई। पुलिस टीम ने अल्ताफ को हिरासत में लेकर पूछताछ की। आरोपी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया। आरोपी ने पुलिस को बताया कि मैं पहले से ही बस डिपो पर मौजूद था। बस में चढ़ते समय भीड़ का फायदा उठाकर महिला का पर्स चुरा लिया। थानाधिकारी हरजिंद्र सिंह ने बताया कि आरोपी के खिलाफ पहले भी चोरी के मामले दर्ज होने की जांच की जा रही है। पुलिस अब इस बात का पता लगाने में जुटी है कि आरोपी किसी गिरोह का सदस्य है या अकेले ही वारदातों को अंजाम देता है।

फाइनेंस कंपनी में लूट का मुख्य इनामी आरोपी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। कोतवाली थाना पुलिस ने फाइनेंस कंपनी में हुई लूट की वारदात के चौथे आरोपी मंथन शर्मा को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी पर 20 हजार रुपये का इनाम घोषित था और वह फरारी के दौरान झुंझुनूं रोडवेज बस डिपो से पकड़ा गया। पुलिस को सूचना मिली थी कि मंथन शर्मा झुंझुनूं रोडवेज बस डिपो में किसी बस से भागने की फिराक में है, जिसके बाद कोतवाली थाना प्रभारी हरजिन्द्र सिंह के

नेतृत्व में टीम ने मौके पर पहुंचकर उसे दस्तयाब किया और बापर्दा गिरफ्तार किया। गौरतलब है कि 25 मार्च को जिला मुख्यालय स्थित एक फाइनेंस कंपनी के कार्यालय में सुबह करीब 9 बजे लूट की वारदात को अंजाम दिया गया था। इस वारदात में तीन युवक पिस्टल लेकर ऑफिस में घुसे थे। उस समय कंपनी में कार्यरत कर्मचारी अमित भार्गव, निवासी वार्ड नंबर तीन, सूरजगढ़, मौजूद था। आरोपियों ने पिस्टल दिखाकर उससे सेफ रूम की चाबी मांगी, लेकिन चाबी नहीं देने पर बदमाशों ने उसके गले से चांदी की चेन छीन ली। इसके बाद आरोपियों ने उसका मोबाइल बंद करवाया और उसे कमरे में बंद कर दिया। कमरे में बंद करने के बाद आरोपी सेफ रूम की चाबी ढूंढने लगे लेकिन चाबी नहीं मिलने पर वे कंपनी के ब्रांच क्रेडिट मैनेजर की बाहर खड़ी मोटरसाइकिल लेकर फरार हो गए। घटना के बाद पुलिस ने जांच शुरू की और पहले ही तीन आरोपियों अमरजीत सिंह उर्फ बब्बू रायसिख, मोहम्मद अली और अनिल कुमार बिश्नोई को गिरफ्तार कर चुकी थी। अब चौथे आरोपी मंथन शर्मा की गिरफ्तारी से पुलिस को मामले की कड़ी को जोड़ने में मदद मिली है। पुलिस के अनुसार मंथन पहले इसी फाइनेंस कंपनी में कर्मचारी रह चुका है और उसे ऑफिस की कार्यप्रणाली व सुरक्षा व्यवस्था की पूरी जानकारी थी, जिसका फायदा उठाकर उसने अपने साथियों के साथ मिलकर इस वारदात को अंजाम दिया। कोतवाली थाना प्रभारी हरजिन्द्र सिंह ने बताया कि मंथन शर्मा के खिलाफ लूट के इस मामले में मुकदमा दर्ज था और उस पर इनाम घोषित किया गया था। पुलिस की टीम लगातार उसकी तलाश में लगी हुई थी और आखिरकार उसे झुंझुनूं बस डिपो से पकड़ लिया गया।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, बुधवार
16 अप्रेल, 2025

न्याय मंत्री को ज्ञापन सौंपकर की न्याय दिलाने की मांग

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। अंबेड़कर सेवा समिति सुजानगढ के सचिव धर्म सिंह मीणा और अध्यक्ष सुरजाराम डाबरिया के नेतृत्व में केन्द्रीय विधि व न्याय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल को ज्ञापन सौपकर शिक्षा विभाग में प्राचार्य पद की डीपीसी वर्ष 2023-24 की रिव्यू डीपीसी तत्काल कर वंचित 541 उप प्राचार्य को प्राचार्य के पद पर पदस्थापन की मांग की गई है। जिस पर मंत्री मेघवाल ने शिक्षा विभाग के संयुक्त शिक्षा सचिव मनीष गोयल को फोन कर तत्काल डीपीसी की कार्यवाही करने को कहा, जिस पर संयुक्त शिक्षा सचिव ने प्रक्रिया को जल्द पूर्ण करवाने की बात कही। सचिव धर्म सिंह मीणा ने बताया कि शिक्षा विभाग की ओर से 17 जनवरी 2025 को उप प्राचार्य से प्राचार्य की डीपीसी वर्ष 2023-24 सम्पन्न की गई जिसमें एससी/एसटी के पात्र 541 उप प्राचार्यों को डीपीसी से वंचित कर उनसे कनिष्ठ सामान्य वर्ग के उप प्राचार्यों को प्राचार्य के पद पर पदस्थापन कर दिया गया। जिसके लिए वंचित 541 पात्र उप प्राचार्य डीपीसी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। अब इन्हें रिव्यू डीपीसी 2023-24 में शामिल कर डीपीसी की प्रक्रिया चल रही है। उसी मांग को लेकर आज न्याय मंत्री महोदय को ज्ञापन देकर न्याय की मांग की गई। ज्ञापन देने वक्त दीपाराम सांडेला, पुष्पेन्द्र भाटी, हरीकेश बाकोलिया सहित समिति के अनेक सदस्य मौजूद रहे।

छापर में लगेगा रक्तदान शिविर

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। शहर के निकटवर्ती कस्बे छापर वार्ड नंबर 7 में स्थित अणुव्रत बाल भारती स्कूल में समाजसेवी रमेश कुमार रूहिल की चौथी पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। राजस्थान कालेज के पूर्व उपाध्यक्ष शिवप्रसाद जाट ने बताया कि रक्तदान शिविर का आयोजन इसी शुक्रवार को सुबह 8 बजे से 5 बजे तक होगा। रक्तदान शिविर को सफल बनाने के लिए शहर के युवा तन मन से तैयारियां कर रहे हैं। शिविर में रक्त संग्रहण के लिए ब्लड बैंक सुजानगढ़ और दुर्लभजी ब्लड बैंक जयपुर की टीमें सेवाएं देंगी।

केंद्रीय मंत्री का किया स्वागत

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल का गांधी आश्रम में अहिंसा विकास मंच के सुभाष बैदी के नेतृत्व में स्वागत किया गया। इस अवसर पर सुभाष बैदी ने केंद्रीय मंत्री को ज्ञापन सौंपकर रतनगढ़ के पड़िहारा में बनी हवाई पट्टी को रनवे स्टेशन के रूप में विकसित करने की मांग की। इस दौरान तिलोकचंद मेघवाल, श्रीराम तरड़, इशिका बेदी, मांगीलाल जांगिड़, देवेंद्र बैदी सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

हादसे में एक की मौत, 10 घायल

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। लोढ़सर से धां गांव के बीच अनूपगढ़ जयपुर बस जो, सुजानगढ़ आ रही थी की कार से टक्कर हो गई। इस हादसे में एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई। मौके पर पुलिस प्रशासन पहुंचा। वहीं टीम हारे का सहारा के संयोजक श्याम स्वर्णकार, एम्बूलेंस चालक नवरत्न बिजारणिया, एम्बुलेंस चालक भागीरथ, दामोदर शर्मा लोढ़सर, दीपक शर्मा, बनवारी कुलहरि आदि ने 108 और अन्य वाहनों की सहायता से घायलों को सालासर व सुजानगढ़ अस्पताल पहुंचाया। घायलों में रामलाल अग्रवाल, रायसीनगर, गिरधारी लाल अग्रवाल- रामसिंह पुर, राहुल बिश्नोई- बीकानेर, नीरज शर्मा, बीकानेर, मरवा (5), आस्मीन, निवासी सुजानगढ़, हिम्मत सिंह-निवासी झुंझुनू, रामावतार निवासी छापर के नाम शामिल हैं। जिनको प्राथमिक उपचार के बाद छूट्टी दे दी गई। वहीं मृतक कार चालक महेश जाट (28), निवासी भूकरों की ढाणी, अडकसर, तहसील कुचामन का शव सुजानगढ़ सदर पुलिस ने परिजनों की रिपोर्ट पर पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सुपुर्द कर दिया। जानकारी के मुताबिक मृतक महेश का विवाह करीब 10 माह पूर्व ही हुआ था और 4 भाइयों मे सबसे छोटा था। दो तीन घायलों का उपचार सालासर में भी हुआ।

पंचायत समिति बनाने की मांग को लेकर धरना आज

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। राजलदेसर को पंचायत समिति बनाने की मांग को लेकर अखिल भारतीय किसान की ओर से सुबह नो बजे से राजकीय महाविद्यालय से तहसील कार्यालय तक रैली निकालकर अनिश्चितकालीन धरना शुरू किया जाएगा। कामरेड भादर भाम्भू ने बताया राजलदेसर में तहसील कार्यालय, जोधपुर डिस्कॉम का एईएन आफिस, जलदाय विभाग का एईएन आफिस, पुलिस थाना सहित उच्च माध्यमिक स्तर के विधालय, राजकीय महाविद्यालय है रेल बस मार्ग अन्य राज्यों की सीमा से जुड़ा है। जो पंचायत समिति बनाने की हर पैमाने से पुर्ण होने के बाद भी नवगठित पंचायत समिति में ना तो पंचायत समिति का दर्जा मिला न ही सरकारी कृषी मण्डी की घोषणा हुई। जिसको लेकर अनिश्चितकालीन धरना दिया जाएगा।

आवारा कुत्तों का मवेशियों पर हमला

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। कस्बे में बिती रात आवारा कुत्तों ने मवेशियों पर हमला बोल दिया। आवारा कुत्तों ने एक गोवंश सहित 15 मवेशियों पर हमला किया जिसमें 10 मवेशियों की मौत और पांच घायल हो गए। मोहल्लेवासियों ने बताया काफी समय से आवारा कुत्तों के आतंक से काफी परेशान हैं। बीती रात वार्ड सं 28 में जब्बार व्यापारी के बाड़े में आवारा कुत्ते घुस गए। जिसमे 15 मवेशियों को शिकार बनाया जिसमें दस की मौत है गई तथा घायलों का उपचार किया जा रहा है। जिसको लेकर नागर पालिका के वार्ड सं 28 के सदस्य रजिया बानो ने अधिशाषी अधिकारी सहित प्रशासनिक अधिकारीयो को पत्र लिखकर आवारा कुत्तों के आंतक से मुक्त करवाने को लिखा।

जल रहेगा तभी हमारा कल रहेगा: विकास शर्मा

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर में नई पेयजल वितरण प्रणाली का कार्य राजस्थान नगरीय आधारभूत विकास परियोजना आरयूआईडीपी के तहत किया जा रहा है। इस परियोजना के सामुदायिक जागरूकता व जन सहभागिता कार्यक्रम के अंतर्गत, शहर के रविन्द्र नाथ टैगोर शिक्षण संस्थान बुकलसर बास में एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को सरकार की ओर से चलाई जा रही लाभकारी जल वितरण योजनाओं के प्रति जागरूक करना था। इस अवसर पर राजस्थान नगरीय आधारभूत विकास परियोजना के अधिशाषी अभियंता मनोज कुमार मित्तल एवं सहायक अभियंता दिनेश कुमार के मार्गदर्शन में कार्यक्रम का संचालन किया गया। सामाजिक विकास अधिकारी विकास शर्मा ने जल संरक्षण के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि जल है तो कल है और हमें जल संरक्षण को अपनी आदत में शामिल करना चाहिए। उन्होंने बताया कि पानी के बिना जीवन की कल्पना असंभव है और जल का सदुपयोग ही आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ जल की उपलब्धता सुनिश्चित कर सकता है और बताया की इस योजना के तहत सरदारशहर में जल आपूर्ति मीटरयुक्त और पर्याप्त मात्रा में की जाएगी। जल संकट को देखते हुए जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता घट रही है और जल संसाधनों की गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है। यदि हमने अभी जल का संरक्षण नहीं किया तो भविष्य में स्वच्छ जल की उपलब्धता एक गंभीर समस्या बन जाएगी। छात्रों को महत्वपूर्ण सुझाव देते हुए बताया की फर्श को पाइप से धोने के बजाय पोछे से साफ करें, शेविंग करते समय नल को खुला न छोड़ें, बल्कि मग में इस पानी लेकर सेव करें। छोटे-छोटे बदलावों से हम बड़ी मात्रा में पानी बचा सकते हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्य सुरेश सहारण ने जल संरक्षण की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि बच्चों को जल के प्रति जागरूक करने से उनमें जल संरक्षण की भावना विकसित होगी। जो भविष्य में लाभकारी सिद्ध होगी। उन्होंने आरयूआईडीपी की ओर से आयोजित इस तरह के कार्यक्रमों को सराहा और उम्मीद जताई कि इससे समाज में जल बचाने की जागरूकता आएगी। इस अवसर पर सोशल आउटरीच टीम से पवन सिंह और विद्यालय परिवार से किरण कुमारी, शक्ति कुमार, रमेश कुमार, मुस्कान चौधरी, साजिद खां, सोनू सोनी आदि उपस्थित रहे।

नगरपरिषद क्षेत्र में विकास कार्यों के लिए मांगा बजट

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। नगरपरिषद की सभापति निलोफर गौरी ने प्रदेश के यूडीएच मंत्री झाबरसिंह खर्रा को ज्ञापन सौंपकर नगरपरिषद क्षेत्र में विभिन्न विकास कार्यों के लिए बजट आवंटित करवाने की मांग की है। ज्ञापन में बताया गया है कि नगरपरिषद क्षेत्र में मुख्य रूप से गेनाणी व अन्य गेनाणियों की बजट के अभाव में सफाई नहीं हो पा रही है। इसी प्रकार मुख्यमंत्री बजट घोषणा के तहत वाटर बोडीज के निर्माण, जीर्णोद्धार के लिए 15 करोड़ की डीपीआर सरकार को भिजवाई गई थी, जिसमें से गत वर्ष 6.33 करोड़ की राशि स्वीकृत हुई है। अतः बाकी राशि को भी स्वीकृत करवाया जाए, ताकि वाटर बोडीज के शेष कार्य को पूर्ण करवाया जा सके। इसी प्रकार ठरडा में बनने वाले हॉस्पीटल को मुख्य हाईवे से जोड़ने के लिए हाईवे से ग्रीन स्पेस पार्क तक सड़क को चौड़ा करने, डिवाईडर और लाईट्स लगवाने, मार्ग निर्माण की स्वीकृति और इसके लिए बजट दिलवाने की मांग भी सभापति की ओर से की गई है। राजकीय खेल मैदान हेतु बजट आवंटित करवाने, पेराफेरी क्षेत्र में सड़कें, नाले व अन्य सुविधाएं विकसित करने के लिए 25 करोड़ का बजट दिलवाने, एनके लोहिया स्टेडियम के सौंदर्यीकरण के लिए ढ़ाई करोड़ का बजट दिलवाये जाने की मांग, सुजानगढ़ शहर के मुख्य मार्गों पर अंडरग्राउण्ड विद्युतीकरण करवाने के लिए बजट दिलवाने की मांगे भी सभापति की ओर से की गई है।

श्रद्धालुओ को पिलाया नींबू पानी

जयपुर टाइम्स

सालासर(निस)। सिद्धपीठ सालासर धाम में हनुमान जयंती पर व मंगलवार को श्री दुर्गा मार्बल पंचकुला के डायरेक्टर मुकेश सिंघला की ओर से मेले में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए चिलचिलाती गर्मी में नींबू पानी रसना व फल वितरित किए गए। इस दौरान अभिषेक शर्मा एवम श्री दुर्गा मार्बल का समस्त परिवार उपस्थित रहा। मुकेश सिंगला ने बताया कि वो लगातार पांच साल से बालाजी के आने वाले श्रद्धालुओं के लिए नींबू पानी फल व बिस्किट वितरित करते हैं। इस दौरान हजारों श्रद्धालुओं ने ठंडे नींबू पानी पी कर आभार जताया।

कलेक्टर के आदेशों की उड़ रही धज्जियां

बाल वाहिनियों में बच्चे नहीं, दिख रहे बाराती

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। क्षेत्र में राज्य सरकार की मंशा व जिला कलेक्टर अभिषेक सुराणा के बाल वाहिनियों पर नियमों की पालना करवाने के सख्त आदेश के बाद भी शिक्षा विभाग व परिवहन विभाग ने आंखें नही खोली। मात्र कागजों से आदेश सिमट कर रह जाते है। निजी शिक्षण संस्थान मालिक जिला कलेक्टर के आदेशों को खुल्ले आम धज्जियां उडाते हुए क्षमता से अधिक विद्यार्थियों को वाहनों में लादकर लाया जाया जा रहा है। अभी चल रहे शादियो की सीजन में बाल वाहिनियों को बारातो में भेजकर अच्छी कमाई कर परमिट का उल्लंघन किया जाता है। लेकिन प्रशासन भी इनके प्रती कोई कठोर कदम न उठाकर कर न जाने कौन-सा प्यार का रिश्ता निभा रहा है। जिसका ताजा उदाहरण रात्री में कस्बे में देखा गया जिसमें बाल वाहिनी से बीनादेसर से सीमसिया बिदावतान बारात लेकर पहुंची।

ढाणी तेतरवाल को देवासर से जोड़ने का विरोध, ग्रामीणों ने सौपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। उपखंड क्षेत्र के गांव ढाणी तेतरवाल के ग्रामीणों ने एसडीएम कार्यालय में विरोध प्रदर्शन करते हुए हाल में ढाणी तेतरवाल को देवासर ग्राम पंचायत में जोड़ने पर विरोध प्रदर्शन करते हुए वापस बोघेरा ग्राम पंचायत में जोड़वाने की मांग को लेकर एसडीएम डॉ द्विव्या चौधरी को जिला कलेक्टर के नाम ज्ञापन सौपा। ग्रामीणों ने ज्ञापन में उल्लेख किया कि हाल में बोघेरा ग्राम पंचायत से हटाकर ढाणी तेतरवाल को 23 किलोमीटर दूरी पर स्थित देवासर ग्राम पंचायत में जोड़ा गया है जो गलत है। गांव के चुन्नीलाल तेतरवाल और भागीरथ नाई ने बताया कि ढाणी तेतरवाल से देवासर जाने के लिए दो ग्राम पंचायत बोघेरा, बिल्यूबास रामपुरा को पार करना होगा तब देवासर आता है। ग्रामीणों ने कहा कि इस मामले में जिला कलेक्टर को भी अवगत करवाया है। इस मौके पर चुन्नीलाल तेतरवाल, भागीरथ नाई, महावीर तेतरवाल, पतराम मेघवाल, चलूराम तेतरवाल, जगदीश प्रसाद, किशनलाल, संदीप कड़वासरा, विघाधर, मांगीलाल, जोतराम, धीरसिंह, अशोक मेघवाल, हंसराज, पालाराम आदि उपस्थित रहे।

अवैध वेल्डिंग मशीन का विरोध, एसडीएम व बीडीओ को सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील के निकटवर्ती गांव बरड़ासर में भैरूराम मेघवाल की ओर से सार्वजनिक रास्ते पर लगाई गई अवैध वेल्डिंग मशीन को लेकर ग्रामीणों ने विरोध जताया है। ग्रामीणों ने एसडीएम और बीडीओ को ज्ञापन सौंपकर मशीन हटाने की मांग की है। ग्रामीणों का आरोप है कि भैरूराम मेघवाल बिजली विभाग के अधिकारियों से मिलीभगत कर अवैध तरीके से वेल्डिंग मशीन चला रहे हैं। इस मशीन से आम रास्ते पर लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि वेल्डिंग मशीन को नहीं हटाया गया तो बड़े स्तर पर विरोध प्रदर्शन करेंगे। ज्ञापन देने वालों में बीरूराम, रामदेव, भंवरलाल और रामकुमार सहित कई ग्रामीण शामिल रहें।

तीन दिवसीय निःशुल्क लैंस प्रत्यारोपण शिविर का शुभारम्भ

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। श्री गौरी शंकर व निर्मला अग्रवाल फाउंडेशन चूरू के आर्थिक सौजन्य से राजस्थान मेडिकल रिलीफ सोसायटी चूरू व जिला अंधता निवारण समिति चूरू के संयुक्त तत्वावधान में लायंस क्लब चूरू की ओर से तीन दिवसीय निःशुल्क लैंस प्रत्यारोपण शिविर का शुभारंभ मंगलवार को बच्छावत नेत्र अस्पताल में हुआ। क्लब अध्यक्ष आर्किटेक्ट अनुराग शर्मा ने बताया कि इस तीन दिवसीय निःशुल्क लैंस प्रत्यारोपण शिविर के पहले दिन लगभग 170 रोगियों की नेत्र जांच कर 75 लोगों का लैंस प्रत्यारोपण के लिए चयन किया गया। क्लब एडमिनिस्ट्रेटर डॉ. कमल वशिष्ठ ने बताया कि तीन दिन तक चलने वाले इस शिविर में डॉ. शशिधर शर्मा, डॉ. सुनील झाझड़िया व उनकी टीम रोगियों की नेत्र जांच कर उनका ऑपरेशन करेगी। गौरी शंकर-निर्मला अग्रवाल फाउंडेशन के ट्रस्टी गौरीशंकर अग्रवाल ने बताया कि लायंस क्लब के आग्रह पर नर सेवा नारायण सेवा को मानते हुए इस पुनीत कार्य को करने का निर्णय लिया, शिविर में ऑपरेशन करवाने वाले सभी मरीजों को रहने, खाने-पीने व दवाइयों की व्यवस्थाएं निःशुल्क रहेगी। अग्रवाल ने कहा कि समय-समय पर फाउंडेशन लायंस क्लब चूरू के सहयोग से इस प्रकार के शिविर लगाते रहेंगे। इस अवसर पर शिविर प्रभारी लायन दीनदयाल सैनी, मनोज जांगिड़, मंगतु राम सैनी, पुनित क्याल, सुनील टकणेत, चंद्र प्रकाश खत्री, ताराचंद प्रजापत, विनोद शर्मा, चंद्रशेखर अग्रवाल, स्नेहलता अग्रवाल, संजीव वर्मा व राजीव शर्मा ने सहयोगी भूमिका निभाई। शिविर में फाउंडेशन के ट्रस्टी गौरीशंकर व निर्मला अग्रवाल ने शिविर का अवलोकन किया। क्लब अध्यक्ष अनुराग शर्मा ने बताया कि भर्ती रोगियों के ऑपरेशन बुधवार को किये जाएंगे और गुरुवार को शिविर का समापन होगा।

परिंडा लगाओ, पक्षी बचाओ अभियान का समापन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। इंसानियत एकता सेवा समिति की ओर से चल रहे परिंडा लगाओ, पक्षी बचाओ अभियान का समापन मंगलवार को शहर के विभिन्न स्थानों पर परिंडे लगाकर किया गया। समिति संस्थापक व अभियान संयोजक करामत खान ने बताया कि अभियान के तहत सप्ताहभर में चूरू शहर व आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों सहित रतनगढ़, सरदारशहर, तारानगर, राजगढ़, फतेहपुर, सीकर व झुंझुनूं में 341 परिंडे लगाए गए। जिन स्थानों पर परिंडे लगाए गए वहां समिति से जुड़े कार्यकर्ताओं की ओर बढ़ परिंडों की सार-संभाल की जाएगी। इस अवसर पर समिति व्यवस्थापक इंजी. जाफर खान, अरशद खान, सुलेमान मनिहार, शाहरुख मनिहार, मोहम्मद सादिक, असलम खान, शाहबाज खान, महबूब खान, फरियाद खान, अनीश खान, जाकिर खान, रेहान खान आदि ने सहयोगी भूमिका निभाई। मीडिया प्रभारी मोहम्मद अली पठान ने सभी का आभार व्यक्त किया।

सिलेंडर से गैस लीक होने के बाद लगी भीषण आग

जयपुर टाइम्स

करौली(निस) करौली में चाय बनाते समय एक घर में सिलेंडर से गैस लीक होने के बाद भीषण आग लग गई। आग की लपटों को काबू करने की कोशिश में दो चचेरे भाई-बहन ने अपनी जान गंवा दी। हादसे में 6 अन्य लोग भी आग की चपेट में आ गए, जिन्हें तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया। चटीकना मोहल्ले के बागोर वाली मस्जिद के पास मंगलवार दोपहर साढ़े 3 बजे हुए इस हादसे ने पूरे इलाके में दहशत फैला दी। करौली थानाधिकारी अध्यात्म गौतम ने बताया- एक घर में गैस लीक से आग लगने की सूचना मिली थी। सूचना पर पुलिस, डीएसबी शाखा टीम और सिविल डिफेंस की टीम मौके पर पहुंची। आग से झुलसे लोगों को कड़ी मशक्कत के बाद बाहर निकाला। थानाधिकारी ने बताया कि आग से झुलसने से मोसरिन (17) पुत्री अशफाक और नाजिम (19) पुत्र इस्लामुद्दीन की मौके पर मौत हो गई। आग लगने से मुमताज पुत्री सुबराती, समीर पुत्र सुबराती, माफिया पत्नी सुबराती, नगीना पत्नी अशफाक, मनत्सा और उजमा झुलस गए। थानाधिकारी ने बताया- आग लगने से पट्टियां चटककर गिर गई।

राजस्थान जयपुर टाइम्स

जयपुर, बुधवार
16 अप्रेल, 2025

नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा, पूर्व मंत्री राजेंद्र राठौड़ रहे मौजूद

श्रेष्ठ सेवाएं बनाएंगी स्वस्थ नागरिक तो विकसित बनेगा क्षेत्र: मेघवाल

ठरड़ा में किया सुक्षेम आरोग्य विहार का शिलान्यास

जयपुर टाइम्स

चूरू/सुजानगढ़(निस)। केन्द्रीय कानून व न्याय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और संसदीय कार्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने मंगलवार को जिले के सुजानगढ़ के ठरड़ा में सुक्षेम फाउंडेशन की ओर से सुक्षेम आरोग्य विहार का शिलान्यास किया। इस दौरान नगरीय विकास व स्वायत्त शासन विभाग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) झाबर सिंह खर्रा, पूर्व मंत्री राजेंद्र राठौड़, राजस्थान राज्य अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास आयोग अध्यक्ष राजेंद्र कुमार नायक, जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा, सांगलिया धूणी के पीठाधीश श्री श्री 108 ओमदास महाराज, केसी मालू, हीरालाल मालू, शायर हीरालाल मालू, पूर्व मंत्री खेमाराम मेघवाल, सुजानगढ़ प्रधान मनभरी देवी, बीदासर प्रधान संतोष मेघवाल, सभापति नीलोफर गौरी, सुरज्ञान कंवर, निर्मल सेठिया, अनिल जैन, नरपत सिंह चौरड़िया, विजयसिंह डोसी, बजरंग बाहेती, राजेन्द्र दाधीच, बसंत शर्मा, हेमंत मालू, जेसी शर्मा, यशवंत बाफना, प्रदीप टाक, एमआर चौधरी सहित ट्रस्टी, जनप्रतिनिधि, अधिकारी मंचस्थ रहे। उपस्थित सभी ट्रस्टी ने अतिथियों का स्वागत व अभिनंदन किया। अतिथियों ने सुक्षेम आरोग्य विहार के मॉडल का अवलोकन किया।

सुक्षेम फाउंडेशन बनवायेगा अस्पताल भवन, राज्य सरकार करेगी संचालन

ट्रस्टी के सी मालू ने बताया कि सुजानगढ़ कस्बे में 250 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाले तीन सौ बेड क्षमता वाला सुक्षेम आरोग्य विहार मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल बनाया जाएगा। इस अस्पताल के लिए गत वर्ष जयपुर में आयोजित राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट-2024 में सुक्षेम फाउंडेशन और राजस्थान सरकार के बीच एक समझौता ज्ञापन पत्र (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए थे। सुक्षेम फाउंडेशन जन सहयोग से इस अस्पताल भवन का निर्माण कराएगा और इसका संचालन राज्य सरकार की ओर से किया जाएगा। सुक्षेम फाउंडेशन लीनन बदलने और साफ-सफाई आदि जिम्मेदारी का निर्वहन भी करे।

श्रेष्ठ सेवाएं बनाएंगी स्वस्थ नागरिक तो विकसित बनेगा क्षेत्रः मेघवाल

इस अवसर पर संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि सुक्षेम आरोग्य विहार में अंचल के लोगों को बेहतरीन सेवाएं मिलेंगी। अपनी पुण्य की कमाई मातृभूमि की सेवा में लगाना बहुत ही सराहनीय व अनुकरणीय कार्य है। सुक्षेम आरोग्य विहार की श्रेष्ठ सेवाएं स्वस्थ नागरिक बनाएंगी तो क्षेत्र विकसित बनेगा। उन्होंने कहा कि बेहतरीन सेवाएं मिलेंगी तो अंचल की समृद्धि बढ़ेगी। ट्रस्टी अपने मातृभूमि की सेवा के लिए अपने मेहनत की कमाई लगा रहे हैं। 'जन सेवा व मातृभूमि के प्रति प्रेम' से ही इंसान की स्तुति होती है। हम भौतिकवाद से परे होकर मानवता की सेवा के लिए संकल्पित रहें। उन्होंने कथा व भजन के माध्यम से सेवा भावना का संदेश दिया। इस दौरान नगरीय विकास व स्वायत्त शासन विभाग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) झाबर सिंह खर्रा ने कहा कि चूरू की धरती शक्ति, भक्ति, त्याग और तपस्या की धरती है। यहां के सपूतों ने अपनी वीरता, बुद्धिमता व मेहनत से सम्पूर्ण विश्व में अपना लोहा मनवाया है। प्रवासियों द्वारा यहां के लोगों की समस्याओं को समझकर निराकरण का यह प्रयास सराहनीय है। अपनी मातृभूमि की सेवा का ऐसा कार्य युगों तक याद रखा जाता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राइजिंग राजस्थान अंतर्गत किए गए एमओयू से प्रदेश की आर्थिक विकास को गति मिलेगी और राजस्थान विकसित प्रदेश बनेगा। पूर्व मंत्री राजेन्द्र राठौड़ ने कहा कि अपनी पुरूषार्थ की कमाई मातृभूमि के लिए लगाने वालों को दुनिया सदैव याद रखती है। जनसेवा से हमेशा वैभव बढ़ता है। सुक्षेम आरोग्य विहार बनने से अंचल के लोगों को विश्व स्तरीय सेवाएं स्थानीय स्तर पर ही मिल सकेंगी। क्षेत्र के इतिहास में यह नया अध्याय जुड़ेगा। अस्पताल में प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेदिक चिकित्सा, यूनानी, मेडिटेशन आदि का भी शामिल होना नागरिकों के उत्तम स्वास्थय के लिए बेहतरीन प्रयास है। ऐसी सेवाओं से जब अस्पताल की सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ व्यक्ति बड़ी सहुलियत महसूस करेगा, तो वहीं स्वस्थ होकर अपने घर जाएगा तो मन से दुआएं देगा। उन्होंने कहा कि जनोपयोगी कार्यों में हम सभी अपनी सक्रिय भागीदारी निभाएं। इस दौरान सांगलिया धाम के प्रमुख पीठाधीश्वर श्री श्री 108 ओमदास महाराज ने कहा कि स्वास्थ्य और शिक्षा सेवा में लगाया गया धन सदैव याद रखा जाता है। सुक्षेम आरोग्य विहार का निर्माण मातृभूमि की सेवा की दिशा में बहुत बड़ा प्रयास है। यह विश्व के श्रेष्ठ अस्पतालों में शामिल होगा। उन्होंने सुक्षेम आरोग्य विहार की नींव के लिए पूजा -अर्चना करवाई। इस दौरान सुक्षेम फाउंडेशन के अध्यक्ष केसी मालू ने अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रोजक्ट की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 100 वर्षों की प्लानिंग के साथ सुक्षेम आरोग्य विहार का निर्माण किया जाएगा। हमारा संकल्प है कि सुजानगढ़ को सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा सेवाएं मिलें। इससे चिकित्सा सुविधाओं के लिए अंचल के लोगों का पलायन रूकेगा और उन्हें उत्तम स्वास्थ्य यहीं मिल पाएगा। उन्होंने बताया कि सरकार के सहयोग से अस्पताल पीपीपी मोड पर संचालित किया जाएगा। इसमें एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, प्राकृतिक, यूनानी चिकित्सा, योग, खेल, आवासीय कॉम्पलैक्स, धर्मशाला आदि सभी सुविधाएं विकसित की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रवासी नागरिक मातृभमि की सेवा के लिए तत्पर रहते हैं। जिला प्रशासन से भी समय- समय पर बेहतरीन सहयोग मिला, जिससे यह संभव हो पाया। उन्होंने सुजानगढ़ में अच्छे विद्यालय व राजस्थानी भाषा भवन के प्रस्ताव की बात रखी। सुक्षेम फाउंडेशन के संरक्षक हीरालाल मालू ने बताया कि हमारा प्रयास है कि हम हमारी मातृभूमि के लिए विशेष प्रयास करें। माटी से लगाव रखते हुए अपनों की सेवा का भाव लेकर सभी प्रवासी यहां से जुड़ना चाहते है। उन्होंने आश्वस्त किया कि सबसे अच्छी सुविधाएं अंचल के लोगों को मिलेंगी।

बावळती को अनुदान दिलवाने के लिए केंद्रीय मंत्री को ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। चन्द्र फिल्म्स प्रोडक्शन के बैनर तले बनी राजस्थानी फिल्म बावळती को अनुदान दिलवाने के लिए आज सुजानगढ़ में केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल को ज्ञापन सौंपा गया है। फिल्म के निर्माता निर्देशक ने बताया कि केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड से यू प्रमाण पत्र प्राप्त फिल्म बावळती को कांग्रेस सरकार ने वर्ष 2022 में अनुदान राशि से वंचित कर दिया था। फिल्म निर्माता राजेन्द्र सिंह शेखावत ने लिखा है कि पीएम नरेंद्र मोदी की भावनाओं के अनुसार बनी राजस्थानी फिल्म बावळती को शीघ्र ही अनुदान राशि जारी करवाएं। केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने बावळती जैसी राजस्थानी उपन्यास पर बनी फिल्म को अनुदान नहीं मिलने पर आश्चर्य व्यक्त किया। इस मौके पर अशोक गहलोत सरकार में अनुदान कमेटी के सदस्य रहे के सी मालू भी मौजूद रहे।

बढ़ती गर्मी को लेकर चिकित्सा विभाग अलर्टः सीएमएचओ ने अस्पतालों में किया निरीक्षण, हीटवेव को लेकर दिशा-निर्देश

जयपुर टाइम्स

नागौर (**निस**)जिले में बढ़ती गर्मी से आमजन परेशान है। बढ़ती गर्मी के साथ लू व तापघात के मरीज भी अस्पतालों में पहुंचने लगे हैं। बढ़ती गर्मी में मरीजों की संभावना को देखते हुए चिकित्सा विभाग के मुख्य चिकित्सा व स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जुगल किशोर सैनी ने मंगलवार सुबह जिले के सरकारी अस्पतालों का औचक निरीक्षण किया। मुख्य चिकित्सा व स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जुगल किशोर सैनी ने सरकारी अस्पतालों का औचक निरीक्षण करते हुए वहां मौजूद व्यवस्थाओं व सुविधाओं का जायजा लिया। मुख्य चिकित्सा व स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सैनी ने राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बासनी, राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कुम्हारी, राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भाकरोद व खरनाल अस्पताल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने सभी प्रभारी चिकित्सा अधिकारी व मेडिकल स्टाफ को हीटवेव के लिए प्रबंधन करने तथा मलेरिया क्रेश कार्यक्रम को लेकर आमजन में जागरूकता लाते हुए इसे सफल बनाने के निर्देश दिए। मुख्य चिकित्सा व स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सैनी ने निरीक्षण के दौरान नियुक्त अस्पताल स्टाफ की बैठक लेते हुए मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना, मां बाउचर योजना, जननी सुरक्षा योजना, नियमित टीकाकरण, लाडो प्रोत्साहन योजना, क्षय उन्मूलन कार्यक्रम, निशुल्क जांच व निशुल्क दवा योजना की प्रोग्रेस रिपोर्ट की समीक्षा की और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। प्रसूति कक्ष, लेबर रूम, आईपीडी वार्ड, जांच प्रयोगशाला का अवलोकन करते हुए सीएमएचओ डॉ. सैनी ने सभी प्रोटोकॉल का पालन करने के निर्देश दिए।

8 गांवों की बिजली सप्लाई 24 घंटे से बंद, एक्सईएन कार्यालय में विरोध प्रदर्शन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। उपखंड क्षेत्र के बुकनसर छोटा बिजली जीएसएस पर कर्मचारी नहीं होने पर 24 घंटे से 8 गांवों के एक हजार के करीब बिजली कनेक्शन बंद पड़े हुए है। मंगलवार को उड़सर ग्राम पंचायत के सरपंच भागीरथ सारण और गाजूसर गांव के रूपचंद गोदारा के नैतृत्व में किसानों ने सरदारशहर एक्सईएन कार्यालय में विरोध प्रदर्शन करते हुए बुकनसर जीएसएस पर 24 घंटे सरकारी कर्मचारी की ड्यूटी लगाने की मांग की है। सरपंच भागीरथ सारण ने बताया कि पिछले 6 महिनों से प्राईवेट ठेकेदार की ओर से एक प्राईवेट कर्मचारी रखा जाता है। उनको समय पर सैलरी नहीं मिलने के कारण वह समय पर ड्यूटी नहीं करता है। इस जीएसएस के अंतर्गत बिजली के पोल और तार बहुत ही जर्जर स्थिति में है। जिसके कारण हर दिन हादसे होते रहते है। जीएसएस पर कर्मचारी नहीं होने के कारण समय पर बिजली सप्लाई बंद नहीं होने से हादसा होने का खतरा बना रहता हैं। इस मामले में एईएन राजेश मीणा ने बताया कि जीएसएस पर कर्मचारी रखने की मांग को लेकर ज्ञापन सौपा है। ग्रामीणों की समस्या का जल्द समाधान करवाया जाएगा। मौके पर उपस्थित लोगों ने कहा कि अगर स्थाई समाधान नहीं किया गया तो बिजली एक्सईएन और एईएन कार्यालय का घेराव किया जाएगा। इस मौके पर हरलाल, फुसाराम, गोपीराम, रमेशकुमार, राजेश मीणा, नरेंद्रसिंह, राजकुमार, हरिराम रणवा, भादरराम, भागीरथ राम, गोपालचंद, किशनलाल, रामेश्वरलाल सहित अनेक ग्रामीण उपस्थित रहे।

जल भराव से बचने के लिए करें बेहतरीन प्रबंधनः सुराणा

जिला कलक्टर ने रतनगढ़ में किया आरयूआईडीपी प्रोजेक्ट कार्य का निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

चूरू/रतनगढ(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने मंगलवार को जिले के रतनगढ़ मुख्यालय पर चूरू फाटक के पास आरयूआईडीपी प्रोजेक्ट कार्यों के वर्क साइट व पंप हाउस का निरीक्षण कर अधिकारियों को निर्देश दिए। जिला कलक्टर सुराणा ने कहा कि बरसात के मौसम के दौरान जल भराव से बचने के लिए बेहतरीन प्रबंधन करें और आरयूआईडीपी प्रोजेक्ट के कार्य यथाशीघ्र पूरे करें। पानी भराव की समस्या को देखते हुए अभी से ही सभी तैयारियां सुनिश्चित करें। सुनिश्चित करें कि रतनगढ़ कस्बे में ड्रेनेज सिस्टम सुचारू रूप से काम कर रहा है। उन्होंने प्रोजेक्ट कार्य की प्रगति पर असंतुष्टि जताते हुए कहा कि आरयूआईडीपी के प्रोजेक्ट कार्य 15 से 30 मई तक पूरे करें। उन्होंने एसडीएम व अधिशाषी अधिकारी को निर्देश किए कि नियमित रूप से प्रोजेक्ट कार्य की प्रगति की मॉनीटरिंग करें। पूरे प्रोजेक्ट की सूक्ष्मता से निगरानी रखें और कार्यों में गति लाएं। उन्होंने साइट का अवलोकन कर प्रगति की जानकारी ली। इस दौरान एसडीएम रामकुमार वर्मा, अधिशाषी अधिकारी सहदेवदान चारण, आरयूआईडीपी एक्सईएन आरडी गर्ग सहित अधिकारी मौजूद रहे।

अब रेल यात्रियों को भी मिलेगा पुस्तकालय का लाभ- सिंघानिया

रेलवे परिसर में गीता क्लासेज ने पक्षियों के लिए लगाए परिंडे

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। रेलवे स्टेशन परिसर में प्लेटफार्म नंबर तीन के पास स्थित जयदयाल गोयनका पुस्तकालय गीता क्लासेज के प्रयास से अब शाम पांच से सात बजे तक पाठकों के लिए नियमित रूप से खुलेगा। गीता क्लासेज के संयोजक संजय सिंघानिया व पत्रकार गुरुदास भारती के अथक प्रयासों से व रेलवे के वरिष्ठ लिपिक रणजीत सिंह व आर.पी.एफ. के नंदकिशोर के सहयोग से पुस्तकालय को सुचारू रूप से चलाने का निर्णय लिया गया। संजय सिंघानिया ने बताया कि अब रेल यात्रियों को पुस्तकालय का लाभ मिलेगा। गौरतलब है कि सेठ जयदयाल गोयनका की पुण्यतिथि पर मंगलवार को पुस्तकालय परिसर में पक्षियों के लिए परिंडे लगाए गए। इस दौरान कैरेज टेक्नीशियन अमर सिंह राजपूत, वरिष्ठ टेक्नीशियन ओम प्रकाश, स्टोर कीपर इकबाल, गीता क्लासेज की माधुरी शर्मा, अनीता सिंघानिया, प्रमोद गौड़, हर्षित सोनी, संतोष देवी, मोहित सिंघानिया, गोमती व पूनम ने परिडों की देख-भाल करने का संकल्प लिया।

काजड़ा को पिलानी पंचायत समिति में जोड़ने का विरोध, प्रदर्शन कर कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(**निस**) जिले की ग्राम पंचायत काजड़ा को पंचायत समिति सूरजगढ़ से हटाकर पिलानी में जोड़ने के प्रस्ताव के खिलाफ ग्रामीणों का गुस्सा फूट पड़ा। मंगलवार को बड़ी संख्या में काजड़ा के लोगों ने जिला कलेक्ट्रेट के बाहर विरोध प्रदर्शन किया। चेतावनी दी कि निर्णय वापस नहीं लिया तो बड़ा आंदोलन करने के लिए मजबूर होंगे। प्रदर्शनकारियों ने जिला कलेक्टर को एक ज्ञापन भी सौंपा, जिसमें ग्राम पंचायत काजड़ा को पहले की तरह पंचायत समिति सूरजगढ़ में ही रखने की पुरजोर मांग की गई। वर्तमान सरपंच मंजू तंवर ने इस विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया। उन्होंने प्रशासन के इस फैसले को ग्रामीणों के हितों के खिलाफ बताते हुए इसे दुर्भाग्यपूर्ण और अव्यावहारिक करार दिया। सरपंच तंवर ने कहा-ग्राम पंचायत काजड़ा पंचायत समिति सूरजगढ़ से महज 4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जबकि पिलानी पंचायत समिति यहां से लगभग 12 किलोमीटर दूर है। इस दूरी के कारण ग्रामीणों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ेगा। पूर्व सरपंच सरोज देवी ने कहा- सूरजगढ़ के लिए हर समय परिवहन के साधन आसानी से उपलब्ध रहते हैं, जबकि पिलानी के लिए कोई नियमित और सीधी सुविधा नहीं है। इससे काजड़ा के आम नागरिकों को दैनिक कार्यों और सरकारी कामकाज के लिए आने-जाने में काफी परेशानी होगी। उन्होंने यह भी बताया- काजड़ा ग्राम पंचायत की तहसील, उपखंड कार्यालय और रेलवे स्टेशन जैसे महत्वपूर्ण कार्यालय भी सूरजगढ़ में ही स्थित हैं, जिससे स्वाभाविक रूप से इस पंचायत का जुड़ाव सूरजगढ़ पंचायत समिति के साथ ही है। पूर्व सरपंच राजेंद्र प्रसाद ने कहा- झुंझुनूं जिले की सबसे बड़ी और प्रसिद्ध अनाज मंडी सूरजगढ़ में ही है, जहां काजड़ा के किसान अपनी फसलें बेचने आते हैं। ऐसे में ग्राम पंचायत को पिलानी पंचायत समिति में जोड़ना न केवल अव्यावहारिक है, बल्कि क्षेत्र के किसानों के साथ भी अन्याय होगा। मंजीत तंवर ने प्रशासन और राजस्थान सरकार से इस निर्णय का औचित्य स्पष्ट करने की मांग की। उन्होंने कहा- सरकार को यह बताना चाहिए कि ग्राम काजड़ा को पंचायत समिति पिलानी में शामिल करने की आवश्यकता क्यों पड़ी। उन्होंने सरकार से आग्रह किया कि व्यावहारिकता और जनहित को ध्यान में रखते हुए इस प्रस्ताव को तुरंत रद्द किया जाए और ग्राम पंचायत काजड़ा को पूर्ववत पंचायत समिति सूरजगढ़ में ही बनाए रखा जाए।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।